

प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर की चंगाई की शक्ति को किस तरह मुक्त करें
(How To Release God's Healing Power Through Prayer)

*if you begin to pray for the sick as outlined below, you will begin to see jesus
heal the sick through your prayers*

August 2003
Dr. Gary S. Greig
Kingdom Training Network and The University Prayer Network

Dr. Mark Virkler
Christian Leadership University

Rev. Frank Gaydos
John G. Lake Ministries, Pennsylvania Healing Rooms Ministry Director

प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर की चंगाई की शक्ति को किस तरह मुक्त करें (How To Release God's Healing Power Through Prayer)

यदी आप निम्न बताए गये अनुसार प्रार्थना करना प्रारंभ करें, तो आप देखेंगे की, आप की प्रार्थना के द्वारा, यीशु स्वयं बिमारों को चंगा करते हैं।

अगस्त २००३

डॉ गैरी एस. ग्रेग

राज्य प्रशिक्षण जाल एवं विश्वविद्यालय प्रार्थना जाल

डॉ. मार्क विर्कलर

मसीही नेतृत्व विश्व विद्यालय

रेव. फ्रेंक गेडॉस

जॉन जी लेक संस्था, पैसीलनेनिया हीलिंग चंगाई देनेवाली संस्था के निर्देशक

विषयसूची

(Contents)

१. चंगाई की प्रार्थना का संक्षिप्त वर्णन.....	४
२. बाईबल से संबंधित चंगाई की बुनियाद.....	११
३. केवल "एक स्वाभाविक गुण" नहीं.....	११
४. II चंगाई संबंध में परमेश्वर की इच्छा को अपनाना....	१२
५. III विश्वास-चित्रांकित-आत्मिक क्षेत्र में देखना....	१८
६. IV विश्वास-यीशु को चित्रांकित करना.....	२१
७. V विश्वास-चंगाई पा चुके व्यक्ति का चित्रांकण करना.....	२२
८. VI परमेश्वर की ताकत और बल से चंगाई मिलती है.....	२३
९. VII+VIII परमेश्वर की चंगाई की ताकत-पवित्र आत्मा और परमेश्वर की रौशनी.....	२८
१०. IX+X मसीही और आत्मा के संघर्ष की भेधता.....	२९
११. XI बाईबल की दृष्टि में शैतान	३२
१२. परमेश्वर की चंगाई की शक्ति को मुक्त करने के लिए प्रायोगिक कदम और नियम I.....	३४
१३. प्रयोग के अभ्यास.....	३८
१४. दैवी चंगाई का साधन संदूक(याकूब ५:१४-१८)	५५
१५. चंगाई के उदाहरण व साक्षीयाँ.....	५६
१६. टिप्पणियों की ग्रंथ सूची, उपदेशों की ताकत, चंगाई वगैरह.....	८५

परमेश्वर की चंगाई के अभीषेक को मुक्त करने के पाँच तरीके मूल कथन

- १) यीशु पर केंद्रित हों, बाकी सब भूल जाईए, उस की आराधना करीए।
- २) पवित्र आत्मा की ताकत को मुक्त होने के लिए कहीए, उसे देखीए, और उस के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करीए।
- ३) उस तरह की प्रार्थना करीये जो आप की आत्मा करने को कहती है।
- ४) नाप की डंडी (अपनी आत्मा के तेल को नापीए) और रूकावटों को निकालीए।
- ५) अपने मस्तिष्क में, उस व्यक्ति को जो चंगाई पा चुका है, उसको चित्रांकित करीए, और परमेश्वर को उस के लिए धन्यवाद करीए।

विस्त्रित कथन

- १) यीशु को परमेश्वर की रौशनी में रूपान्तरित होते देखिए(मत्ती १७:१-८) स्वयं को भूल जाईए, और अपनी आत्मा में उसकी आराधना कीजिए (बाई बुनियाद खण्ड III-IV)
- २) मांगीये और देखीए, उस व्यक्ति पर और उस के अंदर, यीशु की चंगाई की रौशनी और ताकत किस तरह विस्तीर्ण होती है । उसे दुर्बलता पर केंद्रित होते देखीए, और परमेश्वर को धन्यवाद दीजिए की चंगाई का राजतिलक मुक्त हो रहा है और चंगाई मिल रही है। (बाई बुनियाद खण्ड III,VI-VII)
- ३) उस तरह की प्रार्थना करीये, जो आत्मा आप का नेतृत्व करती कि आप अनुरोध करें, आज्ञा या आधीकारिक घोषणा। यदि आत्मा द्वारा, आज्ञा की प्रार्थना दर्शित हो, तो पहले आज्ञा दीजिए दर्द को की वह यीशु के नाम में दूर हो, फिर अंदरूनी बीमारी को आज्ञा दीजिए की वह दूर हो(देखिये चंगाई की प्रार्थना का संक्षिप्त वर्णन)

- ४) उस व्यक्ति से पूछीए की उसे कैसा लग रहा है(पहले से अच्छा, उसी तरह या और खराब) और जैसे जैसे आप का नेतृत्व परमेश्वर करते हैं आप अंदर की रुकावटों को और शैतानी प्रभावों को निकालीये।(देखिए चंगाई की प्रार्थना का संक्षिप्त वर्णन और बाई बुनियाद खण्ड IX-XI).
- ५). अपने मस्तीशक में उस व्यक्ती की जो चंगाई पा चुका है, एक विस्तारपूर्वक विश्वास का चित्र बनाईए और कहीए, "धन्यवाद है, परमेश्वर, की वही तरीके से यह होएंगा, क्योंकि आपकी ताकत इस व्यक्ति को चंगा कर रही है।"(बाई बुनि.III,V)

Chapter 1

प्रार्थना में परमेश्वर की चंगाई के राजतिलक को मुक्त करना।

रीति और विधियां चंगाई नहीं देती। यीशु देता है। पर यह कुछ मुख्य विषय है जो हमें यीशु के करीब लाते हैं और बतलाते हैं की वह प्रार्थना के माध्यम से हम से क्या करवाना चाहता है।

१. यीशु पर केंद्रित हों, बाकी सब भूल जाईए :

खामोश हो जाओ, अपने आप को शांत करो, और जिस व्यक्ति के लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं उसे भी खामोश होने को कहिए और शान्त होने को भी और यीशु पर ध्यान केंद्रित करीए, जो सर्वदा हमारे साथ है(मत्ती २८:२०)। उस व्यक्ति से कहिए की वह केवल प्राप्त करे, और संघर्ष न करे और खुद प्रार्थना न करें या आत्मिक भाषाओं में प्रार्थना न करें, जो पवित्र आत्मा को रोकता है, किसी व्यक्ति को चंगाई देने से(यशायाह ३०:१५) " लौट आने और शान्त रहने में तुम्हारा उद्धार है, शांत रहने में तुम्हारा उद्धार है, शान्त रहने और भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता। यीशु को उस अंधे व्यक्ति को उस के दोस्तों से दूर ले जाना पड़ा जब उन्होंने यीशु से विनती की कि वह उसे छुए," (मरकुस ८:२२) यह भावात्मक प्रबल भय से भरे हुए संघर्ष को व्यतीत करता है।

अपने मस्तिष्क की आँखों से (मन की आँखों से) देखिए यीशु को रूपांतर होते हुए, जैसे की मत्ती १७:१-८ में दिखाया गया है -यीशु के मुख और कपड़ों को देखीए, जो परमेश्वर की चमकती रौशनी के से है(इब्रा १:३), परमेश्वर की आत्मा के सुनहरे बादल से लिपटे हुए। यीशु की रौशनी को देखीए(उस के राजतिलक और शक्ति को) आप की ओर और आप के अंदर किरण फैलाती हुई। अपना ध्यान उस पर रखें (देने वाले की आराधना करें उस के उपहार की नहीं) और उस की तारीफ करें अपनी आत्मा में उस ने आप के पापों के लिए क्रूस पर दिया, उस के प्यार और शक्ति के लिए।

पूरी प्रार्थना होने तक अपने अंदर का ध्यान हमेशा यीशु पर रखें। कुछ खास अंतर्दृष्टि या मार्ग दर्शन जो याशु बता रहे हो, उस पर ध्यान दीजिए या प्रार्थना के समय आप के मस्तिष्क में या उस व्यक्ति पर, जब आप परमेश्वर की आवाज़ और दर्शन की ओर ध्यान लगाएं (यानी स्वैच्छिक विचार और स्वैच्छिक चित्र-यदि आप

को प्रार्थना में परमेश्वर की आवाज़ सुनने के लिए मदद चाहिए तो आप एच टी टी पी:/डबल्यू डबल्यू.डबल्यू. ईडबल्यूजीमिनिस्ट्रीज़ और / फ्री-क्रिस्टन - बुक्स - एण्ड - आर्टिकल्ज़.एच टी एम को खोलीए और "परमेश्वर की आवाज़ को सुनने के चार तरीके " पर जा कर खोलीए) परमेश्वर इस व्यक्ति के जीवन में क्या कर रहा है और आप की प्रार्थना के द्वारा वह क्या करना चाहता है?

यह मान लीजिए की परमेश्वर चंगाई देगा, जब तक वह आप से अन्य प्रकार से नहीं बताता("विश्वास की प्रार्थना के द्वारा कोगी बच जाएगा(यूनानी में फूट बतलाता है 'सोसी' जिस का अर्थ है "चंगा करेगा" यह नहीं की "चंगा कर सकता है" या " यदि परमेश्वर की इच्छा हुई तो..... चंगा कर सकता है)" याकूब ५:१५)।

अपनी आँखों को खुला रखीए, ताकी जब पवित्र आत्मा उस व्यक्ति पर अपने चिन्हों के द्वारा प्रकटीकरण कर रही हो तो आप उससे चूक न जाएं-कुछ प्रतीकात्मक चिन्ह: पलकों का फड़ फड़ाना, साँसों में बदलाव, हलकी कंप कंपी, चर्म पर प्रवाह, मुख पर उज्ज्वल चमक, प्रत्यक्ष शांति:

संभव उत्तर की परमेश्वर उपस्थित है और पवित्र आत्मा की शक्ति

१. काँपना या थराना(निर्ग १९:१६, भजन २:११; ९६:९; ११४:७; ११९:१२०; इति १६:३०; एज्रा ९:४; यशायाह ६६:५; यर्मयाह ५:२२; २३:९, दान१०:१०-११; मत्ती २८:४; प्रेरित ७:३२; इब्रा १२:२१)।
- २ गिर जाना—"आरम्भ करना" या आत्मा में "वध होना"(१ राजा ८:११, यहजेकेल १:२८, ३:२३, दान ८:१७-१८, १०:९, मत्ती २८:४, लूक ९:३२, यूह १८:६, प्रेरित ९:४(२६:१४), १कुरि १४:२५, प्रकाशित १:१७)
- ३ मस्तिष्क की नशे की स्थिती(प्रेरित २:४,१३,१५, ... ५:१८; १शमुएल १:१२-१७; १ शमुएल १९:२३)
- ४ हंसना, चिल्लाना या रोना(उत्त १७:१,३,१७; एज्रा ३:१३; नहेम्याह ८:९, १२:४३; भजन १२६: २; नीति १४:१३।

- ५ गर्मी, शक्ति को महसूस करना(मरकुस ५:३०, कुल १:२९, ऐवर्जीया// दुनामिस)
- ६ गहरी शांति(रोम १५:१३; १ कुरि १४:३३) आदि।
- ७ चेहरे पर चमक (प्रेरित २:३;६:१५ और ७:५५; २ कुरि ३:१८ (और निर्गमन ३४:२९)

२.व्यक्ति के अंदर पवित्र आत्मा की चंगाई की शक्ति को छोड़ने के लिए कहिए।

परमेश्वर से कहिए की वह अपनी शक्ति को छोड़े-"यीशु कृपया इस व्यक्ति पर अपनी पवित्र आत्मा की शक्ति और रौशनी को छोड़िए।" पवित्र आत्मा आओ इस व्यक्ति पर अपनी शक्ति व रौशनी छोड़ो।" (यहेज ३७:९ इब्रा बोई हरूआक" आओ हे (पवित्र आत्मा" [इब्रा 'रूअक' का यहाँ पर साफ मतलब है पवित्र आत्मा, क्योंकि यहेजकेल ३७:६ में 'रूअक' को यूनानी भाषा में मंजील के उत्तारार्थ का उल्था में इस के अनुवाद को 'न्यूमा मोऊ' यानी 'मेरी आत्मा' कहा गया है जिस का अर्थ है परमेश्वर की आत्मा और क्योंकि संकेत यह है की सृष्टि की रचना पवित्र आत्मा ने की, उत्पत्ती १:२ में]; "हे यहोवा मैंने तुझे पुकारा है; मेरे लिए फुर्तीकर" भजन १४१:१; २ कुरि ३:१७ "प्रभु तो आत्मा है।")

पवित्र आत्मा सर्वदा हमारे साथ है (यूहन्ना १४:१६-१९ भजन १३९:७-१०) पर वह विशेष तौर से आता है, और विशेष राजतिलक प्रगट करता है किसी विशेष उद्देश्य के लिए (लूका५:१७) "चंगा करने के लिए प्रभु की सामर्थ उसके साथ थी।" यह इस बात को बताता है की ऐसा भी वक्त था जब परमेश्वर की सामर्थ प्रस्तुत नहीं थी। १ कुरि ५:४ "जब.....प्रभु यीशु की सामर्थ के साथ इकट्ठे हो;" यशायाह ५५:६ "जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है, तब तक उसे पुकारो।"

"ठहरीए-और यह मुशकिल है-जब तक आप को पवित्र आत्मा के चिन्ह उस मनुष्य पर नहीं नज़र आते-अक्सर परन्तु हमेशा नहीं, पलके झपकती है; साँस में बदलाव आता है, माँस पेशीयो में कसाव या थिरकन, चर्म पर लाली, चेहरे पर चमकती रौशनी, शांती नज़र आती है, गिरना, हँसना, रोना (लूका ५:१७ "और चंगा करने के लिये प्रभु की सामर्थ उस के साथ थी;" भजन संहिता ३७:७,"यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसकी प्रतीक्षा कर।")

अपने मस्तिष्क की आँखों से यीशु की चंगाई की शक्ति को देखीये जब वह उस मनुष्य के अंदर एक चमकती रौशनी की तरह प्रवेश करती है। चाहे आप इस अभिषेक को गर्माहट, संसनी और बिजली की तरह अनुभव करें, जैसे की ज्यादातर लोग करते हैं, या न करें, फिर भी अपने मस्तिष्क की आँख से उस मनुष्य के अंदर उस अभीषेक को प्रवेश होते और उसे उस दुर्बलता के स्थान तक जाते देखीए (अपना ध्यान यीशु पर रखीए), क्योंकि जब तक कोई रुकावट नहीं है (पाप, क्षमा न करना, उत्सुक्ता, डर, अविश्वास), परमेश्वर का अभीषेक यकीनन उस पुरुष के अंदर जाएगा। चंगाई के अभिषेक पर ध्यान केंद्रित करीए, यीशु से कहीए की वह अपनी चंगाई की शक्ति और चंगाई की रौशनी को उस दुर्बल स्थान पर तीव्र करें और देखीए की यीशु की चंगाई की रौशनी अंदर घुसती है और उस दुर्बलता के सही स्थान पर तीव्रता बढ़ जाती है।

विश्वास को जाहिर करते हुए, परमेश्वर को धन्यवाद दीजीए (भजन २२:३-४, ५०:२३, २ इति २०:२१-२३, २७): "परमेश्वर तेरा धन्यवाद है की तेरी चंगाई की रौशनी और शक्ति इस मनुष्य के अंदर और उस दुर्बल स्थान पर जा रही है।" चाहे आपने कुछ होते हुए महसूस किया हो या नहीं, परमेश्वर का धन्यवाद दीजीए।

3. जैसे आत्मा मार्ग दर्शन करता है, वैसे प्रार्थना करीए - अनुरोध/ आज्ञा/ आधिकारीक घोषणा :

-जैसे परमेश्वर अगुवाई करते हैं, वैसे प्रार्थना करीए, अनुरोध/परमेश्वर को निवेदन के साथ और या उन शब्दों से जो परमेश्वर ने किसी परिस्थिति में या शैतान या मनुष्य को कहे हों (उदाहरण मरकुस १:२५, ७:३४; लूका ४:३९, यूह ११:४१-४३, प्रेरित २८:८)

-अनुरोध/निवेदन-यूहन्ना ११:४१, "तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया। यीशु ने आखें उठाकर कहा, 'हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली।' प्रेरित २८:८, "पुबलियुस का पिता ज्वर और आँव लहु से रोगी पड़ा था। अतः पौलुस ने उसके पास घर में जा कर प्रार्थना की और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया।"

आज्ञा - मरकुस १:२५, ".....चुप रह; और उस में से निकम जा;" मरकुस १:२५, ".....शुद्ध हो जा" (एक कोढ़ी से), मरकुस २:११, यूहन्ना ५:८, प्रेरित ९:३४ ".....उठ," मरकुस ३:५, ".....अपना हाथ बढा," मरकुस ५:४१, लूका ७:१४, प्रेरित

९:४० ".....उठ" (एक मरी लडकी से); मरकुस ७:३५, ".....खल जा (एक बहिरे व्यक्ति के कान से)," लूका ४:३९ "यीशु ने उस के ज्वर को डाँटा और ज्वर उतर गया।" लूका १८:४२ "देखने लग" (एक अंधे व्यक्ति से); यूहन्ना ११:४३ "हे लाजरस, निकल आ," प्रेरित ३:६ "चल फिर" (एक लंगड़े व्यक्ति से), प्रेरित १४:१० "खड़ा हो" (एक लंगड़े व्यक्ति से)।

आज्ञा की प्रार्थना, इंजील और प्रेरीतों के काम में अक्सर इस्तेमाल की जाने वाली प्रार्थना है, इस कारण, यकीन करो की परमेश्वर आप को चंगाई देने के लिए, आज्ञा की प्रार्थना करने की अगुवाही करेगा।

-पहले, आज्ञा दीजिए की दर्द उस मनुष्य को छोड़ कर चला जाए,"दर्द, इस मनुष्य के शरीर से दूर हो जा(हाथ,पैर,दिल आदि) इसी वक्त! यीशु के खून और शरीर की आज्ञा मानीए। लिखा है, "उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए हो।" (पितरस २:२४) और (यशायाह ५३:५) हम यह ऐलान करते हैं की इस मनुष्य का शरीर यीशु के घावों के कारण यीशु के खून से चंगा हुआ है। यदि आप को दर्द को निकालने के लिए एक बार से ज्यादा भी आज्ञा देनी पड़े तो घबराईए मत। (यीशु को भी उस अंधे आदमी के लिए एक बार से ज्यादा प्रार्थना करनी पड़ी थी, मरकुस ८:२३,२५)। अक्सर २ या ३ बार की आज्ञा प्रार्थना के बाद दर्द चला जाता है।

तब अंदर पड़ी हुई बिमारी(कैंसर, जोड़ों का दर्द, आदि) को उस मनुष्य को छोड़ कर जाने की आज्ञा दीजिए-उस के साथ एक घुसपैंटी का सा व्यवहार करीए और उससे कहीए की यीशु के नाम में वह उसे छोड़ कर जाए और फिर कभी वापस ना आए। ध्यान दीजिए की यीशु ने बुखार को टोका था, लूका ४:३९ में, जैसे कई जगहों पर शेतान को टोका (वही यूनानी शब्द) (मत्ती १७:१८; लूका ९:४२; मरकुस ९:२५; उन्होंने दुष्ट आत्मा को टोका : "हे गुंगी और बहरी आत्मा उस में से निकल आ, और फिर कभी प्रवेश न करना।"

अधीकारी घोषणा-(लूका १३:१२;"हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से छूट गयी।" लूका १८:४२;"....तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।" मत्ती ९:६;"....अपनी खाट उठा और अपने घर चला जा।" यूहन्ना ९:७, "...जा शीलोह के कुण्ड में धो ले।" लूका १७:१४, "जाओ , और अपने आपको याजकों को दिखाओ।" और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गये।"

४. नाप की डंडी(तेल को जांचीए) और अंदरूनी रुकावटों को निकालीए।

प्रार्थना के दौरान प्रश्न पूछीए (आप को कैसा लग रहा है? अच्छा? खराब?) यह मालूम करने के लिए की पवित्र आत्मा क्या कर रहा है ताकि ज्यादा जानकारी मिल सके और अगर आवश्यकता हो तो यह बदली जा सके (मरकुस ८:२३ में यीशु ने एक अंधे व्यक्ति से पूछा,"क्या तू कुछ देख सकता है?"; एलीशा ने अपने नौकर को कार्मल की पहाड़ी के किनारे तक सात बार भेजा, यह देखने को की जिस बारीश के आने के लिए वह प्रार्थना कर रहा है, वह आई या नहीं, याकूब ५:१८ और १ राजा १८:४१-४४)

पवित्र आत्मा के प्रती सचेत रहे, ताकी मनुष्य के जीवन में जो चंगाई के विरुद्ध रुकावटे आ रही हैं उनके बारे में परिज्ञान मिल सके -उदाहरण क्षमा न करना, व्याकुलता और चिंता, डर, अविश्वास, पिशाचीकरण, पाप, जो भावनो की हानी या रिश्तों में हानी वगैरह, की ओर ले जाता है (याकूब ५:१५-१६",विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा और यदि उसने पाप भी किया हो, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी। इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ।" मत्ती १३:५८,"और उसने वहाँ उनके अविश्वास के कारण बहुत से सामर्थ के काम नहीं किए।" १कुरि ११:२९-३०"क्योंकी जो खाते पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने, वह इस खाने पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।")

५.उस मनुष्य का जिस ने चंगाई पाई है चित्रांकन करते हुए प्रार्थना करते जाईए।

अपने मस्तीशक में उस मनुष्य का जिस ने पूर्ण रूप से चंगाई पाई है, चित्रांकन कीजीए (इब्रा ११:१३ यह बताता है की विश्वास का चित्रांकन, विश्वास का एक मुख्य तत्व है)। जैसा परमेश्वर चाहता है की आप करें, आप परमेश्वर से उस मनुष्य का चित्र माँगीए जो पूर्ण रूप से चंगाई पा चुका है। फिर उस मनुष्य के चित्र को अपने मस्तीशक में रख कर परमेश्वर का धन्यवाद दीजीए की उस की शक्ति और चंगाई का अभीशेक, चंगाई को पूर्ण कर रहे है। परमेश्वर तेरा धन्यवाद है की इस रीती से यह मनुष्य चंगाई पाएगा, क्योंकि उस के प्रति यह तेरी इच्छा है। हम तेरा धन्यवाद देते है की तेरी शक्ति इस में चंगाई का काम कर रही है, और जो तू इस में कर रहा है, उस पर आशीर्वाद दे।

Chapter 2

बाईबली बुनियाद

केवल "उपहारों में एक उपहार" नहीं है -- चंगाई, गैर मसीहों व मसीहों को परमेश्वर की शक्ति व प्रेम बताता है। इंजील और प्रेरितों के काम का ध्यान पूर्वक अध्ययन करने से पता चलता है की नए नियम में चंगाई का एक मुख्य कार्य है की इंजील के प्रचार के साथ चलीए और लोगों को परमेश्वर की शक्ति और दया के बारे में बताईए। चंगाई, केवल आत्मा का एक उपहार नहीं है। नए नियम में, चंगाई संस्था एक महत्वपूर्ण औजार है, परमेश्वर के राज्य के प्रचार के साथ साथ, उन को बतलाने के लिए, जो परमेश्वर को अच्छी तरह से नहीं जानते और उन के लिए भी जो परमेश्वर के लोग है, यीशु की सलीब की ताकत से पापों को क्षमा करना और उन्हें परमेश्वर की राह में वापस लाना: मत्ती ४:२३, ९:३५-३६, १०:१,७-८, ११:५, १२:१५,१८, १५:३०; १९:२; २१:१४; मर१:३८-३९; २:२,११; ३:१४-१५; ६:१२-१३; १०:१; लूका ४:१८; ५:१७,२४; ६:६-११,१७-१८; ७:२२; ९:१-२; १०:९,१३; १३:१०-१३,२२, ३२; १४:४,७; २१:३७; १६:१५-१८,२०; यूहन्ना ३:२; ७:१४-१५,२१-२३, ३१,३८; १०:२५,३२,३८; १२:३७,४९; १४:१०,१२; प्रेरित १:१; २:२२; ३:६,१२; ४:२९-३०; ५:१२-१६,२०-२१,२८,४२; ६:८,१०; ८:४-७,१२; ९:१७-१८,३४-३५; १०:३८; १४:३,८-१०,१५; १५:१२,३६; १८:५,११; १९:८-१२; रोमि १५:१८-१९; १कुरि २:४-५; ११:१; १२:१-११,२८-३१; १४:२२-२५; २कुरि १२:१२; गल ३:५; फिल ४:९; १ति१:५-६; इब्रा२:३-४; ६:१-२; याकूब५:१३-१६।

II. चंगाई के विषय परमेश्वर की सामान्य और विशेष इच्छा को अपनाना

धर्मशास्त्र सफाई से यह बताता है कत सामान्य न्याय के अनुसार बिमारी से चंगाई देना परमेश्वर की इच्छा है। याकूब ५:१५ कहता है, "विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा" यह नही की "विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच सकता है या बच नहीं सकता है।" और अगर पूर्णरूप से नए नियम की साक्षी देखें तो परमेश्वर का ढंग चंगाई की ओर यह है की परमेश्वर चंगाई देना चाहता है, जिसने भी इंजील पढी है वह यह जानता है की परमेश्वर के पुत्र ने बिमारों को चंगा किया था। प्रेरितों के काम और पत्रियाँ यह बताती है की चेलों ने और शुरू के गिरजाघर के जन सामान्य ने, बिमारों को चंगा किया। (स्टीफन, फिलीप, अनानिआस,

कुरीतियों, गलतियों, यहूदी मसीही गिरजाघरों आदि; उदाहरण: प्रेरित 3:6,12; 4:29-30; 5:12-16,20-21,28,42; 6:8,10; 8:4-7,12; 9:17-18,34-35; 14:3,8-10,15; 15:12,36; 18:5,11; 19:8-12; रोमि 15:18-19; १कुरि 2:4-5; 11:1; 12:1-11, 28-31; २कुरि 12:12; गल 3:5; फिल 4:9; १तिमो 1:5-6; इब्रा 2:3-4; 6:1-2; याकूब 5:13-16) परमेश्वर ने मसीही समाज को चंगाई करने का उपहार दिया है (१ कुरि १२:९) और यह भी की वह मसीही समाज को आज्ञा देता है की वे बिमारों के लिए प्रार्थना करें (याकूब ५:१४-१६) में। तो हमें इन सब सबूतों से यह पता चलता है की परमेश्वर बिमारों को चंगा करना चाहता है। पवित्र शास्त्र इस बात को भी साफ करता है की अल्प संख्या स्थिति में कई कारणवश, शुरुआत के गिरजाघरों ने, सब बिमारों को चंगा होते नहीं देखा (२ तिमो ४:२०, फिलि २:२६-२७, १तिमो ५:२३, गल ४:१३-१४)। यदि हम याकूब ५:१-१८ में विश्वास की प्रार्थना के बारे में पढ़ें जो बिमारो को चंगा करती है, हम देखते हैं की १ राजा १८ में, एलिशा, परमेश्वर के तुरन्त शब्दो को सुनता था और तब प्रार्थना करता था, यह उदाहरण है विश्वास की प्रार्थना के जो बिमारों को चंगा करेंगी। १ राजा १८:१ में, एलिशा ने पहले परमेश्वर के भविष्यवाणी के शब्द सुने कि परमेश्वर वर्षा भेजना चाहता था, और फिर १ राजा १८:४१-४५, में एलिशा ने उस वर्षा को, परमेश्वर के लिए भेजना चाहता था, वस्तुतः में प्रार्थना की। सो, वह विश्वास जो बिमारों को चंगा करता है, वह इस बात को भी ग्रस्त करता है की परमेश्वर प्रार्थना में बिमार के लिए क्या करना चाहता है और उस बात को मध्य नजर रख प्रार्थना करना, उस बिमार पर, जब तक हम चंगाई को पूर्ण रूप से उस मनुष्य के अंदर समाते न देखें, जैसे की एलिशा ने तब तक प्रार्थना की जब तक उस ने आखिर कार वर्षा को आते नहीं देखा।

III. विश्वास का चित्रांकन-आत्मिक क्षेत्र से देखा

बाईबली विश्वास का मतलब यह भी है की जो परमेश्वर हमें विश्वास करने के लिए कहता है, उस का चित्रांकन करना। बाईबल में से एक महत्वपूर्ण विश्वास के पाठ उत्पत्ती १५ में परमेश्वर अब्राहम को (जो "उन सब का पिता ठहरा जो विश्वास करते हैं" रोमियो ४:११) अविश्वास से वापस विश्वास की ओर ले गया और परमेश्वर पर विश्वास किया की वह उसे वादे के अनुसार पुत्र देगा जो उस के खुद के शरीर का हिस्सा होगा और परमेश्वर ने अब्राहम को, उस के पुत्र के भविष्य के वंश का चित्रांकन कर दिखाया। उत्पत्ती १५:५ में परमेश्वर अब्राहम को, सितारों भरी रात तले, पहाड़ी देश कनान में ले जाता है और कहता है, "आकाश की ओर दृष्टि

करके तारागण को गिन, क्या तू उन को गिन सकता है?" फिर उसने उस से कहा, "तेरा वंश ऐसा ही होगा?" (उत्पत्ति १५:६) और अब्राहम ने यहोवा पर विश्वास किया, और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।" लाखों तारे परमेश्वर की ओर से चित्र था की उस के वादा किये हुए पुत्र जो अब्राहम के शरीर से पैदा होने वाला था, उस का वंश कितना बड़ा होगा - एक चित्र जो परमेश्वर चाह रहा था की अब्राहम उस पर विश्वास करे।

इब्रानियों ११, एक पाठ है जो परमेश्वर के लोगों में से विश्वास के अभीनेताओं पर रौशनी डालता है। इब्रानियों ११:१३ कहता है की विश्वास के अभीनेताओं ने उन चिज़ों को देखा, जिस के लिए परमेश्वर चाहता था की वे उस पर विश्वास करें, और उनको उन्होंने प्रार्थना में आमंत्रित किया: "ये सब विश्वास की ही दशा में मरे, और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नहीं पाई; पर उन्हें दूर से देख कर आनंदित हुए।" यकीनन उन्होंने इन चीज़ों को जिनका वादा परमेश्वर ने किया था अपनी प्राकृतिक आँखों से नहीं देखा क्योंकि जब तक वे जीवित थे उन्होंने "प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नहीं पाई (इब्रा ११:१३) परन्तु उन्होंने अपनी आत्मिक आँखों से देखा-या अपने मस्तिष्क की आँख से-और उन्होंने इन के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया और "उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए।" पौलुस इफि १:१८ में मस्तिष्क की आँखों को "मन की आँखें" कहता है। दानियल ७:१-२ में मस्तिष्क की आँख को वह जगह बताई है जहाँ, भविष्यवक्ता दानियल परमेश्वर की ओर से आए हुए स्वपनों को पाता था: "उस के सर से स्वप्न निकलते थे" हम जानते हैं कि "मन की आँखें" (मस्तिष्क की आँख) को हम कल्पना भी कहते हैं, क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को आज्ञा देता है, यहोशु १:८ और भजन १:२ में की कल्पना को, विचारो और चित्र बनाओ की पवित्रशास्त्र हमें परमेश्वर के विषय में और उस के कार्यों के विषय में और उस के रास्तों के विषय में क्या कहता है।

यहोशु १:८ और भजन १:२ आज्ञा देता है की हम ध्यान लगाए या कल्पना करे या चित्र बनाए की पवित्र शास्त्र क्या कहता है। जो इब्रानी शब्द 'हगाह' का इस्तेमाल हुआ उसके एक तरफ अर्थ है, "बड़ बड़ करना, कहना", और दूसरी ओर उसका अर्थ है, "ध्यान लगाना, सोचना (विचार करना, दूर तक सोचना) कल्पना करना, उपाय करना (चित्र को दिमाग में) १ जो खास इब्रानी शब्दों का प्रयोग यहोशु १:८ और भजन १:२ में रह "हगाह बी" है, जो इब्रानी बाईबल में किसी दूसरी जगह उसका प्रयोग सोचने के लिए इस्तेमाल किया गया है जिस का मतलब है। दार्शनिक

सोच, कल्पना, या चित्रांकण करना। दक्षिण इलीनाईस विश्व विद्यालय के प्रध्यापक एल लैंगस्फोर्ड के मुताबिक, "यह विचार की कल्पना के साथ साथ विचार भी आता है बिल्कुल भी विवाद योग्य नहीं है।" एक तरफ सोच और स्मरणशक्ति बनाई गई है काल्पनिक सोच और काल्पनिक स्मरण शक्ति से, और मौखिक स्मरण शक्ति से "हम समझ सकते हैं कि नेत्रिय विचार' वह विचार, वह विचार का स्तर है जहाँ कल्पनाएँ बनती हैं और मस्तिष्क द्वारा वापस बुलाई जाती हैं।

१. एक ब्राउन,एस.आर.ड्राईवर, और सी.ए. ब्रिगस, ए हिब्रू एण्ड इंगलिश लैक्सिकन ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट(ऑक्सफोर्ड:द क्लैटण्डन प्रैस, १९५१) पृष्ठा।

२. एल लॉगस्डोर्फ, आरगुमेन्टेशन और ऐडवोकेसी ३३(१९९६) पृ ४६

३. टी.जी. वैस्ट, इन द माईनड्स आई(न्यू यार्क:प्रोमैथियुस, १९९७)पृ १।

डा. अरनेस्ट जैनी, जो की बसेल विश्वविद्यालय, स्विट्जरलैंड में पुराने नियम के प्रध्यापक हैं उन्होंने इब्रानी क्रियापद 'हगाह' को दूसरे इब्रानी क्रियापदों के साथ जिनका अर्थ देखना और मानसिक ज्ञान से संबंध रखते हैं उन को मिला कर उन का अर्थ सुचित किया, जो है 'ध्यान,विचार':

देखना विचारना:.....यहाँ पर मानसिक का अंदरूनी उपलब्धी से मेल उत्पन्न होता है जिस के लिए चिरस्थायी, लम्बे समय की जरूरत पड़ती है जिस को उपसर्ग सही जचता है....वह ध्यान लगाने के क्रियापद के इर्द गिर्द केंद्रित रहता है, जिस में हगाह.....ज्यादातर सीधे इन्द्रिय विषय पर निर्माणित है।"

डा. जीजस अरामबट्टी, जो की स्पेनी पुराने नियम के विद्वान हैं, उन्होंने वाक्य रचना के नियमों के अनुसार इब्रानी शब्द 'हगाह' और वाक्य खण्ड हगाह बी का ध्यान पूर्वक अध्ययन किया जिस का इस्तेमाल यहोशु १:८ और भजन १:२ में किया गया है। उन्होंने इस प्रकार अन्त किया की यदी वाक्य खण्ड का इस्तेमाल मन का ध्यान लगाने से सम्बन्धित है, तो वह यह बात बताता है की "यह केवल बात करने से कुछ ज्यादा है। इब्रानी शब्द खण्ड 'ज़खर' जो की भजन ६३:७, ७७:१३ और १४३:५ में पाया जाता है, उस के तुल्य, इब्रानी का 'हगाह बी' उस तरह के प्रतिबिम्ब को दर्शाता है जो परमेश्वर के कार्यों के दर्शन या चित्र हों। ("यह

दर्शाता [वरजोजन वार्टीजेण्ड] याहवे की पापों से मुक्ति के कार्यों की याददाशत है)। वह आगे कहते हैं की इब्रानी का 'हगाह' का इसतेमाल ट्वुशलुमा और स्वैच्छिक पूर्व ग्रैहण से अतीत से है जो, याद करते हुए वर्तमान में आ गया... "प्रतिबिम्ब डालना, ध्यान लगाना, साधारण अनुवाद है....'हगाह बी' का अर्थ विचार करना, दौहराना, अपने आप को मौलिक दिमाग की स्थिति में रखना। जब कोई दर्शन देखता है या पवित्र शास्त्र को चित्रों के माध्यम से दर्शाता है और कोई अपने आप को मौलिक दिमाग की स्थिति में रखता है उन की तरह जिन्होंने परमेश्वर के मुक्ति के कार्यों को देखा है, "तो अतीत का मुक्ति का इतीहास उस व्यक्ति के लिए जो परमेश्वर के कार्यों को याद रखता है और जो 'तो यह' को अपने मन में रखता है, उस के लिए वह वर्तमान बन जाता है। यहोशु १:८ के बारे में आरगबरी इस प्रकार अन्त करते हैं, "परमेश्वर के कार्यों को दर्शाना यह यहोशु १:८ में बनाया है, लगातार इसे अपने चित से लगाए रहना, जो की न्याय की पुस्तक में लिखते हैं।

इन विद्वानों के कार्य इस बात की पूर्ती करते जो अन्दरूणी, मानसिक अनुमान को दर्शाता है, इब्रानी का हगाह इस बात को बताता है जो ध्यान लगाना, विचार करना और सोचना पर निर्धारित है, जिस में सफाई से कई जगहों पर दार्शनिक सोच और दार्शनिक याददाशत भी शामिल है। नीतिवचन २४:२, दुष्ट के बारे में कहता है, "वे उपद्रव सोचते रहते हैं" (या 'योजना' या 'विचार' इब्रानी हगाह) इस वचन में स्पष्ट रूप से यह बताया गया है की दुष्ट लोग योजना बनाते हैं-जिस में दार्शनिक योजना भी शामिल है-ताकि वे अपने दुश्मन पर वार कर सकें। यशायाह ३३:१८, परमेश्वर के लोगों के मन को दर्शाता है, उन के पिछले अत्याचारों को याद करते हुए: "तू भय के दिनों को स्मरण करेगा (या 'सोचेगा' या दार्शनिकता और शब्दों के द्वारा) 'विचार' करेगा" हगाह): लेखा लेने वाला और कर तौल कर लेने वाला कहाँ रहा? गुम्मतों का गिननेवाला कहाँ रहा?" (यशायाह ३३:१८)" इस वचन में इब्रानी हगाह सफाई से इस बात को बतलाता है। जैसे डॉ.जे.एन.औस्वैट बताते हैं, मानसिकता से "पीछे देखना", अतीत की आकृतियों को और अत्याचारों के कार्यकर्ताओं को एक यहूदी, जिसने असीरीएनों पर अत्याचार होते देखा था, जब वे उत्तरी राज्यों पर चढ़ाव कर रहे थे और असीरीएन सेना यहूदा के दक्षिणी शहरों के विरुद्ध में युद्धकाल कर रही थी, तब उन्हें "पीछे मुड़ कर" नहीं देखा और न ही पिछले असीरीएन अधिकारीयों को स्मरण किया, जैसे की इस वचन में लिखा है, बिना किसी दार्शनिक आकृतियों या मानसिक चित्रों के जो उन के मस्तिष्क में नहीं आई। (आसीरीएन "लेखा" लेने वाले की और "गुम्मतों के गिननेवाले की।)

डॉ आरमबरी ने इब्रानी वाक्य खण्ड 'हगाह बी' को इस प्रकार बताया, "ध्यान लगाना", जिसका इस्तेमाल यहोशू १:८ में और भजन १:२, में इस्तेमाल किया है, दूसरे पुराने नियम के वचनों में से सफाई से, विचार करना, ध्यान लगाना या प्रतिबिम्ब डालना, को दर्शाता है जो परमेश्वर के कार्य का न केवल शब्दों के विचार परन्तु दार्शनिक विचारों और मानसिक दर्शनों को बतलाता है। भजन ७७:१२ "में तेरे सब कामों पर ध्यान करूँगा (या 'विचार' हगाह) और तेरे बड़े कामों को सोचूँगा (इब्रानी सिख)।" डॉ यूजीन पीटरसन ने भजन ७७:१२ का अनुवाद किया तो उन्होंने दार्शनिक विचार और मानसिक चित्रों के माध्यम से सही ढंग से परमेश्वर के पिछले कार्यों पर दबाव डाला जो इस वचन में इब्रानी वाक्य खण्ड में बताये गये हैं: मैं तेरे सब कामों पर जो तूने पूरे किए हैं ध्यान करूँगा, और तेरे कामों को बड़े प्यार से निहारूँगा" भजन लिखने वाला सफाई से यह कहता है की ध्यान लगाने से या परमेश्वर के कार्यों पर प्रतिबिम्ब करने से वह उस के मस्तीशक के अंदर जाएगा और वहाँ वह चित्र बनाएगा या दार्शनिकता से विचार करेगा (साथ ही साथ शब्दों के विचार भी) परमेश्वर के अद्भुत कार्यों का, परमेश्वर के लोगों के इतिहास में परमेश्वर का अब्राहम को कनान देश ले जाना, परमेश्वर का मूसा को बुलाना, परमेश्वर का इस्त्राएलीयों को लाल समुद्र के बीच में से मिस्त्र से निकालना, सिओन पहाड़ पर अग्नी और महीमा के बादल में परमेश्वर की उपस्थिती। भजन १४३:५ में इब्रानी शब्द खण्ड 'हगाह बी' का उपयोग 'ध्यान लगाना या सोचना या 'विचार' की तरह किया है जैसे के इस वाक्य खण्ड को भजन ७७:१२ में किया गया। जिस में परमेश्वर के लोगों के अतीत के मुक्ति के कार्यों को याद किया गया: भजन १४३:५ "मुझे प्राचीन काल के दिन स्मरण आते हैं, मैं तेरे सब अद्भुत कामों पर ध्यान करता हूँ, और तेरे कामों को सोचता हूँ।" भजन ६३:६ में, इब्रानी वाक्य खण्ड 'हगाह बी', "ध्यान लगाना", "सोचना", या "विचार करना", का उपयोग परमेश्वर को दार्शनिकता से विचार करने में किया गया है, जैसे की प्रकरण में संकेत किया गया है, भजन ६३:३, जो इब्रानी क्रिया 'खज़ाह' का उपयोग, "देखना, दर्शन पाना," एक क्रिया को भविष्य दर्शन देखने या आत्मिक क्षेत्र में देखने में प्रयोग किया गया है। भजन ६३:३ में इब्रानी क्रिया 'खज़ाह' प्रयोग, परमेश्वर की मंदिर में उपस्थिती को देखने से है: भजन ६३:३ "क्योंकी तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है, मैं तेरी प्रशंसा।" भजन ६३:६ "जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूँगा, तब रात के एक एक पहर में तुछ पर ध्यान करूँगा।" यह प्रकरण, जो देखने और परमेश्वर के बारे में दर्शन पाना है, यह उन वचनों से मेल खाता है जो दाऊद भजन संहिता में परमेश्वर की ओर

काल्पनिकता से देखता है या परमेश्वर को दार्शनिकता में अपने आगे रखता है। भजन १६:८ "मैंने यहोवा को निरंतर अपने सम्मुख रखा है।" भजन १६:८ के तीसरे शतक बी.सी. में यूनानी सेप्टुआजेंट में इस का अनुवाद किया जो की पतरस ने प्रेरितों के काम २:२५ में उद्धृत किया है एक दार्शनिक व्याख्या के साथ: प्रेरित २:२५ में भजन ६३:८ का उद्धृत कर यूनानी में अनुवाद किया गया, "मैंने यहोवा को निरंतर अपने सम्मुख रखा है।" भजन १७:१५ "परंतु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूंगा, जब मैं जागूंगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूंगा।" भजन २५:१५, "मेरी आँखें सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पाँवों को जाल में से छुड़ाएगा।" भजन १०५:४ "यहोवा और उसकी सामर्थ को खोजो उसके दर्शन के लगातार खोजी बनो।" भजन १४१:८ "परंतु हे यहोवा प्रभु, मेरी आँखें तेरी ही ओर लगी हैं, मैं तेरा शरणागत हूँ।"

इस कारण, वही इब्रानी 'हगाह बी' का उपयोग जो की भजन ६३:६, ७७:१२ और १४३:५ में इन अर्थ के साथ किया गया है, जैसे "ध्यान लगाना" या "(दार्शनिकता या शब्दों) का विचार" या (दार्शनिकता या शब्दों) पर सोचना", इस बात का निर्देश देता है जैसे किसी के मस्तिष्क में चित्रों या विचारों का आना। और, जैसे डॉ आरामबर्री ने अपने अध्ययन में बताया की यह वही अर्थ है जो इब्रानी वाक्य खण्ड 'हगाह बी' का प्रयोग यहोशु १:८ और भजन १:२, में किया गया है: यहोशु १:८ "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना।" भजन १:२-३ "परंतु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता, और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी तृप्त में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।" जो विचारों का दर्शन, ध्यान लगाने से सम्बन्धीत है, जो की यहोशु १:८ और भजन १:२ में इब्रानी 'हगाह बी' को बतलाता है, वह नए नियम के वचन याकूब १:२५ से प्रकरणतापूर्वक सदृश का पुष्टिकरण है। दूसरा वचन इस बात की पूर्ति करता है की जो प्रकरण यहोशु १:८ और भजन १:२ में है की जो परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाते हैं और वह जो कहता है करते हैं वे उन्नती करेंगे। पुराने नियम का प्रचलन की परमेश्वर के न्याय पर ध्यान लगाओ, वह याकूब १:२५ में इस तरह बताया गया है जो परमेश्वर के न्याय को दार्शनिकता से देखना और साथ में उसे अंदर सोक लेना। यूनानी शब्द 'पाराकुपस' जो याकूब १:२५ में उपयोग किया गया है "वह जो झुक जाता है" या "वह जो अंदर झँकता है" को दर्शाता है: याकूब १:२५, "जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध

व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसा ही काम करता है।"

IV. विश्वास-यीशु को चित्रांकण करते हुए'

विश्वास को चित्रांकण करना एक तरीका है परमेश्वर की उपस्थिती को दोहराने का और उसकी उपस्थिती और उस की शक्ति में जीवन बिताना और उस के नाम का उपदेश देना। यह समझना की पवित्रशास्त्र हमें इब्रानीयों १२:१-२ में यह सिखाती है की हमें अपनी आँखें यीशु पर रखनी है, तो यह गुण दोष विवेचक होगा इब्रानीयों १२:१-२, "इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें, और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनंद के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा।" पवित्र शास्त्र हमें यह भी आदेश देता है की हम अपने विचारों को यीशु पर रखें। इब्रानीयों ३:१ "इसलिये हे पवित्र भाइयो, तुम जो स्वर्गीय बुलावट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं, ध्यान करो।" इस कारण, इब्रानीयों ३:१ और १२:२ हमें आदेश देता है की, हम अपने दार्शनिक विचारों और शब्दों, या अदार्शनिक विचारों को यीशु पर रखें। हमने ऊपर वाद विवाद किया की कैसे पौलुस इफि १:१८ में मस्तिष्क की आँखों को "मन की आँखें" बताता है और कैसे इसी बात को दानियल ७:१-२ में भी बताया गया है की वह स्थान जहाँ पर भविष्यवक्ता दानियल परमेश्वर की ओर से दर्शन पाता था (दानियल ७:१, "स्वप्न देखे") हम ने ऊपर यह भी देखा की "मन की आँखें" (मस्तिष्क की आँख) को हम "भावना" भी कहते है, क्योंकि यहोशु १:८ और भजन १:२ में, परमेश्वर हमें आदेश देता है की हम विचार करें, सोचें और जो पवित्र वचन हमें परमेश्वर के बारे में, उस के कार्यों के बारे में और उस के रास्तों के बारे में, जो बताता है, उसे चित्रांकण करे।

हम ने ऊपर से यह भी देखा की दाऊद भजनों में कैसे परमेश्वर को अपने सामने रखता है। भजन १६:८ "मैंने यहोवा को निरंतर अपने सम्मुख रखा है।" यहाँ यह साफ है की दाऊद ने यह नहीं किया की वह परमेश्वर के दर्शन का उत्सुक्ता से इंतजार करे की वह कहीं से भी उस के पास आ जाए। यह बात की उसने हमेशा "परमेश्वर को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है" इस बात को बताता है की उस ने

स्वयं "पम्प को शुरू किया है," इच्छापूर्वक अपने मन को परमेश्वर पर लगा कर। सच्चाई यही है की यह इच्छापूर्वक कार्य, परमेश्वर को दार्शनिक रूप में अपने से आगे रखना है या परमेश्वर को अपने से आगे रखने का चित्रांकण करना इस बात को बताता है की भजन १६:८ में अनुवाद में इस को बतलाया गया है और कई और भजनों में भी जहाँ दाऊद बताता है की परमेश्वर की ओर देखता है और अपनी आँखों को परमेश्वर पर लगाए रखता है। भजन १६:८, "मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है" का तीसरी शताब्दी बी.सी. से यूनानी भाषा में इंजील का अनुवाद किया गया और फिर पतरस द्वारा प्रेरित २:२५ में दार्शनिक अर्थ को दर्शाया गया है। प्रेरित २:२५ में भजन १६:८ को दोहराया गया है, जिस का यूनानी अनुवाद इस प्रकार है, " मैं देख रहा था, परमेश्वर को हमेशा अपने सामने।" स्विस के नए नियम के विद्वान, डब्ल्यू निखालिस, ने यूनानी क्रियापद के बारे में बताया की "मध्यम(आकार) का इस्तेमाल विस्तृत ढंग से, परन्तु आलंकारित्ता से भजन १५:८(१६:८): मोटोमेन (इब्रानी) शावाह पाईल "रखना") अपनी आँखों के सामने रखना"। यह बात साफ है की यूनानी इंजील के अनुवाद और बाद में पतरस ने, इस बात को माना की दाऊद ने "पम्प को चलाया" कुछ इस तरह से की उन्होंने दार्शनित्ता से परमेश्वर को सर्वदा अपने सामने रखा ताकी परमेश्वर उस में समायें और उन्हें मार्ग दर्शन दें, सम्मती दें और उस तरह से उन्हें शक्ति दे जैसे की भजन १६ में बताया गया है, "मैं यहोवा को धन्य कहता हूँ, क्योंकि उसने मुझे सम्मती दी है, वरन् मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है। मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है, इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊँगा। यह सच्चाई की पतरस को यह वचन याद था, इस बात को बताता है की उन्होंने अपने उपदेश में प्रेरित २:२५ में इस का उपयोग किया, यह इस बात को भी बताता है की पतरस ने भी खुद "पम्प को चलाया" जैसे दाऊद ने किया और दार्शनित्ता और चित्रांकण से परमेश्वर को अपने से आगे रखा ताकी उन्हें परमेश्वर से मार्गदर्शन और शक्ति मिल सके।

जैसे की ऊपर बताया गया है, कई और वचन है भजनों में जो यह बताते है की दाऊद ने स्पष्ट रूप से ढूँढा और परमेश्वर पर अपनी आँखों को लगाए रखा। भजन १७:१५, "परन्तु मैं तो धर्मी होकर केरे मुख का दर्शन करूँगा जब मैं जागूँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूँगा।" भजन २५:१५, "मेरी आँखें सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पाँवों को जाल में से छुड़ाएगा।" भजन १०५:४, "यहोवा और उसकी सामर्थ्य को खोजो, उसके दर्शन के लगातार खोजी बने रहो।" भजन १४१:८, "परन्तु हे

यहोवा प्रभु, मेरी आँखें तेरी ही ओर लगी हैं, मैं तेरा शरणागत हूँ, तू मेरे प्राण जाने न दे।" कुछ वचन जो भविष्यवक्ताओं के द्वारा लिखे गए हैं वह इस बात को बताते हैं की भविष्यवक्ता भी परमेश्वर को ढूँढते थे और इसी तरह चित्रांकित विश्वास को भी रखते थे। हब्वकूक २:१, "मैं अपने पहरों पर खड़ा रहूँगा, और गुम्मत पर चढ़कर ठहरा रहूँगा, और ताकता रहूँगा कि मुझ से वह क्या कहेगा? मैं अपने दिए हुए उलाहने के विषय क्या उत्तर दूँ?" अमोस ९:१ "मैं ने प्रभु को वेदी के ऊपर खड़ा देखा, और उसने कहा.....।" यशायाह ६:१, "मैंने प्रभु को बहुत ही ऊँचे सिंहासन पर विराजमान देखा --।" दानि ४:१, "जो गर्शन मैंने पलंग पर पाया वह यह है: मैंने देखा ----।" दानि ४:१३, "मैं ने पलंग पर दर्शन पाते समय क्या देखा,----।" दानि ७:२, दानियेल ने यह कहा, "मैं ने रात को यह स्वप्न देखा कि महासागर पर चारों ओर आँधी चलने लगी।" भजन १७:१५, ""परन्तु मैं तो धर्मी होकर केरे मुख का दर्शन करूँगा जब मैं जागूँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट हूँगा।" प्रकाशित ४:१, "इन बातों के बाद जो मैंने दृष्टि की तो क्या देखता हूँ कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है, और जिसको मैंने पहले तुरही के से शब्द से अपने साथ बातें करते सुना था, वही कहता है, "यहाँ ऊपर आ जा----।"

यीशु स्वयं भी आत्मिक दर्शन के लगातार बहाव में रहते थे। यूहन्ना ५:१९ यह बताता है की यीशु हर समय अपने पिता परमेश्वर को देखते और सुनते रहते थे, यह देखने के लिए की उनके पिता क्या कर रहे हैं और उन के लिए उन के पिता का क्या आदेश है। यूहन्ना ५:१९-२०, "इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है; क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है। क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह उसे दिखाता है।" यूहन्ना ८:३८, "मैं वही कहता हूँ, जो अपने पिता के यहाँ देखा है।" यूहन्ना ८:२८-२९, "मैं अपने आप से कुछ नहीं करता परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया वैसे ही ये बातें कहता हूँ। मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है, उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है।" यूहन्ना १२:४९, "क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें नहीं कीं, परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूँ और क्या क्या बोलूँ।" फिर यूहन्ना १४:१६-२० में, यीशु अपने चेहों से कहते हैं की वे उस के जी उठने के बाद उसे आत्मा के द्वारा देखेंगे। यूहन्ना १४:१६-२०, "मैं पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे----।" (14:17) सच्चाई की आत्मा, जिसे संसार

ग्रहण नहीं नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है, तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा। मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ। (१४:१८) और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे। (१४:१९) उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में, और मैं तुम में। (१४:२०)"

इस कारण हमें अपनी आँखों को यीशु पर रखना है, और अपने मस्तिष्क की आँख और आत्मिक कानों से हमें पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु को देखना और सुनना है और हर स्थिति में हमें उस का साथ देना है, उस कार्य को करने के लिए जो वह अपनी इच्छानुसार करना चाहता है (देखीए यूहन्ना ५:१९ और १५:५)

५.विश्वास-उस देह का चित्रांकन करना जीसने चंगाई पाई हो।

बाईबली विश्वास का मतलब है की हम उस बात का चित्रांकन करे जो परमेश्वर हमें दिखाता है की हम करें (इब्रानी ११:१३; उत्पत्ती १५:५-६) जब हम प्रार्थना करे तो हमें यह चित्रांकन करना चाहिए की उस व्यक्ति की देह चंगाई पा रही है, क्योंकि हमें यह पता है की न्याय के अनुसार परमेश्वर की इच्छा है की बिमार चंगाई पाए। याकूब ५:१५ कहता है, "विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा" यह नही की "विश्वास की प्रार्थना से बिमार चंगाई पा सकता है या नहीं पा सकता है।" और यदि हम पूरे नए नियम में परमेश्वर की चंगाई की स्थिति की साक्षी को देखें तो हमें पता चलता है की परमेश्वर चंगा करना चाहता है। जो भी इंजील का पढ़ने वाला है वह यह जानता है की परमेश्वर के पुत्र ने बिमारों को चंगा किया। प्रेरितों के काम और पौलुस की पत्नीयाँ यह बताती है की चेले और पूर्व में जो गिरजाघर के चलाने वालों ने बिमारों को चंगा किया (स्टीफन, फिलिप, अनानिआस, कुरंथियो गलतीयों, यहूदी मसीही गिरजाघरों वगैरह। उदाहरण प्रेरित ३:६,१२; ४:२९-३०, ५:१२-१६, २०-२१, २८, ४२, ६:८, १०, ८:४-७, १२, ९:१७-१८, ३४-३५, १४:३, ८-१०, १५, १५:१२, ३६, १८:५, ११, १९:८-१२। रोमियो १५:१८-१९; १ कुरि २:४-५; ११:१; १२:१-११, २८-३१; २ कुरि १२:१२; गल ३:५; फिल ४:९; १ तिम ५:५-६; इब्रान ३:४; ६:१-२; याकूब ५:१३-१६)। परमेश्वर ने गिरजा घरों को चंगाई देने का उपहार दिया (१ कुरि १२:९)। वह याकूब ५:१४-१६ में वह गिरजाघर को आदेश देता है की वह बिमारों के लिए प्रार्थना करे। इस तरह इन सबूतों से हमें पता चलता है की परमेश्वर बिमारों को चंगा करना चाहता है। पवित्रशास्त्र यह भी बताता है की कुछ

परिस्थितियों के कारणवश, पूर्व के गिरजाघर बिमारों को चंगा नहीं कर सकते थे (२ तिमो ४:२०; फिल २:२६-२७ १ तिमो ५:२३; गल ४:१३-१४)। इस कारण हमें निराश नहीं होना है यदि कुछ स्थितीयों में चंगाई नहीं मिलती है या थोड़ी चंगाई मिलती है, तो हमे कोशीश करते रहना है, यह जान कर की सामान्य न्याय के कारण, परमेश्वर चंगाई देगा।

VI. परमेश्वर की शक्ति या ताकत ही वह बल है जो चंगाई देता है।

कुछ स्थितीयों में यीशु ने यह कहा की "उन में से ताकत निकल गई है" ताकी लोग चंगाई पाए(मरकुस ५:३०; लूका ५:१७; ६:१९; ८:४६)? ऐसी "शक्ति" ने जो उन में से निकलकर एक औरत को चंगा किया (मर ५:३०; लूका ८:४६); एक झोले के मारे हुए को चंगाई मिली और वह चलने लगा (लूका ५:१७) और हर बिमार को चंगा किया और उन लोगों को पिशाचों से छुटकारा दिया जो उन को छूते थे (लूका ६:१९) यूनानी 'एवर्जीया' का मतलब है, "काम करना, तीव्रता" या "शक्ती, चमत्कार" इन शब्दों का प्रयोग, यीशु की चंगाई की ताकत को इन वचनों और सारी इंजील और प्रेरीतों के काम में बतलाया है (मत्ती ७:२२; ११:२०-२१, २३; १३:५४; ५८; १४:२, मरकुस ५:३०; ६:२, ५, १४; ९:३९; लूका ५:१७; ६:१९; ८:४६; ९:१; १०:१३; १९:३७; प्रेरित २:२२; ३:१२; ४:७; ६:८; ८:१३; १०:३८; १९:११;)

यहाँ यह ध्यान देने लायक है की यूनानी शब्द 'एवर्जिया', का मतलब है यूनानी शब्द 'डुनामिस' याने "शक्ति" दोनो शब्दों का एक ही अर्थ निकलता है, जब वह परमेश्वर की ताकत को बताता है और इस कारण दोनो, परमेश्वर की चंगाई और चमत्कारी ताकत को बताते है, जिस का वर्णन इंजील और प्रेरीतों के काम में बताया गया है। डॉ एफ एफ ब्रूस के मुताबिक, "पौलुस ने 'एनर्जीया' का प्रयोग अलौकिक ताकत के लिए किया।" कुल १:२९ और फिल ३:२१ में पौलुस परमेश्वर की "ताकत (डुनामिस)" को परमेश्वर की शक्ती (एवर्जीया) से मिलाता है।" कुल १:२९, "इसी के लिये मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है, तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।" फिल ३:२१, "वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश बदलकर, अपनी महीमा की देह के अनुकूल बना देगा।" कई नए नियम के विद्वानों ने यह बताया है की ऊपर्युक्त संदर्भ जो यह बताता है की यीशु का यह महसूस करना की शक्ति उन्हें छोड़ कर जा रही है की बीमार को चंगाई दे, यह बिलकुल

उस तरह है जैसे की आधुनिक अंग्रेजी में जो बिजली या चुम्बकीय शक्ति का विवरण है। अंग्रेज नए नियम विद्वान, डॉ सिरिल एच.पौवेल के शब्दों में "लूका के चंगाई की 'डुनामिस' (शक्ति) के कुछ संदर्भ यह बताते हैं की कुछ करीबी जाँच की जाए। वे विचित्रता से शारीरिक लगते हैं.....जो चित्र लूका ५:१७ में बताया गया है वह भाष्यकारों के हिसाब से, वह किसी बिजली की सम्भावना से भरा हुआ है.....।" डॉ. पॉवल ने बताया की कई नए नियम के विद्वानों 'डुनामिस'(शक्ति), जो बताई गई है, वह कुछ स्वयं होने वाला और अर्थात-शारीरिक, किसी बिजली के स्रोत के बहाव की तरह कार्य करते हुए," दर्शाया है।

VII.परमेश्वर की चंगाई की शक्ति को, पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर की रौशनी से मिलाया गया है,

हम जानते हैं की यह परमेश्वर की "शक्ति" जिसका वर्णन यूनानी कुल १:२९ और फिल ३:२१ में किया गया है वह परमेश्वर की रौशनी की स्पष्टता हो सकती है।

यशायाह ३०:२७-२८ में पवित्र आत्मा को नदी के रूप में चित्राया गया है और उस को परमेश्वर की आग से जोड़ा गया है। यशायाह ३०:२७-२८, "देखो, यहोवा दूर से चला आता है, उसका प्रकोप भडक उठा है, और धूँए का बादल उठ रहा है, उसके होंठ क्रोध से भरे हुए और उसकी जीभ करनेवाली आग के समान है। उसकी साँस ऐसी उमण्डनेवाली नदी के समान है जो गले तक पहुँचती है।" इसी तरह यूहन्ना ७:३८ में पवित्र आत्मा को "जीवित पानी की नदी" बताया गया है। यूहन्ना ७:३७-३९, "पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदीयाँ बह निकलेंगी। उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे..."।

दानियल ७ में परमेश्वर के सिंहासन से आग की नदी बहती है। दानियल ७:९-१० "मैंने देखा.....उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी..."। यशायाह ३०: २७-२८ और यूहन्ना ७:३८-३९, यह बताता है की वह आग की नदी जो परमेश्वर के सिंहासन से बह रही है वह पवित्र आत्मा है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने भी 'मसीहा' का जो वर्णन किया उस में पवित्र आत्मा को परमेश्वर की

आग बताया। मत्ती ३:११, "मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है, मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।" प्रेरित २:२-४ में इस वादा का पूरा होना इस बात को साफ करता है की "पवित्र आत्मा और आग" केवल एक दो शब्दों का एक मेल है, जो एक ही बात को बताता है। परमेश्वर की आग, पवित्र आत्मा की स्पष्टता है, जैसे प्रेरित २:२-४ बताता है, "एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया। और उन्हें आग की सी दीभें फटती हुई दिखाई दीं और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गये और जिस प्रकार आत्मा ने उनेहें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अनेय अन्य भाषा बोलने लगे।" निर्गमन ३३ और ३४ और २ कुरिंथियों ३ में यह साफ है की परमेश्वर की आत्मा को स्पष्ट कर परमेश्वर की महीमा से होता है और यह महीमा रौशनी की तरह दिखती है। परमेश्वर की चमक और रौशनी जो मूसा के चेहरे पर दिख रही थी जब वह दूसरी बार सीओन पहाड़ी पर हो आया था जो निर्गमन ३४ में बताया गया है और जब उस ने परमेश्वर की महीमा को देखा था (निर्ग ३३:१८-१९, ३४:५-७) यह चमक इस्त्राएलीयों के लिए इतनी भयानक थी की मूसा को अपना चेहरा एक कपड़े से ढाँकना पड़ा, यह परमेश्वर की महीमा की स्पष्टता से था। निर्गमन ३४:५ में भी परमेश्वर की आत्मा की रौशनी और महीमा को एक बादल के रूप में देखते हैं। इस कारण हमें इन वचनों से पता चलता है की पवित्र आत्मा, मध्यस्त होता है और न सिर्फ, ऊपर बताई गयी परमेश्वर की आग को, परन्तु परमेश्वर की रौशनी, परमेश्वर की महीमा और परमेश्वर के जीवन को भी स्पष्ट करता है (२ कुरि ३:६-७)।

निर्गमन ३३:१८-१९, मूसा ने कहा, "मुझे अपना तेज दिखा दे। उसने कहा, "मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊँगा और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूँगा।

निर्गमन ३४:५-८, तब यहोवा ने बादल में उतर कर उस के संग वहाँ खड़ा हो कर यहोवा नाम का प्रचार किया। यहोवा उसके सामने होकर यूँ प्रचार करता हुआ चला, यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालू और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवंत, और अती करुणामय और सत्य, हजारों पीढ़ियों तक निरंतर करुणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करनेवाला है, परंतु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहरायेगा; वह पित्रों के

अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है। तब मूसा ने तुरन्त पृथ्वी की ओर झुककर दण्डवत् किया।

निर्गमन ३४:२९-३३, जब मूसा साक्षी की दोनों तख्तियाँ जब तक मूसा उनसे बात न कर चुका, तबतक अपने मूँह पर ओढ़ना डाले रहा।

२ कुरि ३:६-८ "जिसने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया तो आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी?

२ कुरि ३:१३ और मूसा के समान नहीं, जिसने अपने मूँह पर परदा डाला था ताकी इस्राएली उस घटने वाले तेज के अंत को न देखें।

२ कुरि ३:१७-१८ "प्रभु तो आत्मा है..... अंश करके बदलते जाते हैं। यह सच्चाई की पवित्र आत्मा मध्यस्त करती और परमेश्वर की आग, परमेश्वर की रौशनी और परमेश्वर की महिमा को स्पष्ट करती है, इस बात की झलक इस्राएली ब्रितान्त निर्गमन में, विरान में भटकते हुए और यीशु के रूपान्तर में दिखती है। निर्गमन १३ हमें बताता है की,"और यहोवा उन्हें दिन को मार्ग दिखाने के लिए मेघ के खम्बे में और रात को उजियाला देने के लिये आग के खम्बे में होकर उन के आगे आगे चला करता था, जिससे वे रात और दिन दोनों में चल सकें (निर्ग १३:२१)।

यशायाह ६३:११-१४, इस बात को साफ करता है की मेघ का खम्भा और आग का खम्भा पवित्र आत्मा की स्पष्टता थे: "तब उसके लोगों को उनके प्राचीन काल अर्थात् मूसा के दिन स्मरण आये.....इसी प्रकार से तूने अपनी प्रजा की अगुवाई की ताकी अपना नाम महीमायुक्त बनाए" (यशा ६३:११-१४)। तो फिर से, हम निर्गमन में और विरानें में भटकने के वृत्तान्तों में, पवित्र आत्मा को परमेश्वर की उपस्थिती को मेघ के रूप में और परमेश्वर की आग जो रात में रौशनी देती है, के रूप में देखते हैं। यीशु के रूपान्तर में हम परमेश्वर की रौशनी को यीशु के मुख और कपडों को इस हद तक भरते देखते हैं की वे परमेश्वर की रौशनी में सूरज की तरह चमकते दिखते हैं और फिर पवित्र आत्मा परमेश्वर की उपस्थिती को स्पष्ट करती है एक "चमकीले बादल" के रूप में जो परमेश्वर की रौशनी फैला रहा है।

मत्ती १७:१-५, "छः दिन के बाद यीशु ने....."यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ: इसकी सुनों।"

इन सब सबूतों से यह बात साफ है की पवित्र आत्मा मध्यस्त करता और स्पष्ट करता है परमेश्वर की आग, परमेश्वर की रौशनी, परमेश्वर की महीमा और यह की आत्मा अपनी उपस्थिति को स्पष्ट करता है एक उज्ज्वल चमकीले बादल के रूप में। हम ने यह बात को देखा की कुछ वचनों में यीशु ने अनुभव किया की "शक्ति (यूनानी दुनामिस) उन में से निकल कर गई है" लोगों को चंगा करने के लिए (मरकुस ५:३०, लूका ५:१७;६:१९;८:४६;)? ऐसी "शक्ति", यूनानी में 'दुनामिस', उस में से निकल कर एक औरत को तुरन्त चंगाई दी (मरकुस ५:३०; लूका ८:४६;), एक झोले के मारे आदमी ने चलना शुरू कर दिया। (लूका ५:१७) और सब बिमारी और दुष्टात्माओं से भरे लोगो को चंगाई मिली जब उन्होंने उस को छुआ (लूका ६:१९)। हम ने भी देखा की कई नए नियम के विद्वानों ने इस बात को पहचाना की नए नियम की पत्रियों में, विशेष रूप से कुल:१:२९ और फिल ३:२१; में यूनानी शब्द एनर्जिया, जिस का अर्थ "शक्ति, कार्यशील" यह यथार्थ है, यूनानी शब्द 'दुनामिस' "ताकत के लिए, इंजील और प्रेरीतों के काम में, इस्तेमाल किया गया है। और हम ने ऊपर्युक्त इस तरह अन्त किया की, परमेश्वर की "ताकत" जिसे यूनानी में 'दनामिस' कहा जाता है, उस परमेश्वर की ताकत से चंगाई को बताता है जो परमेश्वर की शक्ति, कार्यशील" यूनानी में "एनर्जिया" जो पत्रियों में बनाया गया है।

लूका ४:१४ और प्रेरित १०:३८ वचनो में यह साफ है की परमेश्वर की चंगाई की ताकत जिसे यूनानी शब्द 'दुनामिस' से बतलाया गया है, वह मध्यस्थ और स्पष्ट किया गया है, पवित्र आत्मा से। लूका ४:१४,"फिर यीशु आत्मा की सामर्थ्य से भरा हुआ गलील को लौटा और उसकी चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई।" प्रेरित १०:३८,"परमेश्वर ने किसी रीती से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता और सब को जो शैतान के सताये हुए थे अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।" इस कारण, उपर्युक्त बाईबली सबूत से यह बात साफ है की पवित्र आत्मा, परमेश्वर की आग, परमेश्वर की रौशनी, परमेश्वर की महीमा और परमेश्वर की चंगाई की ताकत जिसे पत्रियों में परमेश्वर की शक्ति भी कहा गया है, और स्पष्ट करता है।

बाईबल हमें यह सिखाती है की परमेश्वर के प्यार के गुण और आत्मा का उनका स्वभाव के साथ साथ, रौशनी, परमेश्वर के विशिष्ट गुण स्वभाव अंतर्भाग है। १ यूहन्ना १:५ कहता है की 'परमेश्वर के स्वभाव का मध्य गुण है। यूहन्ना १:५ परमेश्वर के स्वभाव के गुण का वर्णन है। इस में कमी है एक यथा की जैसे की यूनानी के कई करता कारक विशेषण संद्या में (और इब्रानी और अधी प्राचीन और आधुनिक भाषाएं जो यथा का इस्तेमाल संद्या को बताने के लिए करते हैं। परन्तु इस का यह मतलब नहीं की यह परमेश्वर के स्वभाव का मध्य गुण नहीं। यूहन्ना १:५ दोनों यूनानी और अंग्रेजी में सफाई से बताना है की: "परमेश्वर ज्योती है", बिल्कुल जैसे "परमेश्वर प्रेम है" (यूहन्ना ४:८) और "परमेश्वर आत्मा है" (यूहन्ना ४:२४)। यह सारी परमेश्वर की विशेषताएं, उस के कई स्वभावों को बतलाते हैं- आत्मा, प्रेम, ज्योती। यह परमेश्वर के निष्कर्ष, गुण ही परमेश्वर के अस्तित्व का अंतर्भाग है।

आगे यह की, परमेश्वर की उपस्थिति की ज्योती, प्रेरित ९:३-४ में प्रत्यक्ष ताकतवर प्रभाव पौलुस अंधा हो भूमी पर गिर जाता है, जब वह यीशु ने परमेश्वर की ज्योती की स्पष्टता देखता है और प्रकाशितवाक्य १:१७ में जहाँ यूहन्ना ऐसे गिरा जैसे वह मर गया हो, जब उसने यीशु की स्वर्गीय चमक देखी। यह वचन सफाई से यह बताते हैं की परमेश्वर की ज्योती का स्वभाव, परमेश्वर की ताकत उपस्थिति और महीमा चमकती शक्ति को स्पष्ट करती है। और यह इस बात को भी बताते हैं की परमेश्वर की ज्योती में शारीरिक गुण, हो सकते हैं जैसे वास्तविक रौशनी, चमक, शक्ति, जैसे की कई पुराने नियम और नए नियम के वचन बताते हैं। निर्गमन १९:१८ ("परमेश्वर सीयोन पर्वत पर आग के रूप में उतरा था)" निर्गमन २४:१७, "इस्त्राएलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग के समान दिखाई पड़ता था।" निर्गमन ३४:२९ "जब मूसा साक्षी की दोनों तख्तियाँ हाथ में लिये हुए सीनै पर्वत से उतर रहा था.....उसके चहरे से किरणें निकल रही हैं।" निर्गमन ४०:३८ ".....बादल में आग उन सभी को दिखाई दिया करती थी।" मत्ती १७:२ "वहाँ उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुँह सूर्य के समान चमका.....।" प्रेरित १२:७, "तो देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ और उस कोठरी में ज्योती चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मार के उसे जगाया.....।" प्रेरित २२:११ "जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे कुछ दिखाई न दिया,.....।" प्रेरित २६:१३ "मार्ग में दोपहर के समय मैंने आकाश से सूर्य के तेज से भी बढ़कर एक ज्योति, अपने और अपने साथ चलनेवालों के चारों ओर चमकती हुई

देखी।" प्रकाशित २२:५ "फिर रात न होगी, और उन्हें गीपक और सूर्य के उजियाले की आवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।"

बाइबल परमेश्वर को "ज्योतीयों के पिता" कहा गया है (याकूब १:१७) और व्यवस्था विवरण ४:२४, इब्रानियों १२:२९ कहता है, "हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है।" बाइबल कहती है की हम सब परमेश्वर के बच्चे होने का मतलब है की हम "ज्योती के बच्चे हैं" जिन में परमेश्वर की ज्योती के फल द्वारा अच्छाई, धार्मिकता और सच्चाई, पैदा होती है। इफी ५:८, "क्योंकी तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अतः ज्योति की सन्तान के समान चलो।" १ थिसलो ५:५ "क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो, हम न रात के हैं, न अंधकार के हैं।"

ज्योति, जो स्वाभाविक दुनिया या सृष्टी में, सृष्टी कर्ता को बताती है, उसको वैद्यविद्या न केवल एक चुम्बकीय बहाव की शक्ति माना जाता है, जिस को सामान्य आँख देख नहीं सकती की वह कब होती है। परमेश्वर की ज्योती रौशनी से यकीनन उच्च स्तर पर चलती है, जैसा की ऊपर देखा गया, बाइबल, परमेश्वर की ज्योती को, प्राकृतिक रौशनी से तुलना करता है।

VIII. हमें परमेश्वर की शक्ति और ज्योति से परीपूर्ण होना है।

क्या किसी निश्चित समय पर हम उसे स्पर्शनीय शक्ति समझते हैं या नहीं। परमेश्वर की ज्योती - उसकी ताकत, उसका जीवन, और उस की शक्ती- इन सब को हमारे शरीर में चमकना है। हमे अपनी आँखों को परमेश्वर पर लगा कर, उस पर लगाना है जो अच्छा है। (लूका ११:३४) "तेरे शरीर का दीया तेरी आँख है, इसलिये जब तेरी आँख निर्मल है तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला है।" हमारी देह को, हमारी आत्मा और हमारे प्राणों को पूर्णता से भरना है, परमेश्वर की ज्योती, उसकी महीमा और उसकी शक्ति से, जैसे की २ कुटि ३:१८ और ४:६ में बताया गया है।

२ कुरि ३:१८, "परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।"

२ कुरि ४:६ "इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, "अंधकार में ज्योति चमके," और वही हमारे हृदयों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो।"

हमें किसी हवाई बान विज्ञान शास्त्र की उपाधी की जरूरत नहीं है। यह जानने के लिए की परमेश्वर की चंगाई की शक्ति प्रत्यक्ष हुई है पवित्र आत्मा के द्वारा, परमेश्वर की आग या परमेश्वर की शक्ति या परमेश्वर की ज्योती के रूप में, के इसे, गर्मी, शक्ति, चुलबुलाहट या बिजली की तरह समझा जाता है, जैसे की कई मसीह हो जो की चंगाई संस्था में है।

IX मसीही और आत्मिक लड़ाई की भेद्यता

कुछ प्रचारक इस बात से इनकार कर देते हैं की किसी के मसीही जीवन के कुछ क्षेत्रों पर शैतान का नियंत्रण होता है, लालच और पाप द्वारा। उन का दावा है की क्योंकि एक मसीही पवित्र आत्मा का मंदिर है (१ कुरि ६:१९) और क्योंकि मसीह जो हम में है वह शैतान से जो की इस दुनिया में है उस से बढकर है (१ यूहन्ना ४:४), तो मसीही शैतानी आत्माओं से प्रभावित नहीं हो सकते। इस तरह के दावे इस बात को समझाने में मुश्किल कर देते हैं की मसीहों में जो शैतानी कार्य हो रहे हैं, वह क्या है। और जब उस की तर्कशास्त्र की छोर तक पीछा करो तो, हमें और कोई तर्क नहीं सूझता सिवाय इस के की शैतान या उस की शक्ति, किसी भी मसीह को ललचा नहीं सकती। यदि नए नियम को पढ़ें तो यह बात स्पष्ट होती है की यह बाइबल की दृष्टि नहीं है की शैतान की शक्तियाँ मसीही पर क्या कर सकती हैं।

उत्पत्ती से लेकर प्रकाशित वाक्य तक बाइबल हमें यह बताती है की परमेश्वर के लोग हर दिशा से परमेश्वर और शैतान के बीच पाप की लड़ाई है। परमेश्वर की रचना ही उस के विरुद्ध हो गई। शैतान से शुरू हो कर हम तक, जो परमेश्वर के लोग हैं, लड़ाई में घिरे हुए हैं (इफी ६:१२-१८)। नया नियम यह बताता है की यह लड़ाई एक तनाव उत्पन्न करती है परमेश्वर अपनी प्रभुत्व, अपनी रचना और अपने लोगों के ऊपर और शैतान का दुनिया पर नियंत्रण मनुष्य पाप के द्वारा (यूहन्ना ५:१९; इफी २:१-५)। इस तनाव को, नए नियम में, कई स्तरों पर देखा जा सकता है। मसीह सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणी है," (कुल २:१० और इफी १:२०-३०) "और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा हुआ है।" (यूहन्ना ५:१९) मसीह तो हम में है वह शैतान से बड़ा है (१ यूह ४:४) जब की शैतान हमारे जीवन

पर अपना पंजा कस सकता है, पाप के द्वारा जैसे क्रोध (इफी ४:२६-२७)। पतरस, जिसे पिता परमेश्वर ने खुद यीशु की सच्चाई बताई की वह मसीहा है, मत्ती १६:१६-१७ में, उसी ने एक दम मुँह मोड़ कर उन शब्दों को बोला जो शैतान से प्रभावित थे (मत्ती १६:२१-२३)।

हनन्याह और सफीरा वस्तुतः विश्वासी थे-कोई और तरीका नहीं था की वे विश्वासीयों की संगती में रहें, क्योंकि प्रेरित ५:१३-१४ में, विश्वासी और अविश्वासी के बीच एक कड़ी सीमा है (औरों में से किसी को यह हियाव न होता था की उन में जा मिलें) परन्तु हनन्याह और सफीरा के मन शैतान से भरे हुए थे जीस कारण वे लालच और धोका देने लगे (शैतान ने तेरा मन क्यों भर दिया (प्रेरित ५:३) शैतान एक विश्वासी पर ही हावी होता है, १ पतरस ५:८-९ के मुताबिक चाहे यीशु जो उस विश्वासी में है वह बड़ा है (१ यूहन्ना ४ :४)। क्षमा न करने के द्वारा शैतान उस विश्वासी का जिस में मसीह बड़ा है, फायदा उठा सकता है (२ कुरि २:१०-११) (२ तिमो २:-२६) के मुताबिक, एक विश्वासी जिस में यीशु बड़कर है, उसे शैतान अपने वश में कर सकता है की वह उस की इच्छा को पूरा करे (पतरस ने, प्रेरित ८:२३ में जैसे शमौन टोना करने वाले के लिए कहा जो बपतिस्मा ले चुका था और विश्वासी था, परन्तु फिर भी "अधर्म के बन्धन में पड़ा था)। याकूब बताता है की एक विश्वासी जिस में मसीह है, वह उसी समय, उन स्थितीयों से भी रहता है जो शैतानी है। (याकूब ३:१४-१५)। पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासीयों को जिन में मसीह रहता था चेतावनी दी की हो सकता है की वे एक "दूसरी आत्मा" पाए-यकीनन शैतानी आत्मा जो पवित्र आत्मा के विपरित है-दूसरे वचन को पाए जिसका वर्णन २ कुरि ११:४, में (१ तिम ४:१ और १ यूहन्ना ४:१ को याद करते हुए)

यह वचन हमें यह नहीं बताते की यदी मसीह की उपस्थिती, पवित्र आत्मा के माध्यम से, हम में है, तो हम शैतान के चुंगल से नहीं बच सकते। यहाँ पर यह भी साफ है की केवल मसीही बनने से और अपना विश्वास मसीह में रखने से, हम पाप और शैतानी प्रभाव से बच जाएंगे। बल्की पूरे नियम में हमें चेतावनी दी गई है की हम शैतान की योजनाओं से प्रभावित होने से बचे।

X. बाईबल की सच्चाई के दृश्य का सामना करना

डॉ कलिनटन आर्नल्ड, जो की नए नियम के विद्वान हैं, उन का औपचारिक वार्तालाप (केम्ब्रीज विश्व विद्यालय, १९८६) में उन्होंने पौलुस के इफीसियों में शैतानी शक्ति के उस के व्यवहार की उन्होंने सुक्ष्म परीक्षा की, वे पौलुस के जो आदेश हैं उन आत्मिक टकराव और विश्वासी की सच्चाई की लड़ाई, शैतान से जो इफीसियों ६:१०-१८ में दीया गया है।

विश्वासी का विरोधी है "शैतान" (व११) अनेक "शक्तियाँ" (व१२) और 'उस दुष्ट' (व१६) विश्वासी को आत्मिक शक्ति की जरूरत है ताकी वह उस शैतान को दूर कर सके, न सिर्फ उस के अलौकिक स्वभाव और ताकत के कारण, पर क्योंकि वह कई "कपटी छल" का इस्तेमाल करता है। इन शब्दों का प्रयोग बुरे मतलब से इस्तेमाल किया है और उस के साथ कई काल्पनिक आक्रमण भी कई बार दोहराए गए हैं जिनमें अलेखनीय मित्रता है। यह इस बात को जोड़ लेगा की शैतान, विश्वासीयों को लालच देता है की वे बुरे काम करें और यह इस बात के लिए भी हो सकता है की इंजील के फैलाने और मसीह के कार्यों में रुकावट लाए।

६:१६ में, शैतानी आक्रमण एक फर्क तौर से बताया गया है, जहाँ झगड़े में अगुवा करने वाला पदवी पाता है "उस दुष्ट के" और "जलते हुए तीर" दागता है, संतो पर। यह अंदरूनी बुराई के लालच से कुछ ज्यादा है और यह वहाँ तक पहुँचता है जहाँ उस शैतान के हर आक्रमण और बुराई है।

"शैतान" एक और जगह बताया गया है इफीसियों २७ में, जहाँ वह तैयार खड़ा है आप के जीवन पर कब्जा करने के लिए, जीसे आप पाप कर के उसे सोंप देते हैं। सीधा उद्धारण कानून न पाने वाले क्रोध से है (व-२६), परन्तु यह जरूरी नहीं है की आप इसे केवल क्रोध पर केंद्रित करें। झूठ बोलना (व२५) चोरी करना (व २८) और किसी भी प्रकार का व्यवहार जो पुराने मनुष्यत्व" (व२२) से तालुक रखता है, इसे लेखक शैतान को सोंपने की सीमा और पवित्र आत्मा का शोख (व३०) बताता है।

लेखक यह भी कहता है की शैतान विरोधी है: कई तरह की आत्मिक "शक्तियाँ" विश्वासीयों के विरुद्ध में खड़ी हैं (६:१२)

नया नियम यह भी सिखाता है की शैतान और उस की सेना मसीही के सच में स्पर्शनीय दुष्मन है। वह यह भी सिखाती है की हम परमेश्वर के आधीन रहें

(याकूब ४:७-८), उस की आत्मा से भरे रहें (इफी ५:१८) और पाप से मुख मोड़ लें ताकी हम शैतान के प्रभाव में या कठोरता में न आएँ (इफी ४:२६-२७, ६:१०-१८)।

XI. शैतान का बाईबली दृष्य

(राज्य और शक्ति नामक पुस्तक जो डॉ गैरी एस.ग्रेग और केविन एन.स्प्रिंगर ने लिखी है, से लिया गया (टीगल १९९३) पी पी ४१३-४१५)

कुछ प्रचारकों को यह विश्वास करना मुश्किल होता है की शैतानों के कुछ निश्चित कार्य है और ऐसी बातों पर वे ध्यान नहीं देते हैं।

वे शैतानिता और टूना टोटके की बातों पर से फिसल जाते हैं एक फर्क तरीके से वे शैतान को दर्शाते हैं जैसे शैतान का बंधी, डर, दर्द और शारीरिक बिमारीयाँ भी जैसे खुजली.....। परन्तु यह आत्मिकता की लड़ाई को तुच्छ और सस्ता बना देता है। यह हमारी आस्मानी राजाओं से जो लड़ाई की गंभीरता है, उसे बेकार बान देता है।

वागनर ने तो शिक्षालय में एक सभा का ही आयोजन कर लिया था, जिस में उन्होंने ने मसीही अगुओं को एकत्रित किया की वे विभिन्न शैतानों को बाँध सकें (जिन में बैघर करने वाले शैतान, बिमारी का शैतान, और बर्मुदा तीकोन का शैतान भी शामिल है।)

यह सब विचार इस बात को बताने है की यह जान कारी की कभी के कारण है की पवित्र शास्त्र बुरी आत्माओंके बारे में क्या कहता है। हम यह भी पूछ सकते हैं की लूका १३:११ में जा उस औरत की अवस्था भी क्या उसे "बिमारी की आत्मा" कह सकते हैं या वह भी 'मामूली' और बेकार था? परन्तु पवित्रशास्त्र यह बनाता है की शैतानों के कुछ निश्चित कार्य है जो उन्हें दिये गये हैं:

। तिम १:७....." डर की आत्मा"

। तिम ४:१....."धोखे की आत्मा"

। यूह ४:६....."गलती की आत्मा"

रोमि ११:८....."व्यामोह की आत्मा"

रोमि ८:१५....."दास्तव के भय की आत्मा"

प्रेरित १६:१६....."भावी कहने की आत्मा"

लूका १३:११....."बिमारी की आत्मा"

लूका ११:१४....."गूँगी दुष्टात्मा"

मरकुस ९:१७,२५....."गूँगी और बहीरी आत्मा"

मत्ती १२:२२....."गूँगे और अंधेपन का कारण शैतान"

मत्ती ९:३३....."गूँगेपन का कारण शैतान"

जकर १३:८....."अशुद्धता की आत्मा, झूठ बोलने वाली आत्मा जो झूठी गवाही देती है। "

होश ४:१२....."वैश्यवृत्ती की आत्मा" जो इस्राएलीयों को भटकाती है; यह मूर्ती से संबंध रखती है (४:१२,१७) और वैश्यवृत्ती और व्यभीचार की ओर ले जाती है।"

अय्यूब ४:१५....."वह आत्मा जो एलीपज, अय्यूब ४:१२-१७ में उत्तेजित किया, सामना करता है और जो एलीपज के उपदेश को जो वह अय्यूब को देता है, जो अय्यूब के मुताबिक झूठी आत्मा थी (४२:७-८)।"

१ राजा २२:२२ (२ इती १८:२१)....."घोखे की आत्मा"। एक कार्मीक बुरी आत्मा जो भविष्यवम्ताओं को झूठ बालने के लिए उत्तेजित करती है (१ रेजा २२:२१-२३).

डेड सी स्क्रोलों और कई अन्य पूर्वी यहूदी और मसीही संदेहजनक साहित्यों में बुरी आत्माओं के खास बुराईयों के संकेत है। प्राध्यापक ऐडुआर्ड स्वीज़र ने कुछ संदर्भ दिये है "लालासा की आत्मा, व्यभीचार की आत्मा और गुस्से की आत्मा के। प्राध्यापक फोरस्टर आगे जोड़ते है अंधेपन की आत्मा बिमारी की आत्मा "बहकाने वाली आत्मा" इन के साथ "टूना टोटका", "लड़ाई", "कलहा" और "खून खराबा की आत्माएँ" भी हैं।

नए नियम में शैतानों का विचार, सामान्य तौर से, उन विचारों से मिलते जुलते हैं, जो संदेहजनक और झूठे शीलालेख साहित्य, डेड सी स्क्रोल, और पूर्वी तालमुड के तहदार जट्टानों की परत से पाए गए लेखों से लिए गए हैं। यह सामान्य तौर से मान जाता है की शैतान बुराई का दूत है। उन्हें शैतान के प्रचारक मान लिया गया है।

परमेश्वर की चंगाई कि शक्ति को मुक्त करने के लिए आभ्यासिक क्रम और सद्धान्त.

परमेश्वर की चंगाई के आभीषेक के ५ तरीके

मूल कथन

- १) यीशु पर केंद्रित हों, बाकी सब भूल जाईए, उस की आराधना करीए।
- २) पवित्र आत्मा की ताकत को मुक्त होने के लिए कहीए, उसे देखीए, और उस के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करीए।
- ३) उस तरह की प्रार्थना करीये जो आप की आत्मा करने को कहती है।
- ४) नाप की डंडी (अपनी आत्मा के तेल को नापीए) और रुकावटों को निकालीए।
- ५) अपने मस्तिष्क में, उस व्यक्ति को जो चंगाई पा चुका है, उसको चित्रांकित करीए, और परमेश्वर को उस के लिए धन्यवाद करीए।

विस्तृत कथन

- १) यीशु को परमेश्वर की रौशनी में रूपान्तरित होते देखिए(मत्ती १७:१-८) स्वयं को भूल जाईए, और अपनी आत्मा में उसकी आराधना कीजिए (बाई बुनियाद खण्ड III-IV)
- २) मांगीये और देखीए, उस व्यक्ति पर और उस के अंदर, यीशु की चंगाई की रौशनी और ताकत किस तरह विस्तीर्ण होती है । उसे दुर्बलता पर केंद्रित होते देखीए, और परमेश्वर को धन्यवाद दीजिए की चंगाई का राजतिलक मुक्त हो रहा है और चंगाई मिल रही है। (बाई बुनियाद खण्ड III,VI-VII)
- ३) उस तरह की प्रार्थना करीये, जो आत्मा आप का नेतृत्व करती कि आप अनुरोध करें, आज्ञा या आधीकारिक घोषणा। यदि आत्मा द्वारा, आज्ञा की

प्रार्थना दर्शित हो, तो पहले आज्ञा दीजीए दर्द को की वह यीशु के नाम में दूर हो, फिर अंदरूनी बीमारी को आज्ञा दीजीए की वह दूर हो(देखिये चंगाई की प्रार्थना का संक्षिप्त वर्णन)

- ४) उस व्यक्ति से पूछीए की उसे कैसा लग रहा है(पहले से अच्छा, उसी तरह या और खराब) और जैसे जैसे आप का नेतृत्व परमेश्वर करते हैं आप अंदर की रुकावटों को और शैतानी प्रभावों को निकालीये।(देखिए चंगाई की प्रार्थना का संक्षिप्त वर्णन और बाई बुनियाद खण्ड IX-XI).
- ५) अपने मस्तीशक में उस व्यक्ती की जो चंगाई पा चुका है, एक विस्तारपूर्वक विश्वास का चित्र बनाईए और कहीए, "धन्यवाद है, परमेश्वर, की वही तरीके से यह होएंगा, क्योंकि आपकी ताकत इस व्यक्ति को चंगा कर रही है।"(बाई बुनि.III,V)

अंश १ : हर दिन अपनी प्रार्थना में परमेश्वर की अपस्थिनी को देखें और अपने आपको अभिषिक्त होते देखो। परमेश्वर से कहीए की इस अभीषेक को आपके जिस्म के उस भाग पर ले जाए जिस को चंगाई पानी है, अभीषेक को उस जगह पर जाते हुए देखीए। परमेश्वर की उपस्थिती को महसूस करना सीखीए जब तक आप उस अभीषेक को शरिर के उस हिस्से तक इच्छापूर्वक ले जा सको, जिसे अभिषिक्त होना है। (१ कुरि १४:३२)

अंश २: जब चंगाई प्रर्थना कर रहे हो और परमेश्वर पर ध्यान लगाए हुए हो, उस से कहीए की वह आप के हाथों को अभिषिक्त करे, उसे होता देखीए, और उसे दर्द में, बिमारी मे या रोग में बहते हुए देखीए।

अंश ३: अभीषेक को पढीए (परमेश्वर से कहीए की वह आप को प्रभेद दे की आप पहचान सकें की अभीषेक मिल रहा है या रुक गया है) और परमेश्वर से यह पूछीए की अगला कार्य अगर होन है, तो वह क्या होगा।

अंश ४: सरवदा परमेश्वर का धन्यवाद दें, ताकी वह आप के विश्वास को और खोले ताकी आप परमेश्वर से और पा सकें।

हम विश्वास करते हैं की लोग चंगाई पाते हैं, क्योंकि,

१. एक विश्वास की एक दिव्या वाचा, मसीह और उस की सलीब के द्वारा मनुष्यों के बीच में रहती है, (मरकुस १६:१६-१८) मती १०:७-८, लूक ९:१-२, मती २८:१९-२०)
२. वाचा के द्वारा (निर्ग १५:२६, याकूब ५:१६)। गैर मीसीही चंगाई पाते हैं उस वाचा के प्रमाण के द्वारा जो परमेश्वर अपने विश्वासीयों से करता है -- नए नियम मे प्रचार की शक्ति का कार्य। मसीही दिव्य सेहत से चलते हैं जब वे वाचा के न्यायों को मानते हैं। एक मसीहे के लिए, यदी वह वाचा के न्यायों को तोड़ता है या अपने जीवन में पाप करता है, तो वह बिमार होता है। यह चाद रखीए की चंगाई की वाचा में कुछ शर्तें है (निर्ग १५:२६; याकूब ५:१६ "एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लों; और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगा हो जाओ") इस मे हमें पवित्र आत्मा की अवश्यता पड़ेगी की वह हमें बता सके की यह नियमभंग क्या है और इसे कैसे ठीक किया जाए। हमें परमेश्वर से पूछना है, किन आवश्यकतओं के द्वारा उस व्यक्ति को चंगाई मिल सकती है?"

उदहारण के लिए, उन्हें शैतान से छूटकारे की अवश्यता है या पापों से पश्चताप, यीशु शरीर के खराब भाग को चंगा करना। अक्सर यहसारी चीजे एक साथ बहती हैं जब हम चंगाई के लिए प्रार्थना करते हैं, और सही समय पर सही कदम से परमेश्वर की चंगाई का बहाव शुरू होता है ताकी उस व्यक्ति के जीवन मे प्रवेश करे। इस कारण हमें परमेश्वर की विशेष इच्छा को दूँटना है की हर व्याक्ति को किस तरह चंगा करे और हर एक व्यक्तिगत किस्से में, आत्मा की इच्छो को मानना है।

क्षमताशाली यंत्र कला से, वाचा मे दरार की चंगाई

उस बिमार व्यक्ति से कहीए की वह अपने मन की आँखों से देखे की, यीशु चंगाई की शक्ति और ज्योती डाल रहा है और वे यीशु से पूछें की क्या चंगाई के अभिषेक के बहाव मे उन तक पहुँचने में कुछ रुकावट है। उन से कहीए की वे स्वेच्छानुसार विचारो और चित्रों पर ध्यान लगाएँ और देखे की उन की ओर क्या लौट आता है। यदी जवाबे हाँ है और यीशु उन्हें रुकावट को दिखाता है तो, उन्हें यीशु से पूछना है की वे क्या करें की उस रुकावट को दूर कर सकें। उन से वह

करने को कहीए (स्विकार करना, पश्चताप करना, वगैराह) फिर उन से कहीए की वे यीशु से पूछें की क्या कुछ और चीजें हैं जो वाचा में रुकावट बन रही है। उपर्युक्त तरीकों को तब तक दोहराईए जब एक परमेश्वर यह न कह दे की वाचा में रुकावट डालने वाली और कोई चीज़ नहीं है। फिर अगले क्रम में जाईए।

बिमारी को खोजने और जड़ से निकालने के लिए क्षमतशील यंत्र कला

बिमार व्यक्ति से कहीए की वह अपना ध्यान यीशु पर लगाए और उस से पूछे की इस बिमारी की जड़ क्या है। उन को निर्देश दीजीए की वे विचारों और चित्रों के बहाव पर ध्यान लगें और जो वो पा रहे हैं उस के बारे में बताएं। फिर इस जड़ की वजाह को निकालने के लिए आवश्यक प्रार्थना कीजीए, दूसरी प्रार्थनाओं के साथ जो पवित्र आत्मा आप को करने के लिए कहती है।

उदहारण के लिए मैं और मेरी पत्नी एक विद्यार्थी प्रार्थना के अगुवा जिस का नाम फ्रेड है, प्रार्थना कर रहे थे। फ्रेड के बायीं कुल्हा में एक दर्दनाक फोड़ा बढ़ रहा था। पहले मैंने फ्रेड से कहा की वह यीशु का चित्र बनाए की वह चंगाई की ज्योती फैला रहा है और यीशु से पूछें की क्या कोई रुकावट इस अभीषेक को रोक रहा था। फ्रेड ने कड़वाहट और स्वयं दया को स्वीकार किया और कुछ लोगों को क्षमा किया जिन्हें यीशु उस के दिमाग में ला रहा था। फिर मैंने उस से कहा की वह यीशु से उसकी बिमारी की जड़ की वजाह पूछे। यीशु ने उसे बताया की उस ने अपने आप को शाप दिया, स्वयं को समालोचन किया था, जब प्रचार के बाद उतने पापों की मुक्ती के परिणाम नहीं मिले जितनी की उम्मीद थी और प्रार्थना करी थी। मैंने उसे समझाया की अपने आप को समालोचन करने का मतलब है की अपने आप को शाप देना। उस ने स्वयं को समालोचन करने की शक्ति को तोड़ा। फिर मैंने उस के कुल्हे पर उस के हाथ के ऊपर अपना हाथ रखा और हमने पवित्र आत्मा से कहा की वह अपना चंगाई का अभीषेक को और यीशु की चमक को उस के कुल्हे पर छोड़े। मैंने अभीषेक को अपने हाथों पर अनुभव किया जो कुल्हे में प्रवेश कर रहा था और परमेश्वर का धन्यवाद दिया की अभीषेक अंदर जा रहा था। मैंने उस फोड़े को आदेश दिया की वह उसे छोड़ दे। फिर २ मिनट की प्रार्थना के बाद, मैंने फ्रेड से पूछा की क्या उसे कोई फर्क पता चला। उस ने कहा "नहीं"।

फिर मैंने उस से पूछा की क्या मैं अपना हाथ उस के कुल्हे पर रख सकता हूँ, जहाँ वह फोड़ा था। फिर मैंने उसी तरह प्रार्थना की, परमेश्वर को उस अभीषेक के लिए धन्यवाद देते हुए, उस फोड़े को डाँटते हुए आदेश दिया की वह टूट कर छोड़ दे और दर्द को भी यीशु के नाम में छोड़ देने के लिए कहा। इस समय मैंने

शक्ति का धड़ाका अनुभव किया (सनसनाहट और गर्मी को बढ़ते देखा) जो उस के कुल्हे तक जा पहुँचा। तब प्रेड़ ने कहा की दर्द ने उसे छोड़ दिया और अनुभव किया की फोड़ा छोटा हो गया है। हम प्रार्थना करते रहे और उस के कुल्हे को अभीषेक में भीगते रहे। यकीनन, मेरे हाथ का, प्रेड़ के कुल्हे से सीधे सम्पर्क ने, यीशु की चंगाई के अभीषेक को अधिक तीव्रता से छोड़ा।

चंगाई के अभीषेक को मुक्त करने के अभ्यासिक सिद्धान्त

क्षमताशाली चंगाई प्रार्थना के तत्व है, देखना और यीशु के चलने के साथ बहना और परमेश्वर की ताकत का अनुभव करना। हम देखने और सुनने के द्वारा यीशु की चाल को अनुभव करते हैं। (यूहन्ना १४:१६-१९; इब्रा १२:२; यूहन्ना १०:२७-२८) जैसा की उस ने अपने पिता के साथ किया (यूहन्ना ५:१९,२०,३०; यूहन्ना १५:५)। परमेश्वर की चंगाई की शक्ति का बहाव जो आत्मिक दुनिया में ताकत का अनुभव करते हैं। हम ताकत को ज्योती के रूप में देखते हैं। ताकत को हम कभी गर्मी सा अनुभव करते हैं और कभी झनझनाहट सा।

गर्मी की स्वाभाविक क्षेत्र में, ज्योती, गर्मी और झनझनाहट, बिजली के प्रत्यक्ष रूप हैं और क्योंकि हम दैवी बिजली की शक्ति से वास्ता रख रहे हैं, दर्शन में देखना, यीशु से ज्योती की चमक का निकलना और शरीर में प्रवेश करना अकसर यह झनझनाहट और गर्मी का अनुभव करवाता है, और परमेश्वर की चंगाई की शक्ति से सचेत हो जाता है। आप परमेश्वर की चंगाई की ताकत को दूबल शरीर में ज्योती के रूप में प्रवेश करते हुए देखने का अभ्यास कर सकते हैं। क्योंकि एक चित्र हजार शब्दों के बराबर है, परमेश्वर की चंगाई की ताकत (ज्योती) शरीर में प्रवेश करते हुए का चित्र, एक हजार शब्दों के बराबर है जो यह कहना चाहता है की परमेश्वर की चंगाई की ताकत शरीर में प्रवेश कर रही है। बाइबल यह सिखाती है की बड़ा हुआ विश्वास (उपत्ती १५:६) एक सीधा नतीजा है एक दैवी चित्र को देखने का (उपत्ती १५:५)। मानसशास्त्र जानने वाले भी यह मानते हैं की एक चित्र, शब्दों के निसबत, लगभग ७ बार प्रभावित होता है (८३% हमारा सीखने का अनुभव देखने से आता है और ११% सुनने से)। तो हम ताकत और तीव्रता को बढ़ाते हैं परमेश्वर की ताकत को देखने से की परमेश्वर की चंगाई की ज्योती सिंहासन के कमरे से चमकती हुई या यीशु से, या अपनी आत्मा से भी जो यीशु से जुड़े हुए हैं (१ कुरि ६:२०), हमें परमेश्वर की चंगाई की ताकत को देखते हुए आराम अनुभव करना है और इन सब तरीकों से अभीषेक का बहाव अनुभव करना है।

जब आप प्रार्थना करें, आप चंगाई के आदेश देंगे जैसे आप को आत्मा राह दिखायेगा, तो आत्मिक दुनिया की आत्मिक सच्चाईयों को देखीए और शरीर में अनुभव करीए, गर्मी, झनझनाहट या बिजली को जो परमेश्वर की चंगाई के कार्यों के तत्व है। कई बार कई कारणों से आप न तो गर्मी, न झनझनाहट, न बिजली का अनुभव करेंगे परन्तु देखते रहिए परमेश्वर की चंगाई की ज्योती और शक्ति को उस व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करते हुए क्योंकि वह शरीर को चंगा करने का कार्य करता रहेगा। सब से महत्वपूर्ण काम है की आप अपना ध्यान यीशु पर रखें, जो की सब चंगाई का केंद्र है। आराम से इन सब को खोजीए और अनुभव करीए। इसे एक विधि न बनाएं, परन्तु इसे मन की आँखों से देखो और देखो की यीशु उन के साथ उपस्थित है, चंगाई की ताकत और ज्योती से चमकते हुए। पवित्र आत्मा जब आप को प्रार्थना में ले चलता है तो आप देखना, सुनना और स्पर्श करना जारी रखीए।

इन को करने का अभ्यास करीए

देखीए की यीशु आप के साथ उपस्थित है और ज्योती उसमें से चमकते हुए निकलती और आप पर बहती है। अपनी सचेतता यीशु पर रखीए, जैसे आप उस की चंगाई की ज्योती को अपने अंदर प्रवेश करते देखते हैं, उस का चित्र अपने अंदर बना लीजीए और अपना मानसिक ध्यान उस पर केंद्रित करें जब आप निम्न अनुभव करें। उस की चंगाई की ताकत और ज्योती का बड़ा भाग दुर्बलता पर केंद्रित करें और वहाँ कुछ समय तक रखें - एक दैवी प्रकाश व गर्मी की चिकित्सा के रूप में। हो सकता है आप इस ज्योती के परिणाम स्वरूप उस जगह पर गर्मी या झनझनाहट अनुभव करें। इन आत्मिक सच्चाईयों को होता देख, चंगाई की तीव्रता बढ़ जानी चाहिए।

जब आप इस अभीषेक को अनुभव करें तो अपनी दुर्बलता (जैसे कैंसर) से यह कहना मत भूलीए की वह आप के शरीर या जिस व्यक्ति के लिए प्रार्थना की जा रही है उस के शरीर को छोड़ कर जाए।

उदाहरण के लिए जब आप यीशु की चंगाई की ज्योती को उस कैंसर पर केंद्रित होते देखें (खास कर के उस वक्त जब आप गर्मी और ज्योती या झनझनाहट को शरीर से अभीषेक होते देखें) तो उस कैंसर से कहीए, इस प्रकार से की वह कोई घुस पैठी हो (वह अक्सर शैतान होता है)। या तो खामोशी से या शब्दों में इस तरह से कहीए - "कैंसर यीशु की देह और खून की बात सुनो। मेरी देह को इसी वक्त छोड़ कर जाओ। उसके कोड़े के घावों के कारण मैंने चंगाई पाई है (यशायाह

५३:५, पतरस २:२४) इस कारण यहाँ पर तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है। छोड़ दो, इसी वक्त यीशु के नाम में छोड़ दो।"

परमेश्वर का धन्यवाद देना शुरू करें की "अब परमेश्वर की चंगाई की ताकत चलने लगी है और कैंसर को चंगा कर रही है। कुछ क्षणों तक एक चित्र बनाईए की यह सब हो रहा है (जैसे की ज्योती यीशु में से निकल रही है, उस क्षेत्र में प्रवेश कर रही है और उस दुर्बलता को कम कर रही है)। अपनी आँखों और अपने ध्यान को, यीशु पर और उस की ज्योती को आप के अन्दर प्रवेश करते हुए, केंद्रित कीजिए। यदी आप ध्यान यीशु पर से हटा कर अभीषेक पर और उस से उत्पन्न हुई गर्मी या झनझनाहट पर केंद्रित करेंगे तो चंगाई का अभीषेक कम हो जाएगा। अपनी आँखों को यीशु पर रखो। चंगाई यीशु से मिलती है। अपनी आँखें सोत्र पर रखीए।

फिर प्यार से अपने शरीर से वह कहीए जो आप चाहते हैं की वह करे (यीशु ने शरीर के भागों को बोल कर चंगाई दी जैसे: उदाहरण बैहरे कान मरकुस ७:३४; अंधी आँखें लूका १८:४२ में) उदाहरणके लिए शरीर तू अभी इसी वक्त यीशु के नाम में चंगा होजा। सामान्यता तुझ में वापस आ जाए। अच्छा अनुभव करो और यीशु के नाम में उस कार्य को करो जिस के लिए तुम बनाए गए थे। धन्यवाद हो परेश्वर। ऐसा ही हो। आमीन।"

अब शरीर के उस हिस्से का जो कैंसर से चंगाई पाया है उस का एक चित्र बना कर कुछ क्षणों तक रखीए और देखीए की वह हिस्सा काम कर पा रहा है या अभी नहीं (कैंसर के कारण)। प्रार्थना करीए: "मैं तेरा धन्यवाद देता हूँ प्रभु की इसी प्रकार से अब यह रहेगा क्योंकि यह तेरी इच्छा है।"

जब आप बिमारी या रोग को सम्बोधित करें तो अधिकार से करे, जैसे की आप किसी घुस पैठी से बात कर रहे हो और जैसे की यीशु की देह और खून ने आप को अधिकार दिया है की आप उस घुसपैठी को निकाल बाहर करें, आत्मा की ताकत से।

जब शरीर से बात करें तो चंगाई से प्यार से बात करें। शरीर से प्यार से बात करें, जब आप परमेश्वर के प्रेम से अपने शरीर को भरें। जितनी बारीकी से हो सके, अपने शरीर को प्यार से कहीए की वह उस तरह से काम करे। उदाहरण: "हृदय अब तुम आगे बढ़ो और चंगा महसूस करो। सामान्य बन जाओ और खून को

७९ धड़कन हर मिनट के हिसाब से खून को शरीर में भेजो। तुम बस आगे बढ़ो और यीशु के नाम में अभी इसी वक्त चंगाई पाओ। मैं तुम्हें पवित्र आत्मा की चंगाई की ताकत से अशीषित करता हूँ, यीशु की देह और खून के कारण 'धन्यवाद हो प्रभु आप की चंगाई की ताकत के लिए यीशु के नाम में। जैसा की लिखा है, वैसा ही होगा, आमीन।

दैवी अधिकार से, जो आप देख रहे हैं परमेश्वर की उपस्थिति में और उसे कहते हैं और आत्मा की ताकत से जो आप ज्योति के रूप में देखते हैं और अक्सर एक कंपकंपी सी गर्मी या झनझनाहट महसूस होती है, तो आप उस बिमारी और रोग की आत्मिक शक्ति से छुटकारा पा रहे हैं। परन्तु प्यार के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में और आत्मा की ताकत के द्वारा आप शरीर को ठीक कर रहे हैं। हर चीज़ को होते देखीए, जब आप बोलना शुरू करें।

चंगाई की प्रार्थना में नाटकीय उपलब्धी परमाणु हथियार संख्या एक (दुर्बलता की जड़ को सम्बोधित करना) अभ्यास कीजिए

चंगाई की विधि में, आप नाटकीय उपलब्धी का अनुभव करेंगे, जब परमेश्वर शब्दों की समझ से बताएगा की दुर्बलता की जड़ क्या है और जड़ से उखाड़ देगा, इन ज्ञान के शब्दों और जानकारी के शब्दों को पाने के कई तरीके हैं। एक एकदम आसान सा यह है की बिमार को कहीए की वह प्रार्थना करे और बोले "हे पवित्र आत्मा मेरे शरीर में इस बिमारी की जड़ को बता" (उन का शरीर, उनकी याददाश्त और पवित्र आत्मा जो उन के अंदर है, वह जानते हैं की बिमारी की जड़ क्या है।) फिर उन से कहीए की वे शान्त हो जाएँ और परमेश्वर की आवाज़ और दर्शन की ओर ध्यान लगाएं (यानी स्वैच्छिक विचार और स्वैच्छिक चित्र)। एक विचार या एक चित्र उनको प्राप्त होगा। उन्हें उन विचारों और चित्रों के बारे में बोलना है। तब उन के साथ सारे लोग प्रार्थना करेंगे। निम्न दी गयी सूची में से जो भी प्रार्थना ठीक लगे उसे करीए:

१. उस व्यक्ति को माफ करना जो परमेश्वर दिखाता है।
२. उस पाप का पश्चाताप करना जो परमेश्वर ध्यान में लाता है।
३. पीढ़ी दर पीढ़ी के पापों और श्रापों को तोड़ना।

४. अधर्मी आत्मिक संबंधों को छोड़ना।
५. उल्टे विचारों को बदलना।
६. अनंदरूणी वादों को त्यागना।
७. शब्दों के शापो को छोड़ना।
८. यीशु के दर्शन को मस्तिष्क में पाकर अंदरूणी चंगाई पाना।
९. शैतानों को निकाल बाहर करना।

तर्कशास्त्र: याकूब ५:१४-१८, में कई कार्य हैं जिन को पूरा करना है, ताकी तुम चंगाई पाओ": याकूब ५:१६, "इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ।" यह बहुत आवश्यक है की रूकावटें, जैसे की अस्वीकार किये गए पाप, को निकाल दिया जाए। वचन यह नहीं कहता की हम एक सूची बनाते जाए, परन्तु बिभिन्न सम्भावनाओं पर ध्यान दें जो आत्मा हमें दिखलाएगी यदि हम कई तरीकों पर ध्यान लगाएँ चंगाई पाने के लिए, तो खुलासे की कमी हो सकती है जो परमेश्वर चाहता है की किसी व्यक्ति को चंगाई देने से पहले करे। यह सच है की, आखिरकार, परमेश्वर चाहता है की हम चंगाई पाएँ और सेहतमद हो कर चलें फिरे। परन्तु परमेश्वर चाहता है की वह व्यक्ति को पूरी तरह से चंगा करे -शरीर, प्राण और आत्मा - ना सिर्फ शारिरिक देह। इस परिणाम तक पहुँचने के लिए कई क्रम होंगे और इन में से किसी एक को छोड़ देने का नतीजा निराशा और पराजय होगा।

परमाणु हथियार संख्या दो (एक के बजाए कई तरीकों से बताना)

अश्यास : जिस के लिए प्रार्थता हो रही है और जो प्रार्थना कर रहा है, दोनों को पवित्र आत्मा के उपहारों के प्रती शुल्ला होना होगा, खास तौर से ज्ञान के शब्दों, विद्या के शब्दों, आत्मों के प्रभेद, विश्वास, चंगाई और चमत्कार जो आप में स्वैच्छिक विचारों, स्वैच्छिक चित्रों और स्वौच्छिक

स्पर्श के द्वारा आते हैं। इन चित्रों को पाना है और उन पर कार्य करना है। दो या तीन प्रार्थना अंगुठों के साथ जो परमेश्वर की ओर खुले हैं, मिलकर, उन्हें उपर्युक्त कोई भी क्रम बता कर, माध्यम से जिस से रुकावट निकाला जा सकता है और वे जो पा रहे हैं, इन सब को बाँटने से दैवी दर्शन पाने का क्षेत्र सामान्य रूप से बड़े खुले मन से पा सकते हैं और बड़ी जल्दी दुर्बलता का चोगा फाड़ कर उस व्यक्ति की सेहत को वापस लौटाया जा सकता है।

तर्कशास्त्र: याकूब ५:१४-१८ भी समूह सेवा के बारे में कहता है (प्राचीनों) ताकी जो एक को पता न चले तो दूसरे को पता चल जाए। इस क्रम को करने में कई दिन या हफ्ते नहीं लगते या घंटे भी नहीं। परन्तु हमारी पारम्परिक 'चंगाई की धारा' हम पर यह बोज डालती है की यह जल्दी हो, ताकी हम दूसरी ओर मुड़ सकें। चंगाई की धारा में कुछ पवित्रता नहीं है। ४०वे और ५०वे दशक से पहले इन के बारे में सुना भी नहीं था और यह उस युग के प्रचारकों का एक तत्व था। और उन में से भी हर किसी ने इस का प्रयोग नहीं किया। चंगाई के कमरों का इस्तेमाल करना और २-५ व्यक्तियों का चंगाई का समूह बनाना ज्यादा फायदेमन्द होता है, क्योंकि यह ज्यादा आराम देह है और धीमी गती से चलता है, जिस के कारण हर क्षेत्र पर पूरा ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। अकसर चंगाई के कमरे में उस व्यक्ति को करीबन एक घण्टे के अवकाश में उपदेश दिया जाता है जिस से चंगाई के अभीषेक के सिद्धान्तों को प्राप्त करने में अच्छा समय मिल जाता है। जैसे जैसे किसी को अनुभव होते जाता है, वैसे वैसे वह चंगाई के अभीषेक को जल्दी प्राप्त कर लेता है।

परमाणु हथियार संख्या तीन (अभीषेक को, कईयों के द्वारा छोड़ना, बजाये एक के।)

अभ्यास: आप बिमार व्यक्ति को आलौकिक गर्मी की चिकित्सा इस तरह से दे सकते हैं। २-५ लोगों को कहिए की वे अपने हाथ (दोने हाथ - जिस से एक बिजली का स्रोत पूरा हो जाए) उस बिमार व्यक्ति पर १०-२० मिनट तक रखिए ताकी परमेश्वर की शक्ति उस बिमार व्यक्ति तक पहुँचे। हर किसी ने परमेश्वर से यह पूछना है की वह अपना हाथ कहाँ रखें सामान्य रूप से दुर्बलात के ऊपर और फिर उस दुर्बलता के ठीक दूसरी तरफ। उदहारण के लिए, अगर मैं (मार्क) प्रार्थना कर रहा था कमजोर हृदय के लिए, मैं

अपना दाहिना हाथ, दिल पर रखूँगा और बायाँ हाथ ऊपरी पीठ पर, और मैं महसूस करूँगा की अलौकिक स्रोत मेरे दाहिने हाथसे होकर उस शरीर में प्रवेश करता है और फिर मेरे बाये हाथ के द्वारा वापस आ जाता है। यदि मैं किसी औरत के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ तो मैं उस से कहूँगा की पहले वह अपना हाथ अपने दिल पर रखे और फिर मैं अपना हाथ उस के हाथ पर रखूँगा इस तरह से चंगाई का क्रम जल्द हो जाता है। जब भी मैंने समूह के साथ २० मिनट हाथ रख कर चंगाई का क्रम किया, हम ने लाजवाब नतीजे देखे, दोनों में जिस के लिए प्रार्थना हो रही है और जो लोग प्रार्थना कर रहे हैं।

तर्कशास्त्र: यीशु ने भी अपने चलों को दो दो कर के प्रचार के लिए भेजा (लुका १०:१)। दो या तीन प्रार्थना अगुवों का बिमार व्यक्ति पर हाथ रख कर प्रार्थना करने से यह लाभ होता है की, मिलकर वे परमेश्वर की ताकत पाने का बड़ा क्षेत्र बन जाते हैं जिस से वह उस बिमार व्यक्ति के अंदर प्रवेश करता है। वे चंगाई की शक्ति के प्रवेश को बढ़ा सकते हैं और यीशु मसीह का एक खास वादा है की जहाँ दो या तीन मेरे नाम से एकत्रित होते हैं, वहाँ मैं उन के बीच में होता हूँ (मत्ती १८:२०)।

परमाणु हथियार संख्या चार (यीशु को सुनना जो चंगाई की ज्योति फैला रहा है)

अभ्यास: जब आप यीशु को देखते हैं, देखीये की वह अपनी चंगाई की ताकत और ज्योती उस व्यक्ति पर उडेल रहा है, आप उस से पूछ सकते हैं की वह आप को बताए की असल में चंगाई किस चीज़ की होनी है और वह उसे कैसे चंगा करना चाहता है। बहते हुए विचारों व चित्रों पर ध्यान दीजिए और उस तरह कार्य करीए जैसा की वह आप को करने के लिए कह रहा है।

तर्कशास्त्र : जो सिद्धान्त आप इस्तेमाल कर रहे हैं उस के द्वारा आप आत्मिक दुनिया में, दोनो देख व सुन रहे हैं। देखने और सुनने से विश्वास बढ़ता है और बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं। अब्राहम, जो की विश्वास का पिता है, परमेश्वर के आदेशों को सुना (उत्पत्ती १२:१,२) और उस के लिए जो परमेश्वर का दर्शन था उसे देखा (उत्पत्ती १५:५) और नतीजा विश्वास था (उत्पत्ती १५:६)। बड़ा विश्वास बड़ी चीज़ों को पूरा कराता है।

आखिर में: यदी कोई चंगाई नहीं पाता है तो उस का कारण इस पूरे क्रम को ठीक से पूरा न करना हो सकता है, खास तौर से जब विश्वासीयों के लिए प्रार्थना कर रहे हों, तब। परमेश्वर पापी को इस तरह फँसा हुआ देखता है की वे अपने आप को चंगाई के लिए पूर्ण रूप से नहीं तैयार कर पाते हैं, तो वह उन को किसी भी तरीके से चंगाई देता है उन्हें अपना प्यार व ताकत बताने के लिए। दूसरी ओर परमेश्वर कभी कबार हर किसी को जो उस घर में हैं, चाहे विश्वासी हो या नहीं, वह चंगा करता है, जब वह अपनी आलौकिक ताकत और महिमा में आता है। पक्के विश्वास के सिद्धांत हैं, परन्तु परमेश्वर फिर भी परमेश्वर है अनेक भिन्नता का, उस के पास अंगिनत बूद्धि है हर स्थिती की और पता है की उसे क्या करना चाहिए।

इस्तेमाल करने के अभ्यास

१. अपने शब्दों में, पवित्र शास्त्र की मदद से बताईए, क्यों परमेश्वर की शक्ति को ज्योती के रूप में देखा जा सकता है और आग की तरह महसूस होता है और शक्ति (झनझनाहट) क्यों लगती है। देखने और स्पर्श करने की बहुमूल्यता, केवल जानकारी बिना देखे और स्पर्श करने के विरुद्ध में कितनी है?
२. परमेश्वर की शक्ति को देखने का अभ्यास करो, जो उस में चमक रहा है और मसीह पर से तुम पर और उन सब पर जिन को आप उपदेश सुनाते हैं। पहली २०-३० बारों के अपने अनुभवों को लिखिए। इन का अभ्यास आप अपने प्रार्थना समय पर कर सकते हैं जब आप उस के करीब आते हैं और उस से कहीए की वह आप को इन वचनों पर ध्यान लगवाए। निर्गमन २४:१७, ४०:३८, यहैजकेल १:२६-२७, दानियल ७:९-१०, जकर्याह २:५, लूका ११:३४, प्रेरित १२:७, २ कुरि ३:१८, कुल १:२९, याकूब १:१७, प्रकाशित १:१२-१६। आप जो देखते हैं उसे लिखीए। इस को उस समय तक करते रहिए, जब ता आप इस में आराम न महसूस करें।
३. जब आप परमेश्वर को उस की चमकती महीमा, शक्ति की ज्योती में देखने का अभ्यास करते हैं, आप पवित्र आत्मा से कहीए की वह अपनी चंगाई की शक्ति आप के शरीर में प्रवेश करे, खास तौर से किसी दूर्बल क्षेत्र में।

परमेश्वर की ज्योती को उस क्षेत्र में घुस्ते देखीए। उस की ज्योती और शक्ति को उस जगाह पर थोड़ी देर रोकीए, ताकी दैवी गर्मी चिकित्साह मिल सके। ध्यान दीजीए की क्या आप कुछ गर्मी या झनझनाहट महसूस कर रहे हैं जब उस कीशक्ति आप में प्रवेश कर रही हो। जो हो रहा है उस को लिख लीजीए और किसी भी प्रकार की चंगाई को या दर्द की कमी जो बाद में अनुभव होती है उसे भी लिख लीजीए। इसे तब तक करते जाईए जब तक आप आराम का अनुभव न कर लो और इसे आसानी से और जल्दी से कर सको।

४. अभ्यास करते समय परमेश्वर से ज्ञान का शब्द, बुद्धि का शब्द और प्रर्थना में आत्मा की पहचान करवाने को कहीए चाहे चंगाई आप के लिए हो या किसी और के लिए। तब, विश्वास करीए की वह आप से बात करेगा, ध्यान लगाईए स्वैच्छिक विचारों, चित्रों और अनुभवों पर और जो आप पा रहे हैं उसे बाँटीए और उस पर कार्य करीए। जो हो रहा है उस को लिखीए। यदि कोई साक्षीयाँ हों की इन क्रमों के द्वारा कैसे रूकावटें दूर हुई और परमेश्वर की चंगाई की शक्ति मुक्त होती है, उसे लिखीए।
५. ५-१० प्रार्थना सभाएँ पूरी करीए जहाँ दो या तीन लोग बिमार व्यक्ति को चंगाई की प्रार्थना में भिगो दें, जब आप एक समय में १५-२० मिनट तक अपने हाथ उस पर रखें समूह का हर व्यक्ति अपना ध्यान परमेश्वर पर रखें और उस की चंगाई की शक्ति को उन के द्वारा बिमार व्यक्ति में जाते देखें। हर व्यक्ति को अपने आप को खुल्ला रखना है ताकी परमेश्वर का दैवी दर्शन पा सकें और रूकावटों को निकाल सकें और एक बड़े चंगाई के बहाव के लिए अपने दर्वाजों को खोल दें। इन चीजों को आपस में बाँटना है और प्रर्थना करना है और उन पर कार्य करना है। इन प्रार्थना के अनुभवों को लिखीए।
६. दैवी चंगाई के बारे में दैवी प्रेरणा पाईए निम्न दीये गये वचनों को जो पवित्र शास्त्र से लिए गए हैं, उन के सही अनुवाद कर लिख लीजीए और परमेश्वर से कहीए की उन के माध्यम से चंगाई के बारे में वह जो भी दिखाना चाहता है उसे दिखए। वह जो कहता है उसे लिख लीजीए। कमसे कम इन में से १० वचनों को याद कर लीजीए, हो सके तो २०-३०।

परमेश्वर के वचन को चिकित्सा के रूप में लीचीए, इन वचनों को बोल कर और इन वचनों को अपने ऊपर मान कर, एक नियमानुसार (नीतिवचन ४:२०-

२२)। इसे दिन में तीन बार करीए, यदी आप बिमार हों तो, और यदी ठीक हों तो दिन में एक बार ताकी आप सेहतमन्द रह सकें। २-३ वचनों को एक बार में कहीए। क्योंकि एक खुशनुमा मन, चिकित्सा के बराबर है, इन शब्दों को अपने आप पर खुशी से बोलीए (नीती १७:२२)। पवित्र आत्मा आप को अपने पाप स्वीकार करने में अगुवाई करे।

उत्पत्ति २०:१७, निर्गमन १५:२६, २इतिहास ७:१४, भजन संहिता १०३:२-३, १०७:२०, १४७:३, नीतिवचन ३:७-८, ४:२०-२२; १६:२४, यशायाह ५३:५; ५८:६,८; यिर्मयाह १७:१४; मलाकी ४:२; मत्ती ४:२३-२४; ८:७-८,१३; ८:१६; ९:२८-२९; ९:३५; १०:१; १०:८; १२:१५; १२:२२; १४:१४; १५:२८; १५:३०; १८:१८-२०; १९:२; २१:१४; २१:२२; मरकुस १:३४; ३:१०; ५:२९,३४; ६:१३; ९:२३; ११:२२-२५; १६:१७-१८; लूका १:३७; ४:४०; ५:१५; ५:१७; ६:१७-१९; ७:७,१०; ८:४३-४४; ९:१-२,६; ९:११; ९:४२; १०:९; १७:१५-१६; २२:१५-५१; प्रेरित ३:१६; ४:१०; ४:३०; ५:१४-१६; ८:७; ९:३४; १०:३८; २८:८-९; १कुरि १२:७,९; १२:२८; याकूब ५:१४-१६; १ पतरस २:२४; १ यूहन्ना ५:१४-१५; ३ यूहन्ना २; प्रकाशित २२:१-२।

७. निम्न दी गयी साक्षी की कार्य परची को पूर्ण रूप से भरीए जब आप ३० लोगों के लिए प्रार्थना कर चुके हों। नतीजों का सूचीपत्र बनाईए और परमेश्वर से पूछीए की वह आप पर क्या जाहिर करना चाहता है अपनी चंगाई की ताकत के बारे में और वे तरीके जिन से आप के द्वारा उस की तीवर्ता को बढ़ा सके। इन पूरे कीए गए प्रश्नों को और परमेश्वर ने जो आप को दर्शाया है उस के सारांश के साथ, डॉ गौरी ग्रेग को या डा. मार्क विर्कलर को भेजीए ताकी वे इस का सूचीपत्र बना कर इस पत्रिका के बड़े अनुवाद में छापें।

दैवी चंगाई का औज़ार का बक्सा (याकूब ५:१४-१८)

१. रुकावटों को हटाने के लिए, एक दूसरे के सामने अपने पापों को स्वीकार करो (याकूब ५:१४-१८): समूह का हर व्यक्ति (प्रार्थना करने वाले अगुवे और व्यक्ति जिस के लिए प्रार्थना हो रही है), अपने मन की आँखों को यीशु पर केंद्रित करें। अपनी आँखों को यीशु पर रखीए और उस से पूछीए की क्या कोई रुकावट है जो उस के चंगाई की शक्ति के बहाव को आप तक आने से

रोक रही है। उस के जवाब को पाने के लिए अपना ध्यान रहे की आप एक स्वस्थ जीवन चर्या व्यतीत कर रहे हैं, जिस में पौष्टिक आहार, व्यायाम, उपवास/ सफाई और तनाव रहित जीवन भी शामिल है। जो आप पा रहे हैं उस के अनुसार अपने पापों की क्षमा माँगीए। अपने पापों की क्षमा पल दर पल माँगना सीखीए ताकी आप परमेश्वर के सामने शुद्धता से खड़े रहें। यह समूह की नम्रता और पवित्रता परमेश्वर की ताकत को छोड़ती है।

२. चंगाई की बुनियाद, परमेश्वर की उपस्थिति में जाना है। डॉ.विर्कलर के एक साथी से परमेश्वर ने कहा "पहले तुम मेरी उपस्थिति का अभ्यास करो, तब हम बात करेंगे। मेरी उपस्थिति मेरे वचन से ज्यादा मुख्य है। चंगाई मेरी उपस्थिति से मिलती है।" अपनी आत्मा में मसीह की आराधना करते हुए मसीह-सचेत हो जाईए। यीशु को परमेश्वर की रौशनी में रूपान्तर होते देखीए (मत्ती १७:१-८)। माँगीए। देखीए और उस की चंगाई की शक्ति को छोड़ीए। जिसे ज्योती के रूप में देखा जा सकता है और गर्मी और झनझनाहट को महसूस किया जा सकता है। इस की उपस्थिति से उस की चंगाई की शक्ति छोड़ी जाती है।

३. **दुर्बलगी की जड़ को ढूँढीए और उस के कारण से व्यवहरा करीए:**

बिमर व्यक्ति से कहीए की वह प्रार्थना करे, "पवित्र आत्मा, कृप्या मुझे उस बिमारी का मूल कारण दिखाईए"। (उस का शरीर, उस की यादाश्त और पवित्र आत्मा जो उसे के अंदर है वह जानते हैं की बिमारी का मूल कारण क्या है)। फिर उसे आदेश दीजीए की वह अपने आप को शान्त करे और परमेश्वर की आवाज़ और दर्शन की ओर ध्यान लगाए (यानी स्वैच्छिक विचार और चित्र) और आप के साथ वह सब बातें जो उस तक पहुँचती हैं, उचित प्रार्थना करें।

४. **मानीए की चंगाई की प्रार्थना के तीन भाग हैं (दर्द दूर करना, शैतानों को निकाल बाहर करना, शरीर के अंगों को चंगा करना)**

दर्द से कहीए की वह हट जाए। यह आसान है, और विश्वास को मज़बूत करता है यदि वह व्यक्ति जिस के लिए प्रार्थना की जा रही है वह यह कहे की कुछ दर्द कम हुआ है और उस व्यक्ति से इस रुकावट को दूर करता है।

मज़बूती से आदेश दीजीए की दर्द के शैतान दूर हों। यह मानीए की हर स्थिती में शैतान है। उन स्थितीयों में जहाँ यीशु ने चंगाई दी थी वहाँ शैतान की उपस्थिती थी, जैसे की यदी मरकुस १:३९ का सारांश, मत्ती ४:२३ के सारांश के बीच कीया जाए।

मरकुस १:३९, "अतः वह सारे गलील में उनके आराधनालयों में जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा।"

मत्ती ४:२३, "जब वह नाव पर चढ़ा, तो उसके चेले उसके पीछे हो लिए।" दुर्बल शरीर के भागों से प्यार से बात करीए और खास तोर से उस दुर्बल भाग से जिसे ठीक करना है।

५. दैवी दर्शन को प्राप्त करीए जब आप यीशु को देखें और उस की चंगाई की शक्ति और ज्योति को उस व्यक्ति के अंदर जाते देखें तो उस से कहिए की वह आप को वह हिस्सा बताए जिसे चंगा करना है और वह किस तरह से उसे चंगा करना चाहता है। उस का जवाब स्वैच्छिक विचारों और चित्रों पर ध्यान लगा कर पाईए और वह जो आप को बता रहा है उस के अनुसार चलीए। उस प्रार्थना को अपनाईए जो पवित्र आत्मा आप को बताता है - निवेदन, आदेश, या घोषणा।
६. बड़े दैवी दर्शन के लीए समूह को तैयार कर लीजीए: दो या तिन प्रार्थना अगुवे जो परमेश्वर की ओर खुले हुए हैं और परमेश्वर ने उन्हें रुकावट को हटाने का रास्ता बताया है और वे जो भी वे पा रहे हैं, उसे समूह के साथ बाँट रहे हैं और जो फिर उस पर कार्य करते हैं, यह दैवी दर्शन की प्राप्ती का क्षेत्र बड़ा देगा और बहुत जल्दी दुर्बलता के चोगे को फाड़ कर, उस व्यक्ति की सेहत को वापस लौटाएगा।
७. शक्तिशालि प्रार्थनाएँ जो शैतान को दूर करती हैं: व्यक्ति जिस के लिए प्रार्थना की जा रही है और प्रार्थना करने वाले, बहाव की ओर ध्यान लगाए रखते हैं कार्य उसी प्रकार करते हैं जैसा उन्हें बताया जाता है। वे उन तरीकों से प्रार्थना करते हैं।

१. उस व्यक्ति को माफ करना जो परमेश्वर दिखाता है।
२. उस पाप का पश्चाताप करना जो परमेश्वर ध्यान में लाता है।
३. पीढ़ी दर पीढ़ी के पापों और श्रापों को तोड़ना।
४. अधर्मी आत्मिक संबंधों को छोड़ना।
५. उल्टे विचारों को बदलना।
६. अनंदरूणी वादों को त्यागना।
७. शब्दों के शापो को छोड़ना।
८. यीशु के दर्शन को मस्तिष्क में पाकर अंदरूणी चंगाई पाना।
९. शैतानों को निकाल बाहर करना।
८. तेल से अभिषेक कीजिए: उस तेल का इस्तेमाल कीजिए जिस पर प्रार्थन की गई हो, ताकी दैवी चंगाई की शक्ति प्रगट हो।
९. देखने से चंगाई की शक्ति का बहाव तीव्र होना: पूछीए और देखीए यीशु की दैवी चंगाई ज्योती और शक्ति जो चमकती हुई प्रवेश करती है उस व्यक्ति पर और उस के अन्दर। देखीए की वह उस दुर्बलता की ओर जाए और परमेश्वर का धन्यवाद दीजिए की अभीषेक छोड़ा जा रहा है और शरीर में प्रवेश कर रहा है।
१०. दैवी गर्माई चिकित्सा दीजिए: २-५ जन के समूह से कहीए की वे अपने दोनों हाथ (ताकी बिजली का स्रोत पूरा हो) उस बिमार व्यक्ति पर रखे १०-२० मिनट के लिए ताकी परमेश्वर की ज्योती/ ताकत उस में प्रवेश करे।
११. नतीजा बराबर से मिलता रहे: उस व्यक्ति से पूछीए की उसे कैसे लग रहा है (अच्छा, बैसा ही, और खराब) और जैसा आवश्यक हो उस तरहा करें।

१२. देखीए की वह पूरा हो: अपने मस्तिशक में उस व्यक्ति का विश्वास चित्र रखीए जो पूरी रीती से चंगाई पा चुक हो और कहीए: "धन्यवाद हो प्रभु। यही तरीके से यह होने वाला है क्योंकि तेरी शक्ति इस व्यक्ति को चंगा कर रही है।"

हाथों को खास तरीके से रखने के तरीके

चार्लस और फ्रांस हनटर निम्न दीए गए तरीके बताते हैं दूर्बलता को छूने के और परमेश्वर के चंगाई की ताकत और ज्योती को उस क्षेत्र में पाने के। यह ऐसे लगेगा जैसे यह दैवी ढाँचा को ठीक करना है, पीठ को सीधा करना, गर्दन और कुलहे को भी और नसों को सामान्य रूप से काम करने देना। इस तरह परमेश्वर की चंगाई तीव्रता से शरीर में प्रवेश करेगी।

गर्दन ठीक करना

इस का इस्तेमाल ऊपरी क्षेत्र की दूर्बलता को ठीक करने के लिए किया जा सकता है।

१. उस व्यक्ति के सामने खड़े हो जाईए और अपने हाथों को नम्रता से उस की गर्दन पर रखीए, आपकी ऊँगलीया पीछे रीढ़ की हड्डी के ऊपरी भाग पर हों, आप की हथेली गर्दन पर एक तरफ हो (धमनी पर) और आप का अंगठा जबड़े के जोड़ पर।
२. उस का चेहरा धीरे से पहले बायीं और फिर दाहिनी ओर मोड़ीए, फिर पीछे और आगे, और साथ साथ आदेश देते जाईए, माँस पेशीयों को, अस्थि बन्धक तन्तु, पूट्ठा और रीढ़ की हड्डी को की वे अपनी सही जगह पर लौट जाए।
३. परमेश्वर की चंगाई की शक्ति/ज्योती को देखीए की वह कैसे गर्दन और रीढ़ में जाती है और सारी हड्डीयों, माँस पेशीयों, अस्थि- बन्धक तन्तु और पुट्ठे को कैसे सही जगह पर लाती है।

वस्ति प्रदेश के ठीक करना

नीचे की दुर्बलताओं के लिए इस तरीके का प्रयोग करें।

१. कुल्हे की ऊपर की हड्डी पर अपना हाथ रखें और आदेश दें की वस्ति प्रदेश सही जगह पर लौट जाए और बाकी के सोर अंग भी अपनी जगह चले जाएं।
२. परमेश्वर की शक्ति/ज्योती को चंगा करते देखीए जब वह वस्ती प्रदेश के क्षेत्र में प्रवेश कर उसे ठीक करती है और हड्डीयों, माँस पेशीयों, पुट्टों और अंगों को वापस ठीक करती है।

टिप्पणी : यदि किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, तो कुछ नहीं होगा। कोई नुकसान भी नहीं होगा।

पूर्णरूप से चंगाई पाना: ८०% प्रार्थनाओं में इस का इस्तेमाल होता है।

१. पूर्णरूप से का मतलब है की उस में गर्दन, वस्ति प्रदेश, दोनों के साथ हाथ और पैर ना बढन भी शामिल हैं।
२. हाथों को बढ़ाने के लिए, उस व्यक्ति से कहिए की वह अपने दोनों हाथों को अपनी दोनो तरफ फैला कर सीधा रखे और फिर उन्हे इस तरह सामने की ओर झुकाए की दोनो हथेलीयाँ और ऊँगलीयाँ आपस में मिलें। देखीए की कौन सा हाथ लम्बा है, फिर दूसरे हाथ के लिए प्रार्थना करीए की वह लम्बा हो जाए और ऐसा करते में उस के दोनों हाथों को अपने हाथो पर रखीए (उस का बायाँ हाथ आप के दाहिने हाथ पर और उस का दाहिना हाथ आप के बायें हाथ पर)
३. पैरों को लम्बा करने के लिए, इस व्यक्ति को एक सीधी टेके वाली कुर्सी पर बैठाईए। उस के पैरों को सीधे सामने करीए। देखीए की कौन सा पैर लम्बा है, उस की ऐड़ीयों को अपनी हथेली पर रखीए और छोटे पैर के लिए प्रार्थना करीए की वह लम्बा हो जाए।
४. परमेश्वर की शक्ति/ ज्योती को उस के हाथों, कंधों, पैरों और कुल्हों मे जाते देखीए हर माँस पेशी और हड्डी, जोड़ और आस्थि बन्धक तन्तु को बापस अपनी जगह पर लौटते हुए देखीए।

५. आप वापस लौट कर गर्दन की चंगाई और वस्ती प्रदेश की चंगाई को हाथ और पैर की लम्बाई को पूरा कर के दोहराईए।

समूह अभ्यास प्रयोग

गर्दन के लिए

- * आप जितनी दूर हो सकता है अपनी गर्दन को दोनों तरफ धीरे से तीन (३) बार घुमाईए और फिर ऊपर नीचे तीन (३) बार करीए।
- * आपने सर के पीछे अपने दोनों हाथ रख लीजिए और अपनी रीढ़ की हड्डी पर ऊँगलियाँ उस वक्त तक फेरीए जब तक खोपड़ी के तले वे आराम नहीं पाती। यह वही जगह है जहाँ आप गर्दन की चंगाई पाने के लिए अपनी ऊँगलियाँ रखना चाहते हैं।
- * जो करना चाहते हैं वे खड़े हो जाएँ। दूसरे स्वयं सेवक जो खड़ा हुआ है उसके सामने खड़े हो जाएँ, और अपना हाथ उस पर नमी से रखीए गर्दन को चंगा करने के क्रम से।
- * हर व्यक्ति अपने आप को शान्त करे, परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करे, और पवित्र आत्मा की चंगाई की शक्ति को निमंत्रित करे की वह उपस्थित हो। परमेश्वर की ज्योती को देखीए की वह आप के हाथ को छोड़ कर गर्दन के क्षेत्र में प्रवेश करती है। जब आप इस शक्ति को देखते और महसूस करते हैं तो, धीरे से उन के गालों पर अपनी हथेली से दवाव डालीए।
- * स्वयं सेवक फिर नम्रता से और धीरे से अपने सर को एक तरफ से दूसरे तरफ तीन बार मोड़ीए, और फिर ऊपर नीचे तीन बार, यह करते में आप माँस पेशियों, अस्ती बन्धक तन्तु, पुट्ठों और रीढ़ की हड्डी से कहीए की वे सही स्थान पर लौट जाएँ और आप दोनों, परमेश्वर की शक्ति व ज्योती व गर्मी को देखीए की वह गर्दन, कंधों और सर में प्रवेश करती हैं।
- * अपने हाथों को उसी स्थिति में तब तक रखीए जब तक परमेश्वर की शक्ति/ज्योती/गर्मी बहना बंद न हो जाए।

वस्ति प्रदेश के लिए

- * किसी स्वयं सेवक के कुल्हे की हड्डी पर अपना हाथ रखीए (उस के सामने खड़े हो कर)।
- * दोनों को अपने आप को शान्त करना है, परमेश्वर पर ध्यान लगाईए, और पवित्र आत्मा की चंगाई की शक्ति को निमंत्रित करीए की वह उपस्थित हो। परमेश्वर की ज्योती को देखीए की वह आप के हाथों को छोड़ कर, हड्डी में अस्ति बन्धक तन्तु में, और अंगों में और निचले क्षेत्र में प्रवेश करती है।
- * आदेश दीजीए की वस्ति प्रदेश ठीक स्थिती पर आ जाए और बाकी सरे अंग भी अपनी जगहों पर आ जाएं।
- * आप दोनों ने परमेश्वर की चंगाई की शक्ति/ज्योति/गर्मी को वास्ति प्रदेश के पूरे क्षेत्र में प्रवेश करते देख है, वह कैसे हड्डीयो को, माँसपेशियों को, पूट्ठो और आंगों को उन की स्थिती पर पहुँचाती है।
- * अपने हाथों को कुल्हों पर तब तक रहने दें जब तक आप परमेश्वर की शक्ति का बहना बन्द न हो।

पूर्ण रूप से चंगाई के लिए

एक स्वयं सेवक की मदद से, हाथों और पैरों को लम्बा करीए, फिर गर्दन को, फिर वस्ति प्रदेश को चंगा करीए। फिर दोबारा लौट कर हाथों और पैरों को लम्बा करने का अभ्यास कीजीए। देखीए और स्पर्श करीए परमेश्वर की शक्ति/ज्योति/गर्मी को (हर प्रार्थना में) आपके शरीर में प्रवेश करते हुए।

दैवी चंगाई साक्षी कार्य पत्री

उपलब्ध है डब्ल्यू, सीडब्ल्यू जीमिनिस्ट्रीज़, ओ आर जी/ हीलिंग, कार्य पत्री।
भरे हुए फार्मा को भेजीए: हीलिंग @सी डब्ल्यू जी मिनिस्ट्रीज़, ओ आर जी।

रीपोर्ट.....द्वारा तैयार की गई।

ई मेल का पता छापीए.....

चंगाई पाने वाले का नाम.....

शहर/ प्रदेश.....

उसका ई.मेल पता.....

उस का फोन नं.....

दुर्बलता जिस के लिए प्रार्थना की गई.....

दिनांक.....

किन लोगों ने प्रार्थना की.....

.....
प्रार्थना में कितना समय बिताया.....

इस से पहले कितनी बार प्रार्थना कर चुके थे.....

दर्द में कमी.....%;

समय लिया गया.....;

दर्द में और कमी.....%;

समय लिया गया.....

दुर्बलता चंगा हुई.....%;

समय लिया गया.....

दुर्बलता और चंगा की गई.....%;

समय लिया गया.....

जाँचने के औज़ार उपयोग किये गए:

.....बार पापों को स्वीकारा

.....बार परमेश्वर के समक्ष गए

.....मूल कारण के दैवी दर्शन प्राप्त हुए

.....दर्द को दूर होने का आदेश दिया

.....शैतानों को दूर होने को कहा।

.....खास शरीर के भागों से बात कर उन्हें चंगा होने को कहा

.....बड़े दैवीदर्शन को पाने के लिए समूह बनाया।

.....तेल का इस्तेमाल

.....उन को माँफ़ किया जो मेरे मास्तिशक में आए
.....खानदानी पापों और शापों को तोड़ा
.....अधर्मी बंधनों को तोड़ा
.....उल्टे विश्वासों को बदला
.....अंदरूनी वादों को ना किया
.....शब्दों के शापों को तोड़ा
.....अंदरूनी चंगाई
.....पापों से मुक्ति
.....ज्योती को खास शरीर के भागों में प्रवेश होते देखा
.....गर्मी महसूस की
.....शक्ति/झन झना हट मेहसूस किया
.....२-५ व्यक्तियों ने १५ मिनट तक गर्मी की चिकित्सा दी
.....चंगाई पाने वाले व्यक्ति से लगातार जवाब मिलता रहा
.....मन की आँखों से चेगाई को पूरा होते देखा
..... चंगाई पूरा करने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद दें।

शैतानों के नाम जो निकाले गए:_____

लिखित सारांश: जो दैवी दर्शन प्रार्थना में पाया उस का सारांश लिखीए और उस पर कार्य करने का नतीजा। यदी दैवी दर्शन बिमार व्यक्ति ने पाया तो दैवी दर्शन के सामने उस का नाम लिखीए। चंगाई की सेवा के बारे में लिखीए और चिकित्साई जाँच ने उसे माना। चिकित्साई जाँच करवाने के लिए हमें वह दिन और समय और दूर्बलता सूचित कीजीए जिस वक्त चंगाई पाई। धन्यावाद।

चंगाई के उद्घाटन और साक्षीयाँ

गैरी, स्प्रिंग २००३ : मैंने जॉन विम्बलर और द वाईनयार्ड और फादर माईक फलिन और डॉ.चार्लस क्राफ्ट से यीशु को देखना और दूसरों की चंगाई के लिए प्रार्थना करना और रुकावटों के बारे में बताना (क्षमा न करना, खानदानी पाप, शैतान, परेशानी, अन्दरूनी वाद वगैराह) इस तरह मैंने सीखा की बिमारों को चंगाई कैसे मिलती है। १० साल तक यह हमारे लिए ऐसे ही काम करते रहा। मुझे, हालाँकी यह ऐसा लगता है जैसे यह मेरी भावना है की मै यीशु का चित्र बना रहा हूँ की यीशु वहाँ है, जब मैं बिमार के लिए प्रार्थना करता हूँ, वह अकसर ऐसी बातें बताता है जिन्हें मैं खुद न

जान पाता और मुझे पता चलता है की यह मेरी भावना नहीं परन्तु सच में वही है। मैं उस व्यक्ति के कंधे के ऊपर से उस का चेहरा देखात हूँ और फिर उस से पूछता हूँ। "परमेश्वर, इस व्यक्ति के लिए आप के मन में क्या है? क्या हो रहा है? आप किस तरह उसे चंगाई देना चाहते है?" और फिर मैं यीशु के चेहर को देखता हूँ और फिर उस की आवाज को अपने मन में सुनता हूँ। यह १०० % कार्य करता है जब मैं चंगाई की प्रार्थना इस तरह करता हूँ की बिमार व्यक्ति से उस विषय पर कार्य करने को कहता हूँ जो यीशु बताते हैं (क्षमा न करना, परेशानी, वगैराह) और उस तरह प्रार्थना करे, जैसा वह चाहता है.

यीशु को प्रार्थना में इस तरह देखना बिलकुल वैसा है जैसा उन्होंने अपने चेलों को और हमें बताया था की हम उसे पवित्र आत्मा के द्वारा देखेंगे: यूहन्ना १४:१६-१९ "मैं पिता से प्रार्थना करूँगा.....तुम भी जीवित रहोगे।"

मारा वी, अगस्त २००३: हम ने मारा को, जो एक कालेज ग्रेड्जुण्टे है और एक दूलहिन की सहेली बनी थी, शुक्रवार को एक शादी के पूर्व प्रयोग में, उस के दाहीने पैर में दर्द के कारण वह बैठ गई थी उस पैर पर उस के गर्मीयों में शल्यशास्त्र हुआ था। दूसरी दुलहिन की सहेलीयों के साथ पूर्व प्रयोग में ६० मिनट से भी ज्यादा समय तक खड़े रहने के कारण उस का पैर दुखने लगा था। कैथरीन ने उसके पैर पर हाथ रखा और मैंने अपना हाथ उस के कंधे पर रखा और प्रार्थना की। हम ने यीशु से कहा की वह अपनी आत्मा की चंगाई की ज्योती और शक्ति को उस के पैर पर छोड़े। इस बार हमने और ना ही मारा रे किसी प्रकार की गर्मी या झनझनाहट महसूस हुई, परन्तु हम यीशु का धन्यवाद करते रहे की उस की शक्ति उस के पैर को ठीक करने के लिए प्रवेश कर रही थी और परमेश्वर की ज्योती का चित्र बनाते रहे की वह पैर में प्रवेश कर रही है। मैंने अपने मन की आँखों से यीशु के चेहरे को देखा और उसे मेरे मन में कहते हुए सुना, "मैं उस का दर्द ठीक करूँगा"। फिर उस ने हमें यह कहने की अगुवाई की दर्द उस के पैर को छोड़ कर जाए। "दर्द तू इस के पैर को छोड़ कर जा। यीशु के शरीर और खून की बात को मान - उस के घावों के कारण यह चंगा हुई है (१ पतरस २:२४, यशायाह ३५:५)। यीशु के नाम से अभी इसी वक्त दूर हो।" जब हम न मारा से पूछा की कैसा ला रहा है। तो उस ने कहा की दर्द जा चुका था और पैर "सुन" हो गया था। अगली रात शादी के बाद खाने पर हम ने देखा की मारा, दूल्हे, दुलहन और अन्य लोगों के साथ नाच रही थी। कैथरीन ने उस

से पूछा की अब कैसा है तो उस ने कहा की "यह एक चमत्कार है"।

क्रिस्टीएन एल; अगस्त २००३: क्रिस्टीएन जो एक विद्यार्थी है विल्लीयम और मेरी कालेज में, एक स्मती मिनिस्ट्रीज़ बैकबैकिंग कैंम्प जो कोलोरोडो रॉकी माऊंटेंट्स में हो रहा था, वह वहाँ गए हुए थे कुछ और नव युवकों के साथ जो विद्यार्थी थे देश भर के कालोजों और विश्व विद्यालयों के। एक युवक जो पहाड़ी चढ़ने में अगुवाई करता था, एक दिन उस के पैर में भयानक झनझनाहट हुई और वह वह गिर पड़ा जिस के कारण उस के पैर की माँसपेशीयाँ एक बड़ी गिटान में बन्द गई, जो सब को नज़र आ रही थी और वह उसे खोल नहीं पा रहा था। वह एक तंदरुस्त नव जवान था परन्तु दर्द के कारण वह रोने लगा था। परमेश्वर ने क्रिस्टेन के मन से बात की वह उस व्यक्ति के पैर के दर्द के लिए प्रार्थना करे।

क्रिस्टेन ने वहाँ उपस्थित हर मसीही व्यक्ति से कहा की वे उस के साथ प्रार्थना करें। हर कोई उस व्यक्ति से कुछ दूरी पर खड़ा हो गया और अपने सरो को झुका लिया। क्रिस्टेन ने उन से कहा की हे लड़को, आगे आईए और अपना हाथ उस पर रखीए और हम परमेश्वर से प्रार्थना करेंगे की उस को चंगाई दे। क्रिस्टेन ने प्रार्थना में आगुवाई की और उस चोट खाए व्यक्ति के पैर पर हाथ रखा। उस ने पवित्र आत्मा से कहा की वह दउस व्यक्ति के पैर में प्रवेश करे और चंगाई की शक्ति को उस ऐठन वाली माँसपेशी पर केंद्रित करें और फिर परमेश्वर का आदेश पा कर क्रिस्टेन ने कहा, मैं आदेश देता हूँ की यह ऐंठती माँसपेशी ठीक हो जाए और यीशु के नाम में दर्द दूर हो जाए"। तुरन्त उस व्यक्ति की ऐठन वाली माँसपेशी गिटान में से अपने आप खुल गई, उस ने आराम महसूस किया। दर्द दूर हो गया और वह चोट खाया व्यक्ति बड़ा आराम अनुभव करने लगा। सारे जावन जो उस के लिए प्रार्थना कर रहे थे, हैरानी में आँखे खोल दीं। एक एक कर के वे क्रिस्टेन के पास आए और कहने लगे "वहाँ क्या हुआ?" हमें पता है की परमेश्वर चंगाई देता है, परन्तु हमारी प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर ने कैसे किया"? क्रिस्टेन ने उन्हें बताया की हमें बिमारों के चंगाई के लिए प्रार्थना करनी है जैसे यीशु ने और प्राचीन गिरजाधरों ने की थी जिन के बारे में बाईबल में बताया गया है। फिर दो विद्यार्थियों ने बताया की वे भी अपनी प्रार्थना सभाओं में मसीह की शक्ति और पवित्र आत्मा के द्वारा, बिमारों को चंगा करना सीख रहे हैं। क्रिस्टेन ने कहा की यह एक ऐसी छाप छोड़ता है की परमेश्वर उद्धार और चंगाई चिन्हों में चलना चाहता है और कई विश्व विद्यालयों और कालेज कैंम्पों पर मण्डराना चाहता है।

बिल एफ. जुलाई २००३ : कल एक औरत मेरे प्रार्थना के कमरे में आई और कहने लगी की उस के पास कुछ है जिस से वह मुक्ति पाना चाहती है। हम ने यीशु से कहा की वह हमें बताए की वह क्या है जिस से वह मुक्ति पाना चाहती है, परन्तु हमें कोई साफ चित्र नहीं मिला और न ही कोई संकेत, सो मैंने य़ूही आदेश दिया की वह जो भी है उस से इसे छुटकारा मिले और दो या तीन मिनट में वह जो भी था गायब हो गया।

कल की प्रार्थना सभा के बाद हम ने शारीरिक चंगाई देखना ज़ारी रखा। एक औरत छुटने की परेशानी के साथ मेरे पास आई, उस का सीधा धुटना और पैर इतन दर्द कर रहे थे की उसे उठा नहीं पा रही थी। वह अपने मोज़ो के ऊपर खड़ी होती और उन्हे ऊपर खेंचती। वह प्रार्थता के कमरे में आई और एक अगुवे ने उस के लिए प्रर्थन की। उस ने तुरन्त चंगाई पाई और वह उसी वक्त अपना पैर उठाने लगई।

एक जवान औरत आई जिस के दोनों हाथों की कलाई में दर्द था। वह अपनी कलाईयों को घुमा नहीं पाती थी। उन में बहुत दर्द होता था। जब मैं उस के हाथों को अपने हाथों में लिया तो मुझे ऐसे लगा जैसे परमेश्वर कह रहा हो की इस के खाने पीन में बदलाव की ज़रूरत है। वह जो खा रही थी उस में खटाई की मात्रा अधिक थी जिस कारण वह उस के अंदर समा गया था। परन्तु मैं उस से सफाई से न बता सका और उस से कहा की वह प्रर्थना करे और यीशु से पूछे की वह क्या है जो उस में से निकाल बाहर करना है। फिर मैं उस की कलाईयों के लिए प्रार्थना करी और दर्द को आदेश दिया की वह दूर हो जाए। जब मैं प्रार्थना कर रहा था तों मैंने महसूस किया की परमेश्वर का अभीषेक उसे छू रहा था और वह उसे एक दो मिनट तक पाती रही। जब अभीषेक खतम हुआ, मैंने उस की कलाईयों को छोड़ दिया और उस से वह करने को कहा, जिसे करने से उस की कलाई दर्द करती थी।

वह कलाई मरोड़ने लगी और आप उस की आँखों में देख सकते थे की दर्द जो चुका था। वह फूट फूट कर रोने लगी और मैंने यह महसूस किया की यीशु ने यह कहने को कहा की यीशु उस से प्रेम करता था और यह प्रेम को जवान का एक छोटा नमूना था।

एक बहरी औरत आई जिस के पैर में, कलाई में, और हाथों में दर्द था। जब वह सुबाह सो कर उठती थी तो यह दर्द होते थे। जब वह वहाँ खड़ी थी तो

उसे दर्द नहीं था। परन्तु वह सुबह उठने पर उन से धुटकारा पाना चाहती थी। हमें एक ऐसे व्यक्ति से मदद लेनी पड़ी जो उसे इशारों से समझा सकता था। जब हम यह करते रहे, तो मुझे पीड़ा का संकेत मिलता रहा की वह पीड़ा में थी। उसे यह समझाना मुश्किल था, की मैं क्या कहना चाहता हूँ, परन्तु आखिरकार वह मेरी बात समझ गई। मुझे पता चला की एक व्यक्ति था जो कैनेडा मे रहता था, जो उसे परेशान कर रहा था- और उस ने इस व्यक्ति को माफ नहीं किया था। पवित्र शास्त्र में से मत्ती १८:३४ मेरे ध्यान में आया की वह व्यक्ति जिस ने माफ नहीं कीय था उसे पीड़ा देने के लिए पीड़ा देने वालों के हाथों सौंप दिया गया। हम उस के लिए प्रार्थना करते रहे और उस ने उस व्यक्ति को माफ कर दिया। मुझे अगले रविवार को पता चलेगा की इस प्रार्थना का नतीजा क्या था।

एक युवक जिस ने मुक्ति के संदेश को सुन कर मसीह को अपनाया था, वह हमारे पास आया, जिससे हम आशीषित हुए। हम ने एक दम्पती को भी प्रार्थना में साथ लिया जो यह तै नहीं कर पा रहे थे की उन्हें कौन से गिरजाघर जाना है। जब हम प्रार्थना करने लगे तो उस पती ने परमेश्वर की उपस्थिती को अनुभव किय और वह रोने लगा और अपने परीवार के लिए परमेश्वर के सामने चिल्लाने लगा। मैं थोड़ा चकित हो गया, क्योकी मैंने यह नहीं सोचा था की एक दिशा दिखाने वाली प्रार्थना मे इतना कुछ हो सकता है। यह अच्वंमबित करने वाली बात थी क्योकी, क्योकी वह इतना गर्म हो गया था की इस करण पती की शर्ट पूरी भीग गयी थी। ऐसे लग रहा था जैसे कियी ने पानी के पाईप को उस पर झोड़ दिया गाय हो और वह भीग गाय हो। आखिर कार जब उस ने कुछ होश पाया, तो उस ने हम से यह कहा की वह ऐसा गिरजाघर ढूँढना चाहता है जहाँ वे बढ सके और अपनी सेवा करने के लिए जगाह पा सके। मैं उम्मीद करता हूँ की वे हम से आकर जुड़ जाएँ और हमारे परीवार का एक भाग बन जाएँ।

सो - यह कारनरस्तोन में एक दिलचस्प रविवार की सुबह थी। आप की सेवा के लिए धन्यवाद।

सैम, जुलाई २००३: मेरी पन्ती और मैं (गैरी) एक विद्यार्थी अगुवे पर प्रार्थना कर रहे थे जिस का नाम सैम था। जो विलीयम और मेरी कालेज में वर्ग बी ए में पढ़ता था। सैम के बायीं कुल्हा मे एक दर्दनाक फोड़ा बढ रहा था। पहले मैंने सैम से कहा की वह यीशु का चित्र बनाए की वह चंगाई की ज्योती फैला

रहा है और यीशु से पूछें की क्या कोई रुकावट इस अभीषेक को रोक रहा था। सैम ने कड़वाहट और स्वयं दया को स्वीकार किया और कुछ लोगों को क्षमा किया जिन्हें यीशु उस के दिमाग में ला रहा था। फिर मैंने उस से कहा की वह यीशु से उसकी बिमारी की जड़ की वजाह पूछे। यीशु ने उसे बताया की उस ने अपने आप को शाप दिया, स्वयं को समालोचन किया था, जब प्रचार के बाद उतने पापों की मुक्ति के परिणाम नहीं मिले जितनो की उम्मीद थी और प्रार्थना करी थी। मैंने उसे समझाया की अपने आप को समालोचन करने का मतलब है की अपने आप को शाप देना। उस ने स्वयं को समालोचन करने की शक्ति को तोड़ा। फिर मैंने उस के कुल्हे पर उस के हाथ के ऊपर अपना हाथ रखा और हमने पवित्र आत्मा से कहा की वह अपना चंगाई का अभीषेक को और यीशु की चमक को उस के कुल्हे पर छोड़े। मैंने अभीषेक को अपने हाथों पर अनुभव किया जो कुल्हे में प्रवेश कर रहा था और परमेश्वर का धन्यवाद दिया की अभीषेक अंदर जा रहा था। मैंने उस फोड़े को आदेश दिया की वह उसे छोड़ दे। फिर २ मिनट की प्रार्थना के बाद, मैंने सैम से पूछा की क्या उसे कोई फर्क पता चला। उस ने कहा "नहीं"।

फिर मैंने उस से पूछा की क्या मैं अपना हाथ उस के कुल्हे पर रख सकता हूँ, जहाँ वह फोड़ा था। फिर मैंने उसी तरह प्रार्थना की, परमेश्वर को उस अभीषेक के लिए धन्यवाद देते हुए, उस फोड़े को डाँटते हुए आदेश दिया की वह टूट कर छोड़ दे और दर्द को भी यीशु के नाम में छोड़ देने के लिए कहा। इस समय मैंने शक्ति का धड़ा अनुभव किया (सनसनाहट और गर्मी को बड़ते देखा) जो उस के कुल्हे तक जा पहुँचा। तब सैम ने कहा की दर्द ने उसे छोड़ दिया और अनुभव किया की फोड़ा छोटा हो गया है। हम प्रार्थना करते रहे और उस के कुल्हे को अभीषेक में भीगते रहे। यकीनन, मेरे हाथ का, सैम के कुल्हे से सीधे सम्पर्क ने, यीशु की चंगाई के अभीषेक को अधिक तीव्रता से छोड़ा।

गैरी, जुलाई २००३: फ्रैंक का जो पहला लेखा था उस का मुख्य कारण चंगाई का यह था की मसीह ही चंगाई देता है और उस के मुताबिक कार्य करना है। (जैसे की यशायाह ५३:१-५ और १ पतरस २:२४ और हॉ याकुब ५:१५ इस बात को स्पष्ट करता है की "विश्वास की प्रार्थना बिमार व्यक्ति को चंगा करती है।" इस का यह मतलब हुआ की सामान्य रूप से परमेश्वर बिमारों को चंगाई देता है।) हम ने यह ढूँढ निकाला है की यदि हम इस में उतना

ही विश्वास रखें जितना की आकर्षण शक्ति के नियम पर - की यदी हम पहाड़ी के, बाहर आकर चलें तो हम गिर सकते हैं - और यदि लोगों से उसी विश्वास के साथ बात करें - "परमेश्वर तुम्हें चंगा करेगा जब हम प्रार्थना करेंगे" - तो चंगाई बहुत आसानी से प्राप्त होगी। हम उन लोगों से कहना सीख रहे हैं, जो हम समझते हैं (आत्मा में देखते और सुनते हैं) की यीशु चाहता है की हम उन के लिए चंगाई की प्रार्थना करें, "हमारी प्रार्थना के बाद तुम अच्छा महसूस करोगे, क्योंकि परमेश्वर तुम्हें चंगा करेगा"। बजाये झिझकने के (मुझे नहीं पता की परमेश्वर क्या करेगा, परन्तु चलो फिर भी हम प्रार्थना करते हैं) हम यीशु से पता लगाते हैं और अकसर वह कहता है की "आगे बढ़ो" और चंगाई पाओ, तब हम एक सच की तरह बात करते हैं और हाँ बेफकूफ लगने का जोरिवम उठाते हैं यदी किसी वजह से चंगाई नहीं मिली है तो- परन्तु हमने कभी चंगाई पाना चाहाता हो लोगों के बीच में और ऐसा कभी नहीं हुआ की परमेश्वर ने चंगाई नहीं दी हो। हम प्रेक के बारे में यह कहते हैं की यदी हम विश्वास करें की चंगाई उसी रीती से मिलती है जैसे आकर्षण शक्ति के नियम और उस तरह कार्य करें तो वह आसानी से प्राप्त होती है स्वयं के लिए और दूसरों के लिए भी। ऐगनस स्वेनफोर्ट ने भी अपनी किताब दृष्टि हीलिंग लाईट "में यही बात कही है।

यदि हमें विश्वास है की परमेश्वर चंगाई की प्रार्थना के द्वारा चंगाई देता है, तो हमें उम्मीद के साथ बात करना है की ऐसा होता है। उम्मीद से बात करना विश्वास का भाग बन जाता है जो चंगाई का रास्ता बन जाता है, उस व्यक्ति के लिए और हमारे लिए भी।

पिछले हफ्ते के आखिर में, जुलाई ४ की एक पार्टी में हम ने चंगाई महसूस की, जब मैंने यीशु से पूछा और जान लिया की परमेश्वर चाहता है की वे चंगे हो, तब मैंने उन से कहा, "जब हम प्रार्थना करेंगे तो काफी ठीक हो जाएगा।" एक पाँच साल की लड़की के हाथों, पैरों और मुख पर, लाल खुजली के धब्बे थे। तब हम ने प्रार्थना की और विश्वास का चित्र बनाया की यीशु चंगाई की ज्योती और चमक के द्वारा प्रवेश कर रहा है, तो मैंने उसके अंदर एक डर और परेशानी के शैतान की मंडराते देखा। उसकी माँ ने डर और उत्सुक्ता को माना जो उस की बेटी के प्रति थी और तब हमने उस शैतान को डाँट बाहर किया और उस के साथ उस के साथियों को भी, और उन धब्बों को भी छोड़ कर जाने को कहा उसके चमड़ी पर थे। तुरन्त उस की हालत ५०-६०% "

ठीक हो गयी और जब एक घण्टे बाद हम ने उन का घर छोड़ा तो उसकी चमड़ी साफ हो गयी थी। हम ने उस की माँ से कहा की "जब हम प्रार्थना करेंगे तो वह बहुत अच्छा महसूस करेगी।" वह पारा के विष के कारण, दाहिनी गर्दन, कंधा और हाथ में दर्द महसूस करती थी। उस ने कुछ परेशानी और तनाव को परमेश्वर को सौंप दिया और कुछ लोगों को माफ किया ताकी परमेश्वर की चंगाई के अभिषेक को कोई रुकावट न रोक सके। हमने फिर उसके और उसके पती के साथ मिल कर प्रार्थना की और पवित्र आत्मा से कहा की वह यीशु की चंगाई की ज्योती को इन भागों पर छोड़े, हम आत्मा की ज्योती को चित्रांकित करते रहे और महसूस किया की अभीषेक का झनझनाहट उस के इन भागों में प्रवेश कर रही था (मेरी पत्नी और मेरे दो बच्चो ने भी इस गर्मी और अभीषेक के झनझनाहट को उन के हाथों द्वारा उस के शरीर में प्रवेश होते देखा)। तब हमने पारे को डाँटा और उसे शरीर को छोड़ कर जाने को कहा और दर्द को भी उस की गर्दन, कंधा और हाथ को छोड़ कर जाने को कहा। लगभग ५ मिनट के धन्यवाद के साथ की परमेश्वर उसे चंगा कर रहा है, हम ने उसे अभीषेक में भीगने दिया और देखा की दर्द पूर्ण रूप से गायब था। उस के पती को दाहिने हाथ की माँसपेशी में दर्द था, सो, जब उस की पत्नी की चंगाई पूर्ण हुई तो हमने अपना हाथ जो अभी भी अभीषेक से झनझना रहा था हटा कर उस पर रखा, उस के दाहिने हाथ पर और उसे ५०% चंगाई तुरंत मिल गई।

गैरी, जून २००५: एक हफ्ते पहले, मेरी पत्नी और मैं, हम दोनो ने एक मध्यरस्ता सभा में १५ विद्यार्थी प्रार्थना अगुवो के साथ जो विलियम और मेरी कॉलेज में, जो विलियमस्वर्ग, बी.ए. में पढते थे और कुछ संस्था के बड़े चमत्कारी बालिग भी थे।

बुरी बात यह थी की उन में से दो बालीग, यीशु को समर्पण करने के लिए तैयार नहीं थे। वे न तो कोलेज के क्षेत्र में और न ही विलियमस्वर्ग शहर के अंदर प्रचार के लिए तैयार थे, जैसे की बाकी के विद्यार्थी और मैं तैयार थे। हम और विद्यार्थी मान रहे थे की परमेश्वर चाहता है की हम उसके समक्ष दीन बनकर आएँ, अपने पापों का पश्चाताप करें और प्रार्थना करें की हर सभा में परमेश्वर की आत्मा की बारीश हो और महीमा हो, परन्तु कुछ बालिग लोग इस बात के विरोध में थे। वे किसी कारणवश यह मानना चाहते थे की उनमें कोई भी, किसी भी प्रकार की कमी नहीं है। और सब कुछ ठीक है और इस कारण विलियमस्वर्ग में किसी को भी मसीह के देह के कारण पश्चाताप करने

की जरूरत नहीं है। इससे पहले की यह दो बालिग कुछ कहते, मैंने अपने न्याय को एक तरफ रख, अपनी आत्मा से कहा, "यीशु तेरा वचन कहता है की किसी भी व्यक्ति को न परख," और फिर मैंने महसूस किया की पवित्र आत्मा में मेरे विचारों, कल्पना और इच्छा में समा गया। उन दो बालीगों, जो विद्यार्थियों के विरुद्ध बोल रहे थे, मैंने उन में कड़वापन, मनुष्यद्वेशी सिद्धांत और डर देखा।

इन दो बालिगों में, एक बूढ़ी औरत थी, जिस के विषय में परमेश्वर ने मुझ से बताया की उसकी कमर में दर्द है और वह उसे चंगा करना चाहता है। जो इस प्रार्थना सभा के मुख्य थे उन्होंने लोगो से कहा की सब मिल कर उस औरत के लिए और दूसरे बालिग के लिए उनको सामान्य आशीष के लिए प्रार्थना करें। उस औरत की कमर दर्द के बारे में कुछ नहीं कहा गया। मैं निजी तौर से इस प्रार्थना में शामिल होना नहीं चाहता था, परन्तु परमेश्वर ने मुझ से कहा की मैं इस की कमर पर हाथ रख कर उसके लिए प्रार्थना करूं। इस से पहले की मैं कमरे के उस पार जाता, उसके पती ने मेरा हाथ पकड़ा और उसकी पत्नी की कमर पर रखा और मझसे चंगाई के लिए प्रार्थना करने को कहा। मैंने और दूसरों ने मिलकर उसकी कमर पर हाथ रखा और आत्मा से कहा की वह तेज़ी से चंगाई की ज्योती को इस की कमर और हड्डीयों तक पहुंचे और मित्रो मैंने अभीषेक की गर्मी और झनझनाहट को अंदर जाते हुए अनुभव किया। फिर मुझे परमेश्वर ने उसके प्रती दया उत्पन्न की और मैंने आत्मा के द्वारा यीशु के चेहरे को देखा और पूछा की आत्मा में कैसे प्रार्थना करूं। उसके सर के ऊपर उन्होंने मुझे एक दर्शन दिखाया। वह कुछ जवान आत्मिक बेटों और बेटियों के साथ बैठी हुई थी। मुझे ऐसे लगा जैसे उस में कोई भावमय घाव होगा जो या तो उसके अपने बच्चों ने पहुँचाया होगा या बच्चे के न होने के कारण होगा। (मैं यह नहीं जान पाया की कौन सा, क्योंकि मैं इस सभा से पहले उससे नहीं मिला था।) परन्तु मैं भविष्यवक्ता की वाणी में कहने लगा की उसके मन के घाव को भरने के लिए परमेश्वर उसे आत्मिक बेटे और बेटियाँ देंगे। यह सुन कर वह रोने लगी और अभीषेक और ज्यादा मज़बूत होने लगा और कमर दर्द दूर हो गया।

मैंने यह भी सीखा की यदि परमेश्वर उस व्यक्ति के बारे में दैवी दर्शन दे रहा हो तो भविष्यवक्ता की वाणी कहने से उस व्यक्ति को अभीषेक द्वारा चंगाई और भी बढ़ जाती है। परमेश्वर की दया के साथ चलने से, मेरे शरीर में जो उस औरत के प्रती क्रोध था, क्योंकि उसने इस से पूर्व विद्यार्थियों का और

हमारा विरोध किया था। सच में एकता करवाने वाला परमेश्वर है।

देर उस रात, बौन्नी नाम के एक विद्यार्थी ने उस के दाहीने पैर के लिए प्रार्थना करने को कहा, जिस के कारण वह लंगड़ा रही थी। हमने उसके पैर पर हाथ रखा और पवित्र आत्मा से कहा की वह यीशु की चंगाई की ज्योती और गर्मी उस के पैर तक पहुँचे। हमने विश्वास चित्र बनाया की यीशु की चंगाई की ज्योती उस के पैर के अंदर प्रवेश कर रही है, जिसके कारण हड्डीयाँ और पुट्ठा, को उनके सही जगह पर कर दिया, और दर्द को दूर कर दिया। जब हम ऊपर्युक्त हर चीज़ के लिए धन्यवाद करने लगे तो हम ने दर्शन में देखा की कैथरीन, जिसका हाथ उसके पैर पर था, उसने हड्डीयाँ और पुट्ठों को हिलते हुए अनुभव किया, जिस का अनुभव बौन्नी को नहीं था। बौन्नी ने कहा की जूते के अंदर उसका पैर गर्म हो गया था और उसके बाद उस का दर्द पूर्ण रूप से ठीक हो गया था।

फ्रेंक १९७८-१९९४ : मैं यह कहानी आप को, परमेश्वर की ओर देखते हुए और आत्मा के बहाव में लिखूंगा। जैसा की आपने पिछले हफ्ते बताया। मुझे इस तरह से लिखना आसान लगेगा जैसे मैं आप को कहानी सुना रहा हूँ।

१९७८ से लेकर १९९४ तक मैंने चंगाई विश्वास और केवल विश्वास में रह कर करी। यह ठीक कार्य कर रहा था और बहुत चंगाई हुई। इस लिए मुझे समझाने दीजीए की विश्वास की चंगाई क्या है और फिर मैं आप को कई कहानीयाँ बताऊँगा।

१९७६-१९७८ में जब मैं बाईबल स्कूल में था तो मैंने सीखा की यीशु ने हमारी चंगाई के लिए दाम दिया है। उसके घावों के कारण हम चंगाई पाते है (यशायाह ५३:५;१ पतरस २:२४)। मैंने इस पर विश्वास किया। विश्वास का अर्थ यह था की मैं ये पूर्ण रूप से मानता हूँ की यीशु ने अपनी देह और खून से हमारी चंगाई का दाम भरा और मुझे चंगाई पाने का अधिकार है। मैंने विश्वास किया की यीशु की देह और खून बिलकुल संयुक्त राज के संविधान की तरह था। उसकी देह और खून ने मुझे परमेश्वर के राज्य में कुछ अधिकार दिये हैं और उनमें से एक अधिकार था चंगाई का अधिकार। यह विश्वास मेरा उतना ही ठोस था जितना की यह की मैं एक अमरीकी हूँ। मेरे मन में कोई शक नहीं की मैं अमरीकी हूँ, और मेरे मन में यह भी शक नहीं है की मैं उस के घावों से चंगाई पाता हूँ।

बाईबल स्कूल में यह भी सिखाया गया की याकूब ५:१४-१८ में जो विश्वास की प्रार्थना बताई गयी है जो बिमारों को चंगा करती है, वह आप के विश्वास पर कार्य करने जैसा है। बाईबल स्कूल के अध्यापकों ने इब्रानियों पाठ में यह भी बताया की विश्वास असल में परमेश्वर के वचन द्वारा कार्य करता है। सो मेरे लिए विश्वास की प्रार्थना का अर्थ है की मैंने जो यीशु की देह और खून पर विश्वास किया उस पर कार्य करूँ।

जो पहली चंगाई मेरे जीवन में हुई वह मेरी नयी पत्नी की थी। मेरी शादी फरवरी १९७८ में हुई थी। शादी के दो दिन बाद मेरी पत्नी के पेट में भयानक दर्द उठा। मैंने उस के पेट पर हाथ रखा और सिर्फ यह कहा की यीशु के नाम में ठीक हो जाओ। परन्तु उसे कुछ ठीक लगा और २० मिनट में वह पूर्ण रूप से ठीक हो गई थी। उन दिनों मुझे परमेश्वर की उपस्थिति या अभिषेक के बारे में कुछ भी पता नहीं था। १९७८ - १९९४ के बीच, जब मैं प्रार्थना करता था तो, मुझे यह बिलकुल भी पता नहीं था की, परमेश्वर की उपस्थिति या अभिषेक क्या था, परन्तु कई चंगाईयाँ हुई। मैं केवल यह विश्वास करता था की हमें चंगाई उसके घाव से मिलती है और मैं चंगाई का ऐलान, अपने हाथों को उन पर रख कर, यीशु के नाम से करता था।

मेरी शादी के कुछ दिनों बाद मैंने स्मिथ विगिलस्वर्त की किताब "हमेशा बढ़ता विश्वास" पढ़ी। उस समय उस किताब के माध्यम से मैंने यह सीखा की सारी दुनिया में चंगाई यीशु की देह और खून के द्वारा मिलती है। इस किताब ने यह भी बताया की हिम्मत और अधिकार से प्रार्थना कर चंगाई पाना है क्योंकि यह हमारा अधिकार था की हम यीशु के द्वारा चंगाई पाए। इस किताब से यह भी पता चला की विश्वास की प्रार्थना जो चंगाई देती है वह चंगाई के लिए अधिकार की प्रार्थना है क्योंकि हम यह विश्वास करते हैं की यीशु की देह और खून से ही चंगाई मिलती है। उस समय मुझे केवल यही पता था और मेरे लिए उसी की ज़रूरत थी। अगले पंद्रह सालों तक बिना परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव करें और बिना अभीषेक की भावना के मैं अधिकार की प्रार्थना से, यीशु के नाम में चंगाई के लिए प्रार्थना करते रहा और नतीजे भी देखे। उन दिनों में मैंने हर किसी में, जिन के लिए मैंने प्रार्थना की थी सौ प्रतीशात चंगाई देखी, परन्तु मेरी पत्नी, मेरे बच्चों और स्वयं मेरे लिए ही मैं प्रार्थन करता था, किसी और के लिए नहीं।

शादी के दस साल बाद तक जिन बिमारीयों की चंगाई के लिए, मेरे परिवार में, मैं प्रार्थना करता था वो थीं सर दर्द, पेट दर्द, सर्दी, जुखाम और दूसरे अनेक छोटे दर्द उन दिनों मेरे विश्वास की प्रार्थना बहुत आसान थी। मैं अपना हाथ उस परेशानी की जगह पर रखता था और अधीकर से कहता था की यीशु के नाम मे चंगाई मिल जाए। जिन शब्दों का प्रयोग मैं करता था, वह बहुत आसान थे, मैं कहता था, "यीशु के नाम में चंगे हो जाओ"। और मैं सिर्फ विश्वास करता था की परमेश्वर ठीक करेगा। सर दर्द और पेट दर्द पचास प्रतिशत एक दम ठीक हो जाते और एक या दो, घंटे के अंदर सारा दर्द दूर हो जाता था। आसान विश्वास कि प्रार्थना से सर्दी जुखाम की तीवर्ता भी कम हो जाती थी। प्रार्थना के बाद सर्दी और जुखाम के आसार बन्द हो जाते थे और तीवर्ता से चंगाई मिलती थी। उन दिनों सर्दी जुखाम एक दिन में खत्म नहीं होते थे। मैंने अपने जीवन में एक ही बार देखा की जुखाम के आसार एक दम गायब हो गये। मेरी छोटी बेटी करीब चौदाह साल की होगी और वह जुखाम से पीड़ित थी। जब मैं काम पर से घर लौटा तो देखा की उसे तेज़ बूखार है, ठण्ड मैहसूस हो रही थी और गर्दन पीली पड़ गई थी। मैंने उस के सर पर हाथ रखा और अधीकार से कहा की यीशु के नाम से चंगी हो जाओ, फिर मैं वहाँ से चला गया। पाँच मिनट में उसका रंग वापस आ गया, बूखार दूर हो गया, ठण्ड दूर हो गई और उसे भूख लगने लगी। केवल यही समय था जब मैंने सर्दी जुखाम से तुरन्त चंगाई देखी है। बाकी की सर्दी और जुखाम थोड़ी देर में जाते हैं।

एक वक्त काम करते हुए मैं अपने मोवक्तील की डयोड़ी पर से गिर गया और कमर मे चोट लगी। दर्द इतना तेज़ था की मैं अगली सुबाह बिस्तर से नहीं उठ पा रहा था। हर कदम पर दर्द हो रहा था। मैं एक कालीन साफ करने वाली कम्पनी का मालिक हूँ और मुझे मेरी कमर का इस्तेमाल सारा दिन करना पड़ता है। मेरी पत्नी चाहती थी की मैं कुछ दिन आराम करूँ परन्तु मुझे कुछ कर्ज चुकाना था इसलिए मैं काम पर गया।

कालीन सफाई की छडी को चोट खाई कमर से घुमाना मेरे जीवन का सब से दर्दनाक काम था। मैं पहाड़ी और किसी सकत जगह के बीच था। मेरा काम करना ज़रूरी था क्योंकि मुझे कर्ज चुकान था और मुझे चंगाई की भी आवश्यकता थी। सो मैंने विश्वास की प्रार्थना की और उम्मीद रखी की वह कार्य करेगी और उसने की। कार्य करते हुए दर्द में मैं कहने लगा "उस के घावों से मैं चंगा हुआ हूँ।" मैं ने मत्ती में उस औरत के विशय मे पढ़ रखा था जिस

को खून पहने की बिमारी थी। वह अपने मन में कह रही था की यदी मैं उस के चोगे के किनारे को छू लूँ तो मैं चंगी हो जाऊँगी। तो मैंने सोचा की यदी वह औरत खून की बिमारी के साथ, खामोशी से अपने विश्वास को मन में कह कर और उस पर कार्य करने से तुरन्त चंगाई पा सकती है, तो मैं भी उसी तरह चंगाई पा सकता हूँ। मैं इतने दर्द में था की केवल यह बोलने से की "उस के घावो से मैं चंगाई पाता हूँ, मुझे मानसिक आराम मिलने लगा। मैं काम करते रहा और खामोशी से इस वचन को बार बार दौहराते रहा। जैसे जैसे मैं यह कह रहा था" उस के घावों से चंगाई मिलती है, " वैसे वैसे मैं अंदर ही अंदर दर्द के साथ विश्वास की लड़ाई लड़ रहा था। पहले तीन दिनों तक कुछ नहीं हुआ परन्तु मैं कार्य करता रहा और इस वचन के द्वारा अंदर ही अंदर दर्द को दूर करता रहा। तीसरे दिन मुझे दर्द से कुछ आराम महसूस हुआ। कमर का दर्द कई घंटों तक दूर हो जाता और फिर एक घंटे के लिए आता और फिर चला जाता। इस तरह से अगले चौदाह दिनों तक होता रहा और फिर पंद्रहवे देन पूर्ण रूप से दर्द चला गया, प्रभु की महीमा हो। एक ढेड़ साल के बाद, एक दिन मैं काम कर रहा था और एक दम से वही दर्द बिना किसी वजाह के लौट आया। वह उतना ही तीव्र था जैसे पेहले, सो मैंने विश्वास की प्रार्थना शुरू कर दी। मैं अंदर से उस दर्द को दूर करता रहा, इस वचन को दौहराते हुए "उस के घावों के कारण मैं चंगा हुआ हूँ।" इस बार सिर्फ दो दिन में मैं ठीक हो गया और वह फिर वापस नहीं आया, परमेश्वर का धन्यावाद हो।

१९८९ में मेरी दोनो कोहनीयाँ सूजने लगीं। डॉक्टर ने कहा की मुझे टेनिस ऐलबो है और मुझे आराम करना चाहिए। मेरे ऊपर अभी भी कर्ज था और मुझे परीवार को भी संभालना था, सो मैं ने निश्चय किया की मैं विश्वास की प्रार्थन करूँगा, फिर से मैंने परमेश्वर पर ध्यान लगाया और काम करते हुए दर्द को दूर करता रहा और कहता रहा। "उस के घावों से मैं चंगा हुआ हूँ।" दस दिन के अंदर, सूजना और दर्द दोनो गायब हो गए परमेश्वर का धन्यावाद हो। एक साल के बाद यह बिमारी, टेनिस ऐलबो लौट आई और मैं वही किया परन्तु इस बार चंगाई पाने के लिए केवल तीन दिन लगे और फिर कभी भी यह बिमारी वापस नहीं लौटी।

१९९४ में सर्दियों में मेरी बड़ी बेटी बर्फ पर खेलने के लिए गयी (स्कीइंग ट्रिप)। क्योंकि उस ने अभी बस स्की करना शुरूही किया था, इस कारण हम लोगों ने उस को सलाह दी की छोटी ढलानों पर ही खेलना स्वभाविक था की उसे बड़ी ढलानों पर भी जाना पडा। जैसा होना था वह टकरा गई और उसे

पहाड़ी से नीचे स्ट्रैचर पर लाया गया। उस के घुटने मे भयंकर चोट थी और डॉक्टरों ने हमें बताया की उसे शस्त्र चिकित्सा की जरूरत है। कुछ और परीक्षण के लिए हमें एक हफ्ते बाद डॉक्टर से मिलना था। जब तक डॉक्टर के पास जाने का दिन नहीं आया, मैं हर दिन उस के घुटने पर हाथ रख कर, यीशु के नाम में अधिकार से चंगाई देता। मैं केवल इतन कहता, "यीशु के नाम मे चंगे हो जाओ" और चंगाई के लिए परमेश्वर का धन्यवाद देने लगता। अगले हफ्ते डॉक्टर ने कहा की वह अभी शस्त्र चिकित्सा को टाल देंगे क्यों की घुटना तीव्रता से ठिक हो रह था। मैंने कई महीनों तक उस के घुटने पर हाथ रख कर चंगाई की घोषणा करनी जारी रखी। मेरी बेटी को शस्त्र चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ी। परमेश्वर की शक्ति जो विश्वास की प्रार्थना द्वारा निकली थी उसी से उस का घुटना ठीक हो गया। एक दिन जब मैं काम पर से लौटा तो देखा की मेरी पत्नी को साँस लेने में परेशानी हो रही है जिस के कारण उस का चेहरा लाल पीला हो रहा था। वह डर गई थी और कहने लगी की मैं नहीं जानती की क्या करूँ।

एक दम से मुझे गुस्से के साथ हिम्मत आई और मैंने कहा की मैं जानता हूँ की क्या करना है। इसी के साथ मैंने अपने हाथ को उस के सर पर रखा और चिल्लाया, "यीशु के नाम में अभी इसी वक्त ठीक हो जाओ।" तब मेरे पत्नी ने साँस छोड़ी और एक लम्बी साँस ली। साँस की रुकावट का करण हम लोग नहीं जान पाए। तीन साल तक उसे इस तरह से कभी कभी होने लगा। जब कभी ऐसा होता, मैं अधिकार पूर्ण, यीशु के नाम में, चंगाई की घोषणा करता और वह महीनों तक ठीक रहती। हम इस तरह उस से तीन साल तक झूझते रहे, जब तक की उस को पूरी चंगाई नही मिली।

मेरे पिता, जो की उस गिरजाघर जाते हैं जहाँ प्रधान पादरी गिरजा चलाते हैं। उन के कंधे में दर्द होने लगा तो वे डाक्टरों के पास गए। डाक्टरों ने उन्हें दवा दी परन्तु वह काम नहीं कर रही थी। मेरे पिता ने मेरी विश्वास की प्रार्थना के बारे में सुन रखा था, सो उन्होंने ने उस को परखने का सोचा। उन्होंने अपने हाथों को अपने कंधे पर रख कर कहा, " यीशु के नाम में यह दर्द मेरे शरीर को छोड़ कर चला जाए। उस के घावों के कारण मैं जगा हुआ हूँ"। उन्होंने महसूस किया की कुछ दर्द उन्हें छोड़ कर जा चुका है, और अगले दिन तक पूरा दर्द चल गया था, परमेश्वर का धन्यवाद हो।

सो, मेरे अनुभव के अनुसार, विश्वास की प्रार्थना जो बिमारों को चंगा करती है वह एक साधारण सा विश्वास है की यीशु हमारे शरीर में चंगाई अपनी देह और खून के द्वारा देता है (यशायाह ५:५, १ पतरस २:२४)। विश्वास फिर अधिकार की प्रार्थना के द्वारा यकीन पर काम करता है, जैसे की यीशु की देह और खून से हमें अधिकार है की हम चंगे हो जाएं। परमेश्वर की आत्मा जब विश्वास की प्रार्थना से मिलती है, तब, चंगाई पूरी होती है। यह साधारण प्रार्थना का तरीका, हर तरह के दर्द व बिमारी दूर करने में चमत्कारी कार्य करता है। जितने भी साल मैंने इस तरह से चंगाई की प्रार्थना की, मुझे एक बार भी ऐसा नहीं लगा की परमेश्वर की उपस्थिति अभीषेक हुआ हो।

विश्वास की प्रार्थना प्रयोग # १

केवल इस बात पर यकीन करिए की यीशु की देह और खून से शरीर को चंगाई मिलती है। केवल यह यकीन करिए की उस के घावों के कारण आप ने चंगाई पाई है (यशायाह ५३:५, १ पतरस २:२४)। फिर इस यकीन पर कार्य करिए जो इस यकीन को विश्वास में बदल दे। अपने हाथों को उस दर्द, बिमारी या रोग के क्षेत्र पर रखीए और अधिकार के साथ, जैसे की आप का हक है की आप यीशु और सलीब के द्वारा चंगाई पाएं, आप यीशु के नाम में चंगाई की घोषणा करें। दर्द, बिमारी और रोग से ऐसे बात करें जैसे की वह कोई व्यक्ति हो और उस से कहिए की वह यीशु की देह और खून का आदेश माने। उस से कहिए की यीशु के घावों के कारण आप ने चंगाई पाई है और उस दर्द या बिमारी से कहिए की वह यीशु के नाम में आप के शरीर को छोड़ कर जाएं। परमेश्वर की आत्मा आपके विश्वास की प्रार्थना से मिलकर, दर्द, बिमारी और रोग को चंगा करेगी। इस तरह की प्रार्थना में आप को परमेश्वर की उपस्थिति या अभीषेक के बारे में परेशान होने की आवश्यकता नहीं। आप ने केवल जानना है और यकीन करना है और परमेश्वर की वाचा पर काम करना है। सो, बस करिए और आप कई अच्छे परीणाम देखेंगे। मेरे मुताबीक यही विश्वास की प्रार्थना है। यह अच्छा कार्य करती है और यदि आप चंगाई देना सीखना चाहते हैं तो यह शुरुआत के लिए अच्छी है।

फ्रैंक, जुलाई २००३: चंगाई पर कुछ टिप्पणीयाँ आज रात आप के लिए लिखना चाहता हूँ। पहले कारण की मैं दर्द को शरीर धोड़ कर जाने की प्रार्थना करता हूँ। इस के दो कारण हैं;

सेख्या एक : दर्द से छुटकारा पाना बहुता आसान है। केवल उतना करीए की दर्द को यीशु के नाम में इस तरह आदेश दें जैसे की वह कोई व्यक्ति हो और छुसपैठी हो, आप के शरीर में और सामान्य रूप से ३५ से ५० प्रतिशत दर्द तुरन्त चले जाता है। और कुछ घंटों में सारा दर्द ठीक हो जाता है।

संख्या दो: यदी आप किसी व्यक्ती के दर्द के लिए प्रार्थन कर रहे हों, वह यह अनुभव करें की कुछ दर्द उन के शरीर को छोड़ कर गया है, तो उन को चंगाई के लिए विश्वास एक दम बढ़ जाता है, वे जान जाते है की परमेश्वर काम कर रहा है, और बाकी कि चंगाई पाना आसान हो जाता है।

दर्द रहित पर सामान्य चंगाई : दर्द से छुटकारा पाना उतना आसान है की मैंने कई बार दर्द रहित पर सामान्य चंगाई की है। मैं बताता हूँ। पिछले साल मैं अपने पिताजी के साथ मछली पकड़ने गया। मेरे पिताजी कुछ पेड़ों के पास चल रहे थे जब वे फिसल कर गिर पड़े, उन का सर पेड़ की जड़ से टकराया जिस के कारण उन की नाक टूट गई। उन की नाक से भयंकर रूप से खून निकलने लगा। मैंने उन को पेड़ के तने के साथ टेका दिला कर बैठाया, सर को पीछे कर तने से सटाया और नाक को अंगूठे और ऊँगली से दबाया। खून बहना कुछ कम हुआ फिर बन्द हो गया। मैंने अपने पिता से कहा की वे शांत रहें जब तक मैं अभीषेक को अपने हाथों द्वारा उन की नाक तक नहीं पहुँचाता। मैंने यीशु पर ध्यान लगाया, अपनी ऊँगलियों को उन की नाक पर १५ मिनट तक रखा ताकी, परमेश्वर के अभीषेक के कारण जो मेरे हाथों द्वारा उनकी नाक तक जा रहा था, खून का बहना बन्द हो जाए। मैं अपने पिताजी को लेकर घर गया और दोपहर तक उन को उनके घर न भेज कर मैंने अपने पास रखा। उन की नाक सूज गयी थी और एक आँख काली नीली हो गई थी। उन की नाक को ठीक होने में पूरे दो महीने लग गए।

मैं कुछ महिनों तक अपने पिताजी को यह कह कर छेड़ता रहा की वे जहाँ जा रहे थे उस का उन को ध्यान नहीं था, बिलकुल उसी अंदाज में जैसे वे मुझे बचपन में छेड़ा करते थे। यह बहुत ही आनंदमय था। नाक के ठीक होने में सब से अचम्भित करने वाली बात यह थी की यह क्रम बिलकुल दर्दहीन था, परमेश्वर का धन्यवाद हो। नाक तो निर्धारित समय अनुसार ही ठीक हुई, पर उन्हें तनिक भर भी दर्द नहीं हुआ। जब मैं खून के बहाव को

रोकने के लिए दबाव डाल रहा था तो जो अभिषेक उन के नाक में जा रहा था उस के कारण नाक के निर्धारित समय अनुसार ठीक होने पर भी दर्द नहीं हुआ।

मेरा बेटा टायलर कल ऊपर नीचे कूद रहा था जब उस ने एक भयानक चीख निकाली। कूदते कूदते वह इतनी ऊँचे कूदा की उसकी नाक उसके घुटने से टकराई और उस में से खून निकलने लगा। वह थोड़ी सूज गई थी। मैंने अपना ध्यान यीशु पर लगाया, अपने हाथ को नाक से थोड़ी दूर रखा और उस दर्द को यीशु के नाम से जाने को कहा। टायलर ने कहा, "पिताजी दर्द केवल दस प्रतिशत ठीक हुआ है।" वह चाहता था की ज्यादा दर्द ठीक हो, इसलिए मैंने इसे फिर किया। उसने बेचैनी के साथ कहा, "पचास प्रतिशत, पिताजी," जैसे वह चाहता था की दर्द पूर्ण रूप से अभी इसी वक्त ठीक हो और यह की मैं दर्द से क्यों खिलवाड कर रहा था। टायलर जो सात साल का है वह सोचता है की यीशु, हाथ के रखने से चंगाई देता है, बुरे स्वपनों की चंगाई भी। वह चाहता है की सारा दर्द एक दम से ठीक हो जाये। तो मैंने दर्द को फिर आदेश दिया की वह उस के शरीर को छोड़ कर चला जाये। इस बार सारा दर्द चला गया और सात साल का टायलर खुश हो गया, परमेश्वर का धन्यवाद। अब टायलर की नाक सारी रात सूजी रही और दूसरे दिन भी, परन्तु उसे दर्द नहीं था। एक और दर्द विहीन चंगाई निर्धारित समय पर हुई, परमेश्वर का धन्यवाद।

एक औरत मेरी चंगाई सभा में आई जिस के जोड़ों में दर्द था और जोड़ों का दर्द इतना बुरा था की कलाई की हड्डीयाँ ढीली हो गई थीं क्योंकि कोमलास्थि नष्ट हो गई थी। उसे बहुत दर्द था और जब आप उस का हाथ हिलाते थे तो आप महसूस कर सकते थे की हड्डीयाँ एक पर एक चडी हुई थी। प्रार्थना के बाद दर्द खत्म हो गया था परन्तु यह स्पष्ट था की कोमलास्थि नहीं बड़ पाई थी क्योंकि आप हड्डीयाँ पर हड्डीयाँ महसूस कर सकते थे। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यह औरत उस रात दर्द से मुक्त हो कर गई।

मेरे मुताबिक, चंगाई की सेवा में यह अच्छा है की हम दर्द को और बिमारी को जो दर्द दे रही है उस को अलग रखें। मैं दर्द और उस बिमारी को जो दर्द दे रही दो अलग चीजें समझता हूँ। उदाहरण के लिए जोड़ों के दर्द की बिमारी और जोड़ों का दर्द। जब मैं जोड़ों के दर्द के व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ तो पहले दर्द से निबटता हूँ और हाद में बिमारी से। मैं अधिकार से जोड़ों के दर्द को यीशु के नाम से जाने को कहता हूँ और ९० प्रतिशत लोगों में ३५-५० प्रतिशत दर्द तुरन्त चला जाता है। दर्द से मुक्ति पाते ही उस व्यक्ति का परमेश्वर में विश्वास और भरोसा बढ़ जाता है। जब दर्द

दूर हो जाता है तब मैं उस जोड़ों की बिमारी से अधिकार के साथ कहता हूँ की यीशु के नाम में उस की देह छोड़ने को कहता हूँ। जब मैंने अधिकार के साथ दर्द और बिमारी को दूर होने को कह देता हूँ तब आत्मा द्वारा अगुवाई पाकर अभिषेक में रहते हुए चंगाई से मिठी बातें करता हूँ। दूसरे शब्दों में अभिषेक के बहाव में कहते हुए मैं प्यार और दया के साथ शरीर के भागों से कहता हूँ की वे ठीक हो जायें और यीशु के नाम में सामान्य हो जाए। तो जब मैं बिमारी या उसके कारणों को आत्मिकता से अभिषेक के साथ व्यवहार करता हूँ, परन्तु जब शारिरिक देह से बात करता हूँ तब प्यार और दया के साथ बात करता हूँ। मैंने देखा की यह अच्छा कार्य करता है।

फ्रैंक, जुलाई २००३: हमारी एक धाय पालित बेटी है जो पिछले सप्ताह हमारे पास आई थी। उस का नाम दानियल्ला है। उसने मुझे कई बार घर पर दूसरों को चंगाई देते देखा है। उसे विश्वास नहीं है। उसे केवल यीशु का नाम पता है। दानियल्ला १३ वर्षीय, पुष्ट, दृढ़ इच्छुक और बुराई से भरी हुई है- वह उस तरह की बिल्कुल नहीं है जो आप सोचते हो की दैवी चंगाई के प्रती जिज्ञासुक हो। वह ऊपर नीचे कूद रही थी, और उस का पैर मुड़ गया और उसके घुटने में दर्द होने लगा। वह मेरे पास आकर कहने लगी की क्या किसी तरह मैं उसका दर्द दूर कर सकता हूँ। मैं कुछ देर सोचता रहा और परमेश्वर से पूछने लगा की मैं क्या करूँ, क्या यह सही होगा की मैं अपना हाथ उसके घुटने पर रख कर प्रार्थना करूँ। सो मैंने उसे बैठने को कहा और जो भी मैं कहूँ उसे वह करे। सो वह बैठ गई। दूसरे बच्चे भी बैठ कर देख कहे थे की क्या हो रहा है। क्योंकि दानियल्ला को परमेश्वर के बारे में कुछ भी नहीं पता था, सो मैंने सब कुछ बहुत आसान रखा।

मैंने दानियल्ला से कहा की यीशु की देह और खून से उसे चंगाई मिल सकती है (यशा ५३:५, १ पतरस २:२४) और फिर उससे पूछा की क्या वह इस पर विश्वास करती है। उसने कहा, "हाँ।" मैंने उससे कहा की क्योंकि वह विश्वास करती है की यीशु की देह और खून से उसे चंगाई मिल सकती है, इस कारण वह चंगाई पा सकती है। उसने कहा, "ठीक है।" मैंने उससे कहा की यीशु की देह और खून से उसे चंगाई मिलना उसका हक है बिल्कुल उसी तरह जैसे की उसे संयुक्त राज्यों में उसके अमरीकी होने का खुछ अधिकार है। उसने कहा, "हाँ।" मैंने फिर दानियल्ला से कहा की वह अपना हाथ घुटने पर रखे। उसने वैसा ही किया। मैंने उससे कहा की मैं प्रार्थना में उसकी अगुवाई करूँगा और हम दोनों मिलकर दर्द को दूर करेंगे। मैंने उससे कहा की मैं जो भी बोलूँ उसे वह धीरे से दोहराये। उसने कहा, "ठीक है।" मैंने उसे बताया की वह धीरे पर उतने ही अधिकार से बोले दितने की मैं बोल रहा हूँ क्योंकि उसे अधिकार है की वह यीशु की देह और खून से उसे चंगाई पाए और उसने

कहा, "ठीक है।" सो, दानियल्ला ने अपना हाथ घुटने पर रखा और जो मैं कह रहा था उसे दोहराने लगी। मैंने उससे अधिकार से कहाने को कहा, "दर्द, तू अब यीशु के नाम में मेरे शरीर को छोड़ कर जायेगा। दर्द अभी इसी वक्त यीशु की देह और

खून का आदेश सुन और मेरे शरीर को छोड़ कर चाल जा। उस के घावों के कारण मैं चंगा हो गई। "फिर थोड़ी देर के लिए मैं खामोश हो गया। फिर दानियल्ला की आँखें अचम्बे से बड़ी हो गई और वह खुशी से चिल्लाने लगी, "दर्द चला गया। दर्द चला गया।" वह उठ कर किचन तक दौड़ी, मेरी पत्नी को पकड़ कर कहने लगी दर्द चला गया। दर्द चला गया। "मैं हँसा और परमेश्वर का धन्यवाद किया।

फ्रैंक, जुलाई २००३: मैं यह चंगाई की कहानी आप के साथ बाँटना चाहता हूँ क्योंकि यह बिल्कुल जो मैं करता हूँ उस का आदर्शभूत है। यह कहानी प्रतीरोज़ की सामान्य चंगाई की है मैं अपने एक ग्राहक के घर गया और वह एक बगल को पकड़े हुए थी, मैं ने पूछा की क्या हुआ। उस ने कहा की छः महीने से उस के बगल में दर्द था और डॉक्टर ने उसे गोलीयाँ दी उस से कुछ फायदा नहीं हो रहा था। मैं उस के घर कई बार जा चुका था, इसलिए मैंने कहा मुझे तुम्हारे लिए प्रार्थना करने दो। उस ने कहा "ठीक है।" मैंने उसे बताया की चंगाई जब मिलती है तो ऐसे लगता है जैसे दर्द के क्षेत्र में गर्मायी जा रही हो और अकसर उस व्यक्ति को तुरन्त अच्छा लगने लगता है और कुछ घंटों बाद दर्द पूरी तरह से चला जाता है। उस ने कहा ठीक है। मैंने उस के बगल में जहाँ दर्द था, उस से अपने हाथ को दो इंच की दूरी पर रखा। इस बात का पूरा विश्वास पाकर की यीशु की देह और खून के अधिकार से (यशायाह ५३:५; १ पतरस २: २४) और इस बात का पूरा विश्वास की पवित्र आत्मा की शक्ति मेरे लिए उपयोग के लिए उपस्थित था (प्रेरित १:८; १ कुरि १४:३२; १२:७) मैंने प्रार्थना करनी शुरू कर दी और जान बूझ कर अभीषेक को मेरे हाथों पर आने दिया जो उस के दर्द से दो इंच की दूरी पर था। मैंने उस अभीषेक को अपने हाथों के द्वारा उस औरत के बगल तक जाते हुए अनुभव किया। तब मैं ने अधिकार के साथ कहा, "दर्द तू यीशु के नाम से अभी और इसी वक्त इस औरत की बगल से निकल जा। तू यीशु की देह और खून का आदेश सुनेगा। उस के घावों के कारण यह शरीर तंदरुस्त हुआ है। इसी वक्त इस औरत के शरीर को छोड़ दे। है पिता धन्यवाद है तेरी उपस्थिती के लिए और शक्ति और चंगाई के

अभीषेक के लिए भी और तेरा धन्यवाद हो यीशु की देह और खून के लिए"।

फिर मैंने बहुत ही नम्र आवाज़ में कहा, अब हे प्रभु हम इस शरीर की पूर्ण चंगाई को यीशु के नाम से धोषित करते हैं। अब इस शरीर को पूर्ण रूप से ठीक कर। जैसा लिखा गया है, वैसा ही हो, धन्यवाद हो परमेश्वर।" जब मैं यह प्रार्थना कर रहा था, अभीषेक उस औरत की बगल में जा रहा था। यह सारी प्रार्थना मानों १५ सेकंड भी नहीं लगे। उस औरत ने बताया की ५० प्रतिशत दर्द जा चुका था उस ने यह भी कहा की वह गर्मी को अपने शरीर में महयूस कर रही है ऐसे जैसे की मैंने कोई गर्म तरबूत उस के चर्म पर रख दिया हो। मेरा हाथ तो उस से २ इंच की दूरी पर था। जब एक घंटे बाद मैं उस के घर से निकला, तब तक उस के शरीर का पूरा दर्द जा चुका था और उस ने परमेश्वर की ताकत और प्यार को देखा। मेरे लिए तो यह हर दिन का अनुभव है और सामान्य रूप से चंगाई का तरीका। इस किताब के लिखने का मुख्य कारण यह है की हम विश्वासीयों को बता सकें की तुरन्त अभीषेक करके चंगाई कैसे पा सकते हैं। पवित्र आत्मा की ताकत को किसी कारण के लिए और अपनी इच्छा अनुसार कैसे प्रयोग कर सकते हैं। (१ कुरि १४:३२)। पवित्र आत्मा की ताकत को जान बूझ कर अपनी इच्छा अनुसार पाप, बिमारी और रोग काम करने के लिए इसे प्रयोग किया जा सकता है। क्योंकि पवित्र आत्मा की ताकत हमारे लिए परमेश्वर से उपहार है जो हमें यीशु की देह और खून के द्वारा मिला है ताकी हम शैतान के कार्यों को नष्ट कर सकें (१ यूहन्ना ३:८; यूहन्ना १४:१२, १६:७; प्रेरिता १:८)। इस कारण हमें परमेश्वर से पाने में और उसकी चंगाई के अभीषेक के प्रयोग में परीपूर्ण होना है।

रीजेट विश्वविद्यालय अंतराष्ट्रीय विद्यार्थी अगुवों का स्कूल, जुलाई ३१, २००३, पिछले गुरुवार की रात (जुलाई ३१), गैरी ने एक पाठ पढ़ाया, बाईबली और व्यावहारिक बुनियादों पर जिस से आप परमेश्वर की आवाज को सुन सकते हैं और भीवष्यवादी अगुवा बन सकते हैं और प्रचार की ताकत से, विश्वविद्यालय में यीशु के चंगाई के कार्य कर सकते हैं। विलियम और मेरी के तीन विद्यार्थी, जिन को हमने पिछले साल हम ने प्रशिक्षित किया था, उन्होंने हमारी मदद की अंतराष्ट्रीय विद्यार्थियों को सिखाने में। वे दो दो के झुण्ड में बट गए और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने लगे, तो उन्होंने ने परमेश्वर की आवाज को सुनना सीख लिया

परमेश्वर ने हम पर और उन विलियम और मेरी कॉलेज के विद्यार्थियों पर ज़ाहिर किया की वह उस रात कई तरह की बिमारीयों में थी। मैं ने मन की आँखों से परमेश्वर को देखा जो अपने शरीर में विभिन्न भागों की ओर इशारा करके संकेत दे रहा था की इन लोगो में कहाँ कहाँ बिमारीयाँ हैं जो ठीक होती हैं। बैथरीन और उन विलियम और मेरी कॉलेज के विद्यार्थियों ने इन्हीं भागों के बारे में परमेश्वर से सुना - परमेश्वर उन्हें चंगा करना चाहता था जो परेशान थे भयंकर पीठ का दर्द, गर्दन का दर्द, पेट दर्द और पेटमें तनाव और कमर दर्द और वह जिस के दाहिने हाथ में दर्द था। परमेश्वर ने पूरी शक्ति से पाँच विद्यार्थियों को पकड़ा। एक डोनेसिरा का पादरी था जिस के पेट में गलती से मुक्का पड़ गया था जिस के कारण दर्द उस के पेट से उठता और कमर तक जाता। हमे परमेश्वर ने प्रार्थना के माध्यम से उस से कहने को कहा की वह मूर्ती बूजा करना छोड़ दे (जो की ऐशिया के बोध पूजाको को ज्यादा था) और परमेश्वर उस के खानदान की मूर्ती बूजा के इतिहास को छोड़ देगा। उस की इच्छा जान कर मैं ने अपना हाथ उस के पेट और कमर पर रखा और कुछ और लोगों के साथ मिल कर उस के लिए प्रार्थना की। हम ने परमेश्वर की आत्मा से कहा की वह यीशु की चंगाई की ज्योती और शक्ति को उस के पेट पर और तीव्र करदे। फिर परमेश्वर ने मेरी अगुवाई की और मैंने २-३ बार आदेश दिया की पेट का दर्द चला जाए और यीशु की देह और खून का आदेश माने, जिस के थावों के कारण यह व्यक्ति ने चंगाई पाई है (यशा ५३:५; १ पत २:२४)। उस ने तुरन्त अनुभव किया की वह भयंकर दर्द उस के पेट और कमर को छोड़ कर जा चुका है और वह पूर्ण रूप से स्वस्थ है - वह अपने शरीर के ऊपरी हिस्से को बिना किसी दर्द के कहीं भी मोड़ सकता था। नेपाल से एक विद्यार्थी जो वर्ल्ड बैंक में काम करता था, उस ने कहा की उस के पैर की नसों में कुछ खराबी थी, जिस के कारण वह रात में सो नहीं पाता था। जो उस के लिए प्रार्थना कर रहे थे उन्होंने प्रार्थना के माध्यम से उस से कहा की वह बचपन से जो मूर्ती पूजा करता आ रहा है उसे छोड़ दे और परमेश्वर उस के खानदान के मूर्तीपूजा

के इतीहास को माफ कर देगा। हम ने पवित्र आत्मा से कहा की वह यीशु की चंगाई की शक्ति और ज्योती को उस के पैरों पर डाले और मेरे मन की आँख ने, डर और बेचैनी के शैतान को उस के पैर को तंग करते देखा। उस ने कहा की उसे ऐसा लगा जैसे "कुछ चला गया" हो, और उस के पैर पर पूरी शक्ति छा गई हो, जब हम ने प्रार्थना में आदेश दिया की बेचैनी उस के पैरों को छोड़ कर जाए और फिर कभी भी वापस न लौटे। दो व्यक्ति थे जिन की गर्दन और कंधों में भयंकर दर्द था, प्रार्थना करने पर वह पूर्ण रूप से ठीक हो गए। दोनों स्थितीयों में परमेश्वर ने हमारी अगुवाई की और हम ने दर्द को आदेश दिया की वह उन के शरीर को छोड़ कर चाल जाए और यीशु की देह और खून का आदेश सुने जिस के धावों के कारण इन्होंने चंगाई पाई है। एक महिला जिस के दाहिने हाथ में दर्द था वह ठीक हो गयी, जब विद्यार्थियों ने उस के लिए प्रार्थना की परमेश्वर की तारीफ हो। हम एक अदृश्य परमेश्वर की सेवा करते हैं।

गैरी, जून २००३: मेरे स्तुती और प्रार्थना के समय, जब मैंने फ्रैंक के प्रस्ताव को प्रयोग में लाया मैंने परमेश्वर पर ध्यान लगाया और कहा की वह मेरी मदद करें की मैं पवित्र आत्मा के अभीषेक को अपने फेफड़ों और गले पर ले जाऊँ (जहाँ पर एक विशैला संक्रामक रोग से मैं लड़ रहा था)। अभीषेक मेरे हाथों द्वारा वहाँ पहुँचा और मैंने विश्वास का चित्र बनाया कि परमेश्वर की ज्योती इन भागों में प्रवेश कर रही है और मैंने परमेश्वर की उपस्थिती का धन्यवाद दिया और आराधना की। मैंने अभीषेक को शरीर उस भाग पर बनाए रखा, परमेश्वर का धन्यवाद करता रहा की उस ने उसे वहाँ केंद्रित किया है और कुछ अधिक देर तक माँगता रहा। मैं इस में २० मिनट तक भीगता रहा जब तक मैंने अपने आप को आत्मा से परीपूर्ण नहीं पाया जिस के मुझे आभास हुआ कि मैं इस में पूर्ण रूप से भीग चुका हूँ। यह अच्छा था और मुझे लगा की मैं ५०% इस विशैली संक्रामक रोग से छुटकारा पा चुका हूँ। और अधिक प्रार्थना के बाद और कुछ आक्रमण से मुक्त क्रम को उत्तेजक न्यूनता पूर्ती लेने के बाद एक दिन के अंदर मैं इस रोग से छुटकारा पा लिया।

मार्क, मई २००३: टोरन्टो एयरपोर्ट क्रिस्तिअन फैलोशिप में एक हफ्ता पढ़ने के बाद मैं अभी लौटा ही था। हमने उस हफ्ते में तीन चंगाईयाँ देखीं। केवले तीन के लिए प्रार्थना की थी इसलिए नतीजा १००% रहा। परमेश्वर की स्तुती हो।

हम ने कक्षा को तीन झुण्डों में बाँटा। हर झुण्ड में ५-६ लोग थे और हर झुण्ड ने २० मिनट तक हाथ रख कर प्रार्थना की। एक सर दर्द पूर्ण रूप से

चला गया, एक की देखने की क्षमता और एक की साँस की बिमारी जो उसे ३ साल की उम्र से थी।

यह बहुत दिलचस्प था। मैं ते यह अगूवाई पाई की मैं उन से कहूँ की वे पवित्र आत्मा से पूछें की इस बिमारी का मूल कारण क्या है और फिर वे अपना ध्यान चित्रों के बहाव और विचारों के बहाव में लगाएँ। वह लड़की जिस को साँस की बिमारी थी, उस ने अपना २-३ साल की उम्र का चित्र देखा की वह पालने में लेटी है और उस ने छींक मारी और कुछ उस के अंदर प्रवेश कर गया। मैंने अनुमान लगाया की वह शैतान था और हम ने मुक्ति की प्रार्थना करी। फिर वह इमारत के चारों ओर दौड़ने लगी और ५०% ठीक हो गई थी। अगले दिन हम ने फिर उस के लिए प्रार्थना की और उसने देखा की उस के पालने के पास यीशु आकर कह रहे है, "नहीं तुम्हें यह नहीं मिल सकता", और उन्होंने उस शैतान को उस में से खेंच बाहर निकाल फेंका। वह फिर बाहार गई और इमारत के ३ चक्कर लगाए और पूर्ण रूप से चंगी हो गई।

वह लड़की जिस की दृष्टि कमजोर थी उसके मन में विचार आया की जब उस की दृष्टि कमजोर हुई था, वह ८ साल की थी और अपनी माँ के साथ, कार में बैठी हुई थी। उस की एक सहेली ने तब ही दृष्टि कमजोर होने के कारण चश्मा पहना था। उस ने सोचा की चश्मा बहुत अच्छा लग रहा है सो उसने अपनी माँ से कहा की उस की दृष्टि कमजोर है और उसे चश्मे की ज़रूरत है। उस की माँ ने कहा नहीं उस की दृष्टि बिलकुल ठीक है क्योंकि सड़क के पार जो लिखा हुआ है वह उसे आसानी से पढ़ पा रही है। उस लड़की ने कहा नहीं वह नहीं पढ़ पा रही है और सच में उसकी दृष्टि खराब हो गई। सो उस ने प्रार्थना में उस ने अपने अधर्मी यकीन को की "चश्मा बहुत अच्छा है" और उस के अंदर की प्रतिज्ञा को की "मुझे चश्मा चाहिए क्योंकि मैं देख नहीं पा रही हूँ," के लिए माफी माँगी और हम ने शैतान को डाँटा और जो भी शैतान इस से जुड़ा हुआ था उस को निकाल बाहार किया। उसकी दृष्टि इतनी अच्छी हो गई की उस को गाडी चलाते में भी चश्मे की ज़रूरत नहीं पड़ी।

मेरे ख्याल मे यह ठीक है की हम अपने ग्राहकों से कहें की वे खुद पवित्र आत्मा से बिमारी का मूल कारण पूछें। अपना ध्यान वे खैच्छिक विचार और चित्रों की ओर लगाएँ और जब तक परमेश्वर की ओर से दैवी दर्शन नहीं पाते तब तक खामोश रहें। फिर आवश्यकता अनुसार प्रार्थना कर उस बिमारी को जड़ से निकाल बाहर फेंके।

डेविड रूलमैन, मेई २००३: हफ्ते के आखरी दिनों में हमारे ३० घंटे के आराधना एंव आपस में बात चीत के वक्त एक बहुत ही नाटकीय घटना हुई। सुबह के वक्त हम सब अपने शहर के अगुवे कि लिए शक्तिपूर्ण प्रार्थना करने लगे। हमने प्रार्थना करी की मानसिक उपस्थिती और व्याकुलता टूट जाए और मानसिक बिमारी खतम हो जाए। यह प्रार्थना खास तौर पर पादरीयों और अगुवों के लिए थी। प्रार्थना करते में ऐसा अनुभव हुआ जैसे उन लोगों को स्वर्गदूतों न उठा कर उस आराधना ग्रह से बाहार फेंक दिया हो। हम प्रार्थना अभी कर ही रहे थे की एक पादरी दर्वाजे पर आया और चिल्ला कर कहने लगा, "तुम क्या प्रार्थना कर रहे हो? मैं अपने कमरे में था जब मुझे एक बादल दिखाई दिया और मैंने परमेश्वर की आवाज़ सुनी, "तुम चंगे हो गए हों।" मुझे पता है की तुम प्रार्थना कर रहे हो और मैं मज़बूर था की मैं यहां आऊँ और अपनी चंगाई की गवाही दूँ। वह पादरी एक साल से और उस दिन तक परेशान था मानसिक तनाव, खून के बहाव मे तीव्रता जिस की शुरुआत पिछले अप्रैल में हुई, जब दिल के रोग के कारण छः घंटे तक वह अपना जीवन घंवाँ चुका था। आज मैंने उसे देखा और उस के खन की तीव्रता ११६ पर ७८ था और उस के आने की सुबह से लेकर आज तक वह न कभी व्याकुल और न ही पिडीत हुआ। धन्यवद हो यीशु ।

एल डब्ल्यू विल सन ऐंजेकियल मिनिस्ट्रीज़, मई २००३: मैं सोचा की मैं इस बात को लिख लेता हूँ। "सामान्य बनो" की सभा के वक्त जब हम चंगाई के लिए प्रार्थना कर रहे हो तो मैं ने सामने आकर आस पडोस की सूक्ष्म ग्रहिता के लिए प्रार्थना की। इस प्रार्थना मे मैंने विश्वास की चित्र पर दबाव डाला। मैं अधिक प्रसन्नात से कह रहा हूँ की ज्यादातर चीज़े जिन से मुझे सर दर्द होना था, वे आब मुझे परेशान नही करती। प्रार्थना के वक्त, मैंने यीशु को अपने सामने खडे हुए पाया वे अपनी बाहें फैलाये हुए थे। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे, मैं कही बाहार खड़ा हो कर अपने आप को देख रहा हूँ और फिर ऐसे हुआ की मैं एक चमकती स्फेद थैली में गायब हो गया। आचानक, वह फट गया और मैं वहा था परन्तु बिल्लकुल पारदर्शक । मेरा शरीर था, परन्तु उस के आर पार देख सकते थे। ऐसे जैसे की रौशनी में एक बारीक पन्ने को रख दो, मेरे शरीर मे कहीं भी कुछ दाग नहीं थे, कोई भी काले धब्बे नहीं थे। मै साफ था। मैं समझ गाय की इस का मतलब है की मैं चंगा हो गया। तुरन्त सभा के बाद मैं अपनी पत्नी के साथ उन दो जगहों पर गया जहाँ जाने से मैं डरता था। सीअरस इत्र की दूकान और "द बौडी शौप"। वहाँ

जाने पर मुझे भयानक सर दर्द होता था। मैं वहाँ ४५ मिनट तक रहा परन्तु मुझे तनिक भर भी दर्द न हुआ। मेरी पत्नी ने एक नया इत्र खरीदा, पर मैंने परमेश्वर का धन्यवाद दिया और उस की स्तुती और महीमा की और यीशु के नाम क बड़प्पन माना। धन्यवाद हो आप के विश्वास के लिए और परमेश्वर के प्रती आप की आज्ञापलन के लिए।

बिल्ल एफ, मार्च २००३

प्रिय कैथी और कैरोलीन:

मैं तुम्हे बताना चाहता था की पिछले सप्ताह अपने क्षेत्र की चंगाई संस्था मे क्या हुआ। रविवार की रात को कौरनर स्टोन में एक सभा हुई। मंगलावार को हम नौरगे, वी.ऐ. गये और पिछली रात हम स्ट्रैटफोर्ड हिल्स गए।

कारनारस्टोन :

एक अगुवे ने साक्षी दी की इस प्रार्थना में आने से एक महीन के पहले, उसे डॉक्टर ने बताया था की उस के घुटने को पूर्ण रूप से बदलना परेगा। उस ने सारे इंतजाम कर लिए थे और फिर उस ने सोचा की इस सभा मे शामिल हुआ जाऐ और उसे ऐसा लग रहा था जैसे परमेश्वर उस के घुटने को ठीक करेगा। वह सामने आए और हम ने उस के लिए प्रार्थना की। वह फिर अपने डाक्टर के पास गया और वहाँ उसे पता चला की उसे घुटने बदलने की आवश्यकता नहीं है और जो कमी डॉक्टर को उस के घुटने में लगी वह थी जलन। हमने रविवार की रात फिर उस के लिए प्रार्थना की परन्तु मुझे जलन के बारे में अभी पता नहीं चला।

एक औरत सभा के वक्त आगे आई। जिस का पेट का आपरेशन होने वाला था। उस के पेट में दो फोड़े थे जो उसे बहुत दर्द पहुँचाते थे। उस की माँ और नानी दोनों को कैंसर था। डॉक्टर काफी उत्सुक था क्योंकि वह उन के घर का इतीहास जानता था। इस कारण उस ने यंत्र चिकित्सा का प्रस्ताव रखा। वह रविवार की रात को आई और मैंने उस के लिए प्रार्थने करी। प्रार्थना के बाद मैंने उसे ऐसा कुछ करने को कहा जिस से उसे दर्द होता था। उसे सीड़ी चढ़ते उतरते दर्द होता था। इतना ज्यादा होता था की वह एक वक्त में सिर्फ दो सीड़ियाँ चढ़ पाती थी।

मैंने उस सभा ग्रह में जो सीडीयाँ थी उन पर चढ़ने को कहा (जो तीन सीड़ियाँ थी)। जब वह चढ़ने लगी तो उस ने अनुभव किया की सारा दर्द जा चुका था। उसे प्रार्थना के वक्त कुछ नहीं लगा बस इतना की मैंने कहा की तुम चंगी हो गयी। फिर भी वह यकीन नहीं कर पा रही था सो सोमवार को वह अपने डॉक्टर को दिखाने गयी। उस ने उस की पूरी जाँच करी और कहा की यंत्र चिकित्सा की ज़रूरत नहीं है। वह पूर्ण रूप से स्वस्थ थी।

मुझे यह ई-मेल एक महिला से मिली जो हमारी आराधन की सदस्या थी। उस ने मुझे यह शाम की सभा के बाद भेजा। मुझे नहीं पता था की कुछ हुआ है।

"आज की रात, मैं वहाँ बैठी थी और तुम मेरे सामने खड़े हो कर परमेश्वर की शारीरिक चंगाई के बारे में बता रहे थे। मैंने उतनी गंभीरता से या सच्चाई से यूहन्ना ३ के बारे में कभी नहीं पढ़ा था, गिनती के उस भाग को भी कभी नहीं पढ़ा था। परन्तु अचानक परमेश्वर ने मेरे सामने शादी के वादों को ला कर रख दिया "अच्छे वक्त में और बुरे, बिमारी में और तंदुरुस्ती में जितने दिन हम जीवित रहेंगे", और मैं रोने लगी। मैं जानती हूँ की तुम समझ जाओगे की बिना शब्दों का प्रयोग करे परमेश्वर मुझ से क्या कहना चाहता था। यह ऐसे था जैसे चाहे मैं परेशानी में हुए पर फिर भी मैं उस की दुल्हन हूँ और वह मुझे उसी गहराई से प्यार करता है। मैं भी उसी तरह जवाब दे रही थी बिना बोले मैं शादी के वादों को दो राह रही थी और उसे अपना पती बना रही थी। यह इतना आनन्दमय था"।

नौरगे, वीए,

मंगलवार की रात, नौरगे, वीए में एक महिला सभा में आई वह अपना बाँयाँ हाथ नहीं उठा पा रही थी और उस में निमोनीया के आसार दिख रहे थे। सभा में सिर्फ बैठ कर उस ने चंगाई पाई। किसी ने उसे छुआ नहीं, किसी ने उस के साथ प्रार्थना नहीं करी। वह आखिर में उठ कर आई और उस ने बताया की क्या हुआ।

एक बूढ़े आदमी के दाहिने कंधे में हड्डियों की जोड़ों में दर्द था। वह अपने हाथ को कंधे तक नहीं उठा पाते थे और उस की यह हालत कई सालों से थी। जब हमने उस के लिए प्रार्थना करी, तो उसका सारा दर्द निकल गया और वह अपने हाथों को सर के ऊपर उठाने लगा और घुमाने लगा।

एक व्यक्ति जिसे लकड़ा मार गया था और वह पड़िये वाली कुर्सी पर बैठे

रहता था, वह सभा में नहीं आया, परन्तु जो लोग उसे पहचानते हैं उन्होंने बताया की वह हमारी पिछली सभा के बाद उन्नती कर रहा है। उस ने गिरजाघर में साक्षी दी की परमेश्वर ने उस के बायें तरफ को छुआ और वह स्पर्श को अनुभव करने लगा।

मैंने एक व्यक्ति के साथ प्रार्थना की, जिसकी दाहिनी आँख में मोतीयाबिन्द की शास्त्र चिकित्सा के बाद दर्द था। प्रार्थना के बाद दर्द गायब हो गया।

पिछले तीन महीनों से, एक औरत को भयंकर एक तरफा सरदर्द था। उस के लिए प्रार्थना करी और वह तुरन्त ठीक हो गयी।

स्ट्रैटफोर्ड हिल्स:

साक्षी के वक्त, एक औरत जिस के साथ मिलकर पिछले हफ्ते मैंने प्रार्थना करी थी, उस ने गवाही दी। वह पिछले हफ्ते आई थी क्योंकि डॉक्टर ने उस की पीठ पर एक चर्म रोग देखा था। वहाँ पर एक तिल था जो कैंसर में बदल चुका था। वह आई और मैंने उस कैंसर को शापित किया और आदेश दिया की वह सूख कर गायब हो जाए। उस ने कहा की उस हफ्ते में, वह तिल उस की पीठ पर से गिर गया और वह पूरा क्षेत्र चंगा हो गया।

एक और महीला ने साक्षी दी की उस के सर में जो एक तरफा दर्द उठता था, जब मैंने अक्टूबर में उस के लिए प्रार्थना करी, वह गायब हो गया, ।

मैंने एक महीला के साथ लगभग एक महीने तक प्रार्थना की उस के कमर और कुल्हे के दर्द के लिए। पिछले हफ्ते मुझे गुस्सा आ गया। उस पर नहीं परन्तु उस दर्द पर जो बार बार लौट आता था, तो मैंने और ताकतवर आदेश दिया चंगाई के लिए। उस ने पिछली रात बताया की वह दर्द फिर वापस नहीं लौटा और पिछले हफ्ते पूरे दर्द रहित रही है।

मैं ने प्रार्थना संस्था के अधिकारी के साथ मिल कर करी। वह मेरी सभा में आई थी क्योंकि उस का एक दाँत सड़ गया था और मैंने अपना हाथ उस के चेहरे पर रखा, वह इतनी गर्म हो गयी की उस को पसीन आने लगा और कहा की वह जल रही थी। मैंने आज उस से बात की और उस ने बताया की दर्द पूर्ण रूप से जा चुका था। मैंने एक औरत के लिए प्रार्थना करी जो एक कार ऐक्सीडेंट के बाद, कंधे और गर्दन में भयंकर दर्द उठता था। वह प्रार्थना के बाद कुछ आराम महसूस करने लगी परन्तु पूर्ण रूप से दर्द से मुक्ति नहीं मिली थी।

वह औरत जो न्यासर्ग के बहकावे में आ जाती थी, उस ने कहा की वह अब आराम से सो रही है और प्रार्थना के बाद उसका न्यासर्ग संतुलित हो गया है। तो तुम दोनों को हफ्ते का अंतिम दिन खुशनुमा हो। काश तुम दोनो उस के राज्य को इस दुनिया में लाने के लिए लगे रहो और काश यह दुनिया देखे और विश्वास करे। आशीश के साथ, बिल।

बिल एफ फेब ११.२००३: नौरगे, वीए संस्था केद्रं - फरारी ११२००३ बिल फीलडिंग, चेस्टरफीड वी.ए.२३८२८ डब्ल्यू फीलडिंग @जुनो, कौम हाई कैरोलिन,

जब प्रचार का समय था तो मैं एक व्यक्ति के पास गया जो की लकुए के कारण पईए वाली कुर्सी पर बैठा हुआ था - हो सकता है कई सालो से । उस का पूर बायाँ तरफ उस की चपेत में था। बाये तरफ के चेहरे पर गर्दन और कंधा, बायाँ हाथ और बायाँ पैर, बिलकुल सुन पड़ा हुआ था।

उस का बायाँ हाथ मुड़ गया था, और अंगुठा उँगलीयों से डबा हुआ था, बायाँ तरफ पूरा चण्ड से जम गया था और हाथ बर्फ की तरहा ठण्डा था। हाथ छाती तक खिंच आया था और सक्त हो गया था। बायीं कलाई मुड़ कर सक्त हो गई थी। वह उस व्यक्ति की तरहा लग रहा था जिस का हाथ मुझा गया हो।

एक महीने पेहले जब वो सभा में आया था तो उस ने सर दर्द से चंगाई पाया था।

जब पादरी ऐण्डरसन ने हम लोगों से कहा की लोगों मे जाओ और उन के लिए प्रार्थना करना शुरू करो, तो मैं उस व्यक्ति के पास गया। मैं ने उस का बायाँ हाथ लिया और प्रार्थना करनी शुरू कर दी और आदेश दिया की उस का हाथ ढीला हो जाए और फैल जाए। मैंने दूसरों को चमत्कार के लिए प्रार्थना करते सुना था और कई बार चमत्कार उस व्यक्ति के साथ होता है और वह उन कार्यों को करने लगते है जिन्हें वह नहीं कर पा रहा था। सो मैंने उसका हाथ पकड़ कर आदेश दिया की वह हाथ खुल कर फैल जाए और मैं उसे खेंचने लगा। जब मैं यह करने लगा तों हाथ आगे आने लगा। उसकी पत्नी के मुताबिक यदी मैं उस से पेहले ऐसा करता तो उस के कंधे मे भयंकर दर्द होता था अब कोई दर्द नहीं था कहीं भी और मैं उसका हाथ हिलाने लगा, आगे पीछे एक तरफ से दूसरी तरफ और फिर

ऊपर और नीचे। वह ताजुब मे बैठा रहा की क्या यह उसी का हाथ है। मुझे नहीं पता की कितना समय हुआ होगा इस हाथ को इस तरह हिलते हुए, परन्तु सारी रात किसी भी भाग में दर्द नहीं था।

जब मैंने ऐसा किया तो मैं उस के शरीर को आदेश दिया की वह अनुकूल होना शुरू करे, उस के पूरे शरीर के बायें हिस्से मे स्पर्शता लौट आई। मैं बीयी तरफ कहीं भी हाथ लगाता तो उसे मेरा स्पर्श अनुभव होता - उसके चेहरे, हाथ और पैर। इस से पहले यह सब सुन थे।

मैं उस के साथ मिलकर एक घंटे से भी अधिक देर तक प्रार्थना करी। इस समय उसा का हाथ सीधे से बाहार को निकल आता। उस का हाथ खुल गया था।

उल का अंगुठा हिलने लगा और बिना तकलीफ को ऊंगलीयाँ खुल गई पर पूरे रूप से नहीं। कई बार ऐसे लगता था जैसे माँसपेशीयाँ सिकुड़ कर फिर से मुड़ जाना चाहती हों। मैं प्रार्थना करता और उस के शरीर से आराम करने को कहता। जब मैं ने उस को आराम करने को कहा तो उस के शरीर ने वैसा ही किया, और महसूस कर सकते थे की खिंचाव गायब हो गया और माँसपेशीया ढीली पड़ कर आराम करने लगीं। यह सच में आश्चर्यजनक था। ऐसा लगा जैसे जब भी वह अपने फैले हुए हाथ को देखता - अपने मस्तिष्क में उसे लगता की वह शरीर की ओर वापस खिंचा आ रहा है और आप अचानक महसूस करते की वह वापस खिंच कर बन्द हो रहा है। जैसे ही मैं कहा "शरीर शांत हो जाओ या हाथ शांत हो जाओ, तो खिंचाव बन्द हो जाता और माँसपेशीयाँ आराम करती और वह फिर फैल जाता। मैं उस के पैर के लिए भी प्रार्थना करी। प्रार्थना के बाद वो कुछ इंच की दूरी तक अपने पैर को उठाने लगा, जो वह पैहले नहीं कर पा रहा था। उसने पैर को पईये की कुर्सी पर जो पैर रखने की जगह है वहां से हटा कर कुछ इंच ऊपर उठाया। उस का पूरा बायाँ तरफ गर्म हो गया और गर्दन के ऊपर का हिस्सा तो ज्यादा गर्म था। बर्फ से ठण्डा हाथ गर्म होने लगा जो की दाहिने हाथ से भी ज्यादा गर्म था।

वह व्यक्ति और उस की पत्नी अचम्बीत हो गये। हम बस भयत्रस्त हो देखते रहे। यह कितनी आशीष की बात थी की ऐसा होते देख रहे थे। वह पईये वाली कुर्सी को छोड़ कर यह नहीं चिल्लाया की "मैं चंगा हो गया"। परन्तु वह उन कार्यों को करते हुए गया जिन्हे वह नहीं कर पा रहा था। मैं ने अनुभव किया की जब मैं

उस का हाथ ले कर आदेश दिया की वह हिलने लगे और फिर जब मैं हाथ को खेंचने लगा, तो चंगाई का क्रम वहीं से शुरू हुआ। १ कुरि १२:१० मे, पवित्र आत्मा की स्पष्टता ही "चमत्कार के काम करती है" और मुझे काम करना पड़ा उस के हाथ और पैर ताकी वह महसूस कर सकें की उस से दर्द नहीं होता है - वह अनुभव कर सके और वह अंदर बाहर हिलने लगा। वह खुद भी उस को हिलाने लगा - यह केवल मेरे हिलाने से नहीं था। वह कई बार फुलकित हो उठा और आप देख सकते थे की वह विश्वास कर रहा था की यीशु ने उसे छुआ है। मैं इस मे इतना आशीषित हुआ। जब हमने खतम किया तो वह व्यक्ति थक जुका था। शैलोम, बिल।

टिप्पणी : उपर्युक्त स्थिती में कुछ और अतिरिक्त क्रम से भी मदद मिलती। जब भी उस व्यक्ति ने अपने हाथ की ओर देखा वह सिकुड़ने लगा। इसका मतलब यह है की उस में कुछ अर्धमी चित्र और विश्वास होंगे जिन का पश्चताप कर के उन को बदलना चाहिए। उसे आदेश देना चाहिए की वह अपने आप को बदले। उसे आदेश देना चाहिए की वह अपने आप को शांत कर ले, अपनी आँखों को यीशु पर रखे और उस से पूछा जाए की उसे उसका बायाँ शरीर कैसे दिखता है। तब उसे आदेश दें की वह विचारों और चित्रों के बहाव की ओर ध्यान लगाए, और वह जो कहता है आप उसे लिखते जाईए। यह नया दैवी दर्शन उस के पुराने चित्र और लकुए के विचारों को बदल कर विश्वास जगाएगा। उस के साथ वह भय, लकुआ, मार , मार का भय, लकुए का डर, दुर्बलता जैसे शैतानों और इसके भी अलावा जो शैतान उस से संबधित है सब को भगाना है। एक बार यह सब बाहार आ जाए, तो पवित्र आत्मा को समाने की प्रार्थना करीए, और विश्वास, आशा, जीवशक्ति, जीवन और शक्ति को आमंत्रित कीजीए की वे उस में जिवित हों जाएँ, पवित्रा की शक्ति से।

बिल एफ, फरबरी १२, २००३: स्टैटफोर्ड संयुक्त मयोडिस्ट चर्च - फखरी १२, २००३।

मेरी इच्छा है की जब भी मैं लिखूँ तो मेरे पास चमकती हुई साक्षी हो। पिछली रात को हमारी बुधवार रात की सभी थी। मुझे ऐसे लगा की एक जंग छीड़ी हुई थी। जिस पहली महिल के लिए मैंने प्रार्थना करी तो मुझे विरोध महसूस हुआ उस की कमर और घुटने में तकलीफ थी। परमेश्वर की उपस्थिती वहाँ थी - मैंने पवित्र आत्मा का अनुभव किया - मैंने अपना हाथ उस पर रखा, परन्तु किसी कारण

वश वह पा नहीं रही थी और मुझे नहीं पता की क्यों। पादरी जो ने भी उस के लिए प्रार्थन करी परन्तु नहीं पता की उस ने चंगाई पई या नहीं।

मैंने एक और महिला के लिए प्रार्थना करी जिस को कमर दर्द था। शारिरिक दर्द का संम्बध भावमय दर्द और सारी दुनिया का बोझ अपने कंधे पर उठा के चलने के कारण था। जैसे ही परमेश्वर ने मुझे और उसे यह दर्शाया तो वह मान गयी की वह संसार का बोझ उठा कर नहीं चलेगी और नियंत्रण परमेश्वर को दे देगी। उस का कमर दर्द गायब होगया। जब तक हम उस पर प्रार्थना कर के उठे तो उस के सारे दर्द - कमर, गर्दन एवं पैर दर्द पूर्ण रूप से गायब थे। क्या वे लौट आएंगे? बिलकुल अगर वह फिर से सबका बोझ अपने ऊपर ले।

इसी प्रकार का अनुभाव मुझे तीसरी महीला से भी हुआ जिसे करम और कुल्हे में दर्द थी। यह भावना से बंधी हुई थी, फर्क बस इतना था की उस की यह भावनाएँ बचपन से थी। भयंकर रूप से बिरोध और स्वयं को तुच्छ समझना - यह भावमय दर्द उस की रीढ़ की हड्डी और कुल्हे की हड्डी से लिपटा हुआ था। कभी मुझे चित्र मिलते हैं यदी मैं यीशु से पूछूँ की उस व्यक्ति के जीवन में क्या हो रहा है। फिर भी हम लोगों ने काफी हद तक उस दर्द को बहार निकाल दिया था और साथ में वह अंधकार भी जो इस दर्द से जुड़े हुए थे। मैंने आज उस से बात करी और उस ने बताया की आज सुबाह उस को दर्द रोकने की दवा नहीं लेनी पड़ी। वह बहुत दवा खाती थी ताकी वह सुबाह उठ कर काम पर जा सके।

और हाँ क्या मैं ने तुम्हें और कैथी को उस चार साल के लड़के के बारे में बताया जिस की पीठ में कैंसर की गांठ थी। वह अपनी माँ के साथ पिछली रात की सभा में आया था। अब वह गांठ पूर्ण रूप से गायब है। डॉक्टर उसे न पा सके। उस की सफेद सैल की गिनती बहुत अधिर बै और वह हँस रहा था और बहुत खुश था।

एक और महिला ने साक्षी दी की लगभग तीन साल पहले डॉक्टर ने बताया की उसे फेफड़े का कैंसर है। अब उसे जीवित रहने के केवल ६ महीने बाकी थे। वह पिछले हफ्ते जब डॉक्टर के पास दिखाने के लिए गई तो पता चला की फेफड़े का कैंसर गायब था। प्रार्थना के द्वारा वह पूर्ण रूप से ठीक हो गई।

तो यह कुछ और साक्षीयाँ थी, सूची में जोड़ने के लिए।

बिल एफं फखरी १९,२००३ : स्ट्रैटफोर्ड हिल्स संयुक्त मे योडिस्ट चर्च - फखरी १९,२००३।

बुधवार की रात को जो हुआ उस का एक झटपट ब्योरा। बुधवार की रात कम लोग ही जमा हुए थे परंतु यीशु वहाँ उपस्थित था अपने लोगों को छूने के लिए। मैं बताता हूँ की यीशु मेरे जीवन में कैसे कार्य कर रहा है ताकी तुम्हें भी थोड़ी समझ आयेगी जब वह तुम्हारे जीवन और संस्था में कार्य करेगा।

एक क्षेत्र जो परमेश्वर मेरे जीवन में बड़ा रहा है वह है ज्ञान के शब्द। इस का मतलब यह है की चंगाई की सथा में - तुम्हे पता है की वहाँ कोई है जो शारीरिक या भावात्मक परेशानी में है। कभी यह एक सामान्य जानकारी होती है और कई बार खास जब परमेश्वर तुम्हें खुद उस व्यक्ती को दिखाएगा। बाईबल बताती है की यीशु जान जाते थे की लोगों के मन में क्या है - वही चीज़। आप ऐसी चीज़ो का पता लगाएंगे जिस के बारे मे आप को किसी ने नही बताया और केवल देख कर आप नही पहचान पाते।

एक बुधवार की रात जब हम आराधना कर रहे थे, मैंने एक व्यक्ति के गले की छबी देखा और गले के दोनों तरफ कुछ गाँठें दिख रही थीं। मैं नही जान पाया की क्या रोग था परन्तु जो मैंने देखा उसे बता सकता था। वह छबी किसी चित्र के प्रकार नहीं थी जिसे तुम देख सकते, परन्तु मेरे लिए यह छवी थी जिसे मैं देख सकता था चाहे मेरी दृष्टि कहीं और लगी हो आर मैं पूर्णरूप से जो देखा उसे बता सकता था, पर यह मेरी शारीरिक आँख से देखा हुआ नहीं था। मुझे पता नहीं की मैं ठीक से समझा पा रहा हूँ की नहीं। मुझे लगता है की यह कुछ ऐसे है जैसे आप अपने सोफे को देखीए फिर कही ओर देखीए, परन्तु आप के मास्तिशाके में उस सोफे की छबी बनी रहेगी चाहे आप किसी और चीज़ को देख रहे हों।

जब मैं वहाँ खड़ा था तो एक और बात हुई। मैंने शब्द सुना - "रोटेटर कफ" (कंधे की माँस पेशी) और अपने दाहिने कंधे पर शारिरिक तौर से कुछ महसुस किया, तो मैं समझ गया की यह किसी व्यक्ति के दाहिने कंधे की माँसपेशी की समस्या है। कभी मैं कुछ सुन लेता हूँ और कई बार दर्द महसुस करता हूँ उस खास क्षेत्र मे जहाँ किसी को कोई समस्या है। मैंने यह सीख लिया की यह परमेश्वर का संकेत है की वह उस जगाह को चंगा करेगा। यह सब मैंने पादरी जो को बताया और उन्होंने लोगों से इस बात को कहा। वे कहने लगे की आगे आईए और चंगाई पाईए।

पहले कोई नहीं आया। फिर एक व्यक्ति आगे आया जिस को यह तकलीफ थी। वह पेंट करने वाला था और उस के कंधे मे यदि वह दूर तक हाथ बढ़ाता तो दर्द होता था। यह वही माँसपेशी थी। हम ने उस के लिए प्रार्थना करी और तुरन्त उस का दर्द दूर हो गया। फिर मैंने बाद में उस पर प्रार्थना करी की जब वह अपना हाथ फैलाये तो कोई दर्द या बेआराम महसूस न हो। आगे का परिणाम क्या हुआ इस के लिए हम को इतज़ार करना पड़ेगा। परन्तु जो दर्द था वह गायब हो गया था।

दूसरी समस्या गर्दन की थी - एक औरत सामने आयी और पादरी जो ने उस के लिए प्रार्थना करी असल में वह दर्द क्या था हमें नही पता, पर वह जो हमने बताया था उस तरह की समस्या ही थी।

एक व्यक्ति आया जिस के फेफड़े में कैंसर की गाँठ थी। इस के अलावा मैं क्या कहूँ की मैंने मृत्यु की आत्मा जो कैंसर की आत्मा के साथ उस में थी, उस को तोड़ा और आदेश दिया की वह बिमारी खतम हो जाए और गाँठ सूख कर गायब हो जाए।

एक और औरत आई जिस के भयंकर कमर दर्द था। २० मिनट की प्रार्थना के बाद वह अपने पैरो को हिलाने लगी जो अगर वह पहले करती तो उसे दर्द होता। पर अब वह उस से मुक्त थी। क्योंकि बहुत ज्यादा बर्फ गिरी थी तो हम लोगों से कह रहे थे की हम उन के लिए प्रार्थना करेंगे जिस की कमर बर्फ हटाते हुए दर्द कर रही हो।

दूसरे लोग भी प्रार्थना कर रहे थे परन्तु मुझे नहीं पता की उन के साथ क्या हुआ। कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्हे कंधे और गर्दन की माँसपेशियों में दर्द था। सब से अच्छा तरीका दर्द निकालने जो मैंने ढूँढ लिया वह यह है की उपदेश के साथ साथ प्रार्थना करीए, शरीर में शांती के लिए। तो यह सब हुआ था बुधवार की रात को।

परमेश्वर की आशीष हो और आपका हफ्ता आराम दायक हो। बिल।

बिल अफ फखवरी २६, २००३: स्ट्रैटफोर्ड हिल्स संयुक्त मथोडिस्ट चर्च - फखरी २६, २००३।

हैल्लो कैरोलिन,

स्ट्रैटफोर्ड हिल्स में बुधवार रात क्या हुआ उसके बारे में बताता हूँ। दो सप्ताह पहले मैंने बताया था की आराधना के समय मैंने एक छवी देखी थी जिसमें एक व्यक्ति के गले में दोनों तरफ कुछ गांठें देखी थीं। पास्टर जो ने उसके बारे में बताया तो एक महीला आगे आई प्रार्थना में शामिल हुई। पिछली रात उसने आकर साक्षी दी की उसको थायरौइड की समस्या थी और जब पादरी जो ने बताया, तो वह समझ गई की यह उस के लिए है। जब वह सामने आई तो उन्होंने उस के लिए प्रार्थना करी तो उसे ने महसूस किया एक गर्म कालर जैसा उस के गले से लिपट गया है और तुरन्त उसको लगा की जो भी उस की परेशानी थी वह दूर हो गई।

जब लोग प्रार्थना के लिए आगे आए, तो मैंने यह शब्द सुने - भयंकर हारमोन का असंतुलन।" मैंने यह पैगी एण्डरसन को बताया परन्तु पादजरी जो ने नहीं बताया। जब प्रार्थना का समय आया, तो एक औरत मेरे सामने खड़ी हो गई और प्रार्थना करवाने लगी, उसने कहा की उसको हारमोन से परेशानी थी - "वे बिलकुल संतुलन खो बैठे थे" और इस के कारण उसे सरदर्द और रात में पसीना आना शुरू हुआ। यह उसे जगा देना था और फिर वह सो नहीं पाती थी। तो चाहे हमने उसके बारे में नहीं बताया फिर भी परमेश्वर ने उसे प्रार्थना के लिए मेरे पास भेजा ताकी मैं जान जाऊँ की जो मैंने सुना वह परमेश्वर की ओर से था। कई बार तुम पागलपन सा अनुभव करते हो - क्या यह मेरी ओर से है या परमेश्वर की ओर से? मैं प्रार्थना करता हूँ की मैं परमेश्वर की ओर से सफाई से सुनने के लिए तैयार रहूँ। वह मेरी प्रार्थना का जवाब दे रहा है।

वह चार साल का लड़का जिसकी पीठ पर केसर की गांठ थी। वह जाँच के लिए पिछले हफ्ते गया था और गांठ पूरी गायब हो चुकी थी। मैंने एक औरत के साथ प्रार्थना करी जिससे कंधे और गर्दन में पिछले दो साल से परेशानी थी। मैंने उस पर हाथ रखा और उसकी गर्दन और कंधे की माँसपेशियों को आदेश दिया की वे ढीली हो कर फैल जाएँ। मैंने आदेश दिया की सारा दर्द चला जाए और उससे कहा की वह कुछ ऐसा करे जिसको पहले करने से उसे दर्द होता था। जब उसने वैसा किया तो अभी भी कुछ दर्द और तनाव बाकी था। मैंने फिर उस के लिए प्रार्थना करी और उससे कहा की वह अपना हाथ गोल घुमाए। वह अपना हाथ सर के ऊपर तक उठा सकी जिसको पहले वह नहीं कर पाती थी।

एक महिला प्रार्थना के लिए आई। मैं समझता हूँ की वह नारफोक हस्पताल में पादरी थी। उसे कैंसर है इसलिए वह प्रार्थना करवाने आई। जब मैं किसी के लिए प्रार्थना करता हूँ जिसे कैंसर है तो, मुझे गुस्सा आजाता है - उस व्यक्ति पर नहीं परन्तु उस बिमारी पर क्योंकि मेरे लिए कैंसरे शैतान से बंधा हुआ है और उस में शैतानी शक्तियाँ हैं जो उस व्यक्ति पर डालता है। मैं मृत्यु की आत्मा को कैंसर की आत्मा को और डर की आत्मा को छोड़ कर जाने का आदेश देता हूँ। फिर मैं परमेश्वर से कहता हूँ की वह उन के शरीर को ठीक करे। उम्मीद है की यह औरत लौट कर आएगी तब हमें पता चलेगा की क्या हुआ।

अगले सप्ताह हम नौरगे, वीए, जाएंगे। विलियमस्वर्गकी एक स्थानिय समाचार की रिपोर्टर वहाँ होगी एक औरत जो पिछली सभा में आयी थी, उस ने इन समाचार पत्र वालों को बुलाया था की उस के कई सालों से कमर का दर्द था वह ठीक हो गया था। जब वह इमारत में घुसी तो किसी ने उस का अभीवादन किया और उस के कंधे पर हाथ रखा। तुरन्त उसका सारा दर्द गायब हो गया। सो उस ने उस समाचार पत्र के रिपोर्टर जो ऐण्डरसन को फोन कर के सब कुछ बताया और आने वाली सभा के लिए भी बताया। यह एक आश्चर्य जनक रात होगी।

पिछले सप्ताह के आखिरी दिनों में मार्क विर्कलर आए और उन्होंने ने हमारे लिए शुक्रवार और शनीवार को एक कार्यशाला आयोजित करी। शनीवार की रात जब पढ़ाई खतम हुई और मैं सफाई में मदद कर रहा था, तो एक महीला आई और उसने मुझ से उस के लिए प्रार्थना करने को कहा। उसे भयंकर कमर दर्द था और वह सो नहीं पा रही थी। मैंने अपने हाथ उस पर रखे, और यीशु के नाम में आदेश दिया की दर्द छोड़ कर चला जाए। उसके शरीर को चंगा होने को कहा और उस से वह करने को कहा जिस को करने से उसे दर्द होता था। वह तुरन्त झुक कर अपने पैर के अंगुठे को छूने लगी। और जब वह सीदी हुई तो उस के चेहरे पर एक बड़ी मुस्कराहट थी। उस का कमर दर्द जा चुका था। दूसरों ने भी यह देखा और चंगाई के लिए मेरे सामने तीन या चार लोगो ने लाईन लगा ली। परमेश्वर कितना अच्छा है।

इस रविवार की रात, कोरनरस्टोन में हमारी चंगाई की सभी होगी। पिछले हफ्ते हमने हमारे एक अंगुठे के लिए प्रार्थना करी थी। एक डॉक्टर ने कहा था की पूरा दाहिना घुटना बदलना पड़ेगा। प्रार्थना के बाद, बदलाव की आवश्यकता नहीं थी। मैं उम्मीद करता हूँ की जो बैहरी लड़की थी वह वापस आएगी। मैं जानना चाहता हूँ की वह सुन सकती है की नहीं।

तो यह कुछ कार्य हुए हैं। मैं तुम्हें फिर बताऊँगा की उस रविवार और अगले सप्ताह क्या होता है। सप्ताह के आखरी दिन अच्छा गुज़रे। आशीर्वाद के साथ। बिल।

सैम लियू और एलसी सायरस, स्टैफोर्ड, विद्यार्थीयो को प्रार्थना के अगुवे, फरवरी २००३.

जब हम (गैरी और कैथरीन) स्टैनफोर्ड में रह कर विद्यार्थी अगुवों को सिखा रहे थे की परमेश्वर की आवाज सुनना और प्रार्थना के द्वार बिमारो को चंगा करना विश्वविद्यालया प्रचार की शक्ति को फैलाना, तो परमेश्वर ने हमे जानकारी के कई शब्द दिये और परिस्थितीयाँ जिन्हे हमने उस सभा में चंगा करना है। उन में से एक था भयंकर घुटनो की चोटें। एक विद्यार्थी जिस का नाम सैम था उसे दो साल पैहले बर्फ पर स्कीईंग करते वक्त एक ऐक्सीडेंट के कारण उस घुटने मे भयंकर दर्द रहता था। हम सैम के लिए प्रार्थना करने लगै की पवित्र आत्मा आए और अपनी चंगाई की शक्ति सैम के घुटने पर उण्डेले। पहले कुछ नहीं हुआ सो हम ने परमेश्वर से कहा की वह हमे रुकाबटें दिखाएँ जो अभीषेक को पूरा नही होने दे रहा है। सैम ने कुछ उत्सुकताओं को परमेश्वर को सौप दिया जो उस के मन को भारी कर रही थीं और फिर जब हमने प्रार्थना करी की आत्मा अपनी चंगाई की तीव्रता को घुटने पर डाले तो उसे थोड़ा ठीक लगा। तब डेविड, जो एक और विद्यार्थी प्रार्थना अगुवा था, उस ने दर्शन मे देखा की परमेश्वर की चंगाई की शक्ति, ज्योति के रूप में सैम के घुटने में प्रवेश किया और घुटने की हड्डी और दूसरी हड्डी जो टूट गयीं थी उन को ठीक कर दिया। हम ने कहा, डेविड ने प्रार्थना करी, परमेश्वर कुपया अपनी आत्मा की चंगाई की ज्योती को सैम की टूटी हड्डीयों को जोड़ने के लिए भेज दो और उस मे यीशु के नाम से एक नयी ताकत डाल दो'। जब डेविड प्रार्थना कर रहा था, सैम ने महसूस किया की बिजली ने उसके घुटने मे प्रवेश किया, और सारा दर्द दूर हो गया। हम ने परमेश्वर का धन्यवाद दिया। एलसी, एक और विद्यार्थी प्रार्थना अगुवा, ने अपनी एक सहेली जो कैनेडा मे रहती थी, जिस के भी घुटने मे चोट के कारण भयंकर दर्द था, उस को फोन किया। उस ने अपनी दोस्त (जो एक मसीही थी) से कहा की वह अपना हाथ अपने घुटने पर रखे, और फिर एलिसा ने वही प्रार्थना करी जो डेविड ने करी थी की यीशु की चंगाई की ज्योती उस की सहेली के घुटने मे प्रवेश कर उसे ठीक करेगी। उस की सहेली जो फोन के दूसरी ओर थी, उस ने बिचली को, जो वह जानती थी की परमेश्वर की शक्ति है, अपने घुटने के अंदर जाते देखा और सारा दर्द गायब हो चुका था और उसे पूर्ण रूप से चंगाई मिली थी। कई महीनो के बाद एलसी कि सहेली एक ई मेल भेजा और कहा की

उस का घुटना अब तक चंगा और स्वस्त है। परमेश्वर का धन्यवाद हो।

जेसन पी, विलियम और मेरी कालेज, जौनुवरी २००३:

हमारे अनुभव मे चंगाई उतनी गहीरी नहीं होती जितनी होनी चाहिए, और वह स्थिती जिस में वह व्यक्ति चंगाई पाई थी वह वापस लोट आती है (जैसे यीशु ने चेतावनी दी है यूहन्ना ५:१४ में) यदि वह व्यक्ति अपने मन की समस्याओं को दूर नहीं करता जो चंगाई में बादा बन जाती हैं। इसलिए यीशु ने मत्ती ९:६ मे, पापो की माफी को लंगडे आदमी की चंगाई से जोड़ा (लुका ५:२४, मरकुस २:१०) और यही कारण है की याकुब ५:१६ मे कहता है की यदि किसी व्यक्ति ने पाप किया हो ता वह चंगाई की प्रार्थना के समय वह अपने पापो का इकरार करे: "इसलिए तुम आपस में हो सकता है।"

जब हम मसीहो पर चंगाई की प्रार्थना करते समय पवित्र आत्मा को सुनते है तो ज्यादातर समय में वह उतनी या और कोई भी रुकावट जो प्रार्थना के दौरान पता चलता है, मान न ले। एक बार हमने जोसन पी जो विलियम और मेरी कालोज में विद्यार्थी आराधना अगुवा के लिए हम ने प्रार्थना करी । जेसन को सभा में ही बुखार और गले में खराश शुरू हो गीयी। कैथरीन ने, मैं ने और दो अन्य विद्यार्थीयों ने प्रार्थन् करी की पवित्र आत्मा अपनी शक्ति और चंगाई की ज्योती को जेसन के गले और फेफड़ो पर छोड़े। हमने बुखार को और गले की खराश को डाँटा और आदेश दिया की वह उसे छोड़ कर चले जाएँ। यदि हम चंगाई को १ से १० तक को पट्टी पर नापे, तो १ का मतलब है पूर्ण चंगाई। जेसन १० से ८ तक पहुँचा, सिर्फ थोड़ी सी चंगाई देखी। फिर हम ने पवित्र आत्मा से पूछा की ऐसा क्या है जो उस को पूर्ण रूप से प्रवेश करने स रोक रहा है। एक विद्यार्थी को एक लड़की का चित्र उसके ध्यान मे आया। जब उस विद्यार्थी ने उस लड़की का ब्योरा बताया, तो पता चला की वह जेसन की पुरानी महिला दोस्त है जिसे जेसन ने माँफ करना है। उस ने उसे कुछ पिछली तकलीफों के लिए माफ किया और तुरन्त आत्मा की ज्यादा चंगाई का अभीषेक उस में समा गया और जेसन को झन झनाहट और गर्मी महसूस हो ने लगा। वह तेजी से साँस लेने लगा और पसीना छोड़ेने लगा (जब उसे बुखार था तब उस को पसीना नहीं आया था)। हम ने फिर से उस के बुखार और गले की खराश को टोका तो अभीषेक ज्यादा प्रबल हो गया और बुखार पूर्ण रूप से चला गया और गले की खराश १० से २ तक हो गई। वह इतना ठीक हो गया की वह ज्यादा आराधना करने लायक हो गया।

डार्यना एक विलियम और मेरी कालेज, डिस्मंबर २००२: विलियम और मेरी कालेज में एक सभा में विद्यार्थियों को चंगाई की शक्ति के लिए प्रार्थना सिखाते में ताकी वे प्रचार की शक्ति पा सके, डायना नाम एक महील सामने आई की उस के सर की ठण्ड के लिए प्रर्थना की जाए। जैसे हम ने पवित्र आत्मा से कहा की वह अपनी चंगाई की शक्ति को उस पर डाले और उस की तीब्रता उस के नाडी में रुकावट और गले पर डाले, तो परमेश्वर ने कैथरीन के दिमाग में डाला की उस ने कुछ विष्यों पर अपनी माँ को माफ करना है। जब उस ने किया, तो हम ने उस रुकावट को आदेश दिया की वह यीशु के नाम में उसे छोड़ कर चल जाए और पवित्र आत्मा से कहा की उसे चंगाई दे। उस ने अनुभव किया की वह रुकावट उठ गई है और उस की नाडी खुल गयी है और उस के सर से सूजन हट गयी है परमेश्वर की स्तुति हो।

क्रिस साई, एम आई टी, इटर वर्सीटी, अक्टुबर २००२: क्रिस एक मसीही है, जो एम आई टी, में पढ़ती है। उस ने हमें फोन किया और हमें कहा की हम फोन पर उस की चंगाई की प्रार्थना करें। हम ने प्रार्थना में यीशु परमेश्वर की आज्ञा माँगी तो उन्होंने ने कहा की वे उस फोन पर ही चंगा करेंगे। क्रिस का दाहिना कंधा टूट गया था जब वह आई वी सी एफ की सभा में गिर गाय था। उस के कंधे पर पट्टी बन्धी हुई थी। हम ने पवित्र आत्मा से कहा की वह आकर अपनी चंगाई की शक्ति की तीब्रता को उस के दाहिने कंधे पर डाले। हम ने दर्द और सूजन को डाँटा और आदेश दिया की कंधा ठिक हो जाए। पहले तो क्रिस ने कहा की उस २५% ठिक लगा। फिर हम ने परमेश्वर से पूछा की क्या कोई रुकावट है जो उस के अभीषेक को रोक रहा है और परमेश्वर ने हमें जवाब में बताया की उसको अपने भाई की तरफ चिन्ता और कुछ और समस्याएँ हैं जो उसने प्रभु के आगे रखना है। क्योंकि क्रिस एक चीनी है। हमने उसे प्रार्थना के द्वारा सारी चिन्ताओं को तोड़ने के लिए कहा, उस ने माता पिता और पूर्वजों को यीशु के नाम में माफ किया जो मूर्ती पूजक थे। परमेश्वर ने हम से कहा की हम चोट, मूर्ति पूजा और दैवी पूजा और बिमारी की आत्माओं को निकालें। हम ने वैसा ही किया। जब हमने फिर से प्रार्थना करी आत्मा की शक्ति को उस के कंधे पर डाल कर चंगाई देने के लिए, तो उस ने कहा की "महसूस किया की चीजे उस के कंधे में चारों ओर धूम रही हैं" सूजना कम हो गयी और दर्द ५०% कम हो गया। हम ने दूसरी बार उस से फोन पर प्रार्थना की तो उस ने ८५-९०% चंगाई का अनुभव किया। परमेश्वर की स्तुति हो।

क्रिस्टीयन एल; कोलज आफ विलियम और मेरी, अक्टूबर २००२:

आराधना के बाद और चंगाई की प्रार्थना के प्रशीक्षण के वक्त, परमेश्वर ने हमें शब्दों के ज्ञान से बताय की किसी की कलाई में दर्द है उस चोट की वजाह से जो उसे तीन सप्ताह पहले लगी थी। पता चला की एक विद्यार्थी जिस का नाम क्रिस्टीयन था उसे वह दर्द था। वह विलियम और मेरी में अलटीमेट फ्रिस्बी टीम का नेता था और सभा से तीन सप्ताह पहले एक खेल खेलते में चोट लग गई थी। हम ने उस पर प्रार्थना करी की पवित्र आत्मा आए और अपनी चंगाई की शक्ति को क्रिस्टीयन पर छोड़े और अपनी तीव्रता उस की कलाई पर डाले। परमेश्वर के कहने पर हम ने दर्द का छोड़ जाने को कहा। क्रिस्टीयन ने परमेश्वर की शक्ति को अनुभव किया परन्तु कलाई के दर्द में कुछ कमी नहीं आई। हमने परमेश्वर से रुकावट का कारण पूछा। परमेश्वर ने मेरे मस्तिष्क में बताया की "उसका भाई"। उसने अपने भाई को माफ करना है। यह उसका सगा भाई नहीं था परन्तु मसीह में उस का भाई था जिस के साथ हास्टल में एक साथ रहना मुश्किल था। उस ने परमेश्वर के कहने पर उसे माफ कर दिया। हम ने फिर प्रार्थना करी की पवित्र आत्मा अपनी चंगाई की तीव्रता को क्रिस्टीयन की कलाई पर बढ़ाये। हमें परमेश्वर द्वारा आदेश मिला की हम दर्द को उसकी कलाई छोड़ कर जाने को कहे। इस बारी उस का दर्द पूरी तरह चले गया और क्रिस्टीयन ज़मीन पर लेट कर हाथों के बल डंण्ड बैठक करने लगा और उसकी कलाई से दर्द बिलकुत गायब था। परमेश्वर की स्तूती हो। परमेश्वर का धन्यवाद है।

हरस्वर्ग, जरनमी, इन्नर हीलिंग कावफ्रेन्स, मार्च २००९:

कैथरीन और मैं (गैरी) एक प्रौढ अवस्था का आदमी जिस का नाम सैबैस्टीयन औलबर्च था, उन को घुटने में रोग के कारण वह कुछ उठा कर चल नहीं पाते थे। हमने पवित्र आत्मा से कहा की वह यीशु की चंगाई की ताकत सैबैस्टीयन पर डाले और उसके घुटने पर तीव्रता बढ़ाए। जब मैं यीशु के चेहरे की ओर देखा तो मेरे मन की आँख ने जाना की सैबैस्टीयन के खानदान में टूना टोटका और जादू का आचरण किया जाता है जिस की क्षमा परमेश्वर से माँगनी है। सैबैस्टीयन ने इस बात को माना और कहा की उस के माता पिता जादू टोना का आचरण करते हैं। उस के परमेश्वर से अपने और अपने माता पिता के पापों का इकरार कीय और क्षमा माँगी। हम

ने सैबैस्टीयन के सब शापों को तोड़ा और परमेश्वर के बताए अनुसार उस के घुटने में से उन पापों को जिस को उस ने अभी माना है उस के घुटने को छोड़ कर जाने का आदेश दिया। फिर हम ने परमेश्वर के बताए अनुसार दर्द को घुटने में से निकल जाने का आदेश दिया। सैबैस्टीयन को हमारी प्रार्थान से कुछ अनुभव नहीं हुआ सिर्फ इसके की उस ने परमेश्वर की शांती को अनुभव किया और घुटने में का दर्द चल गया। हम ने पवित्र आत्मा से कहा की वह उस को घुटनो को मज़बूत बनाए और वहा की कोमलास्थि को दूबारा बानाए। हम ने परमेश्वर के निर्देश अनुसार प्रार्थना खतम की और पवित्र आत्मा से उस के चंगाई के कार्यों को यीशु के खून की मोहर लगाने को कहा। अगलो दिन सैबैस्टीयन ने बताया की उस के घुटने पूर्ण रूप से ठीक हो गये थे। जब सुबह उठ कर उस ने व्यायाम किया तो उस के घुटनों में वह दर्द नहीं था। उतने सालों में पहली बार वह घर के सामने से भारी पत्थरों को उठा सका और उसे घुटनों में बिलकुल भी दर्द नहीं हुआ। परमेश्वर कितना अच्छा है।

ब्रेथरन चर्च, हर्सब्रक में उपदेश के बाद जब प्रार्थना का समये आया, तो हमने परमेश्वर से पूछा की वह उस कलीसीया में कौन सी स्थिती को सुधारना चाहता है। जब मैं ने मन की आँखों से परमेश्वर की ओर देखा तो उन्होंने ने मुझे दिखाया कीसी व्यक्ति का जिस के नाड़ी की रुकावट करीबन तीन हफ्तों से थी उसे ठीक करना चाहते थे। इस को जब कलीसीया को बताया गया तो एक महीला आगे आई। उसे तीन हफ्तों से लाडी में रुकावट की समस्या थी। हम ने उस से पूछा की तीन हफ्ते पहले क्या हुआ था। उस ने बताया की तीन हफ्ते पहले उसे एक नौकरी छोड़नी पड़ी क्योंकि जिन लोगों के साथ वह काम कर रही थी, उन के साथ काम करना निरर्थक था। हम ने उसे से प्रार्थना में कहा की वह उन लोगो को माफ करदे। उस ने उन्हें माफ किया और हमने पवित्र आत्मा से कहा की वह अपनी चंगाई की शक्ति उस की नाड़ी में डाल कर सब रुकावटों को खोल दे और वैसा ही हुआ। उस के सर मे नाड़ी की हर रुकावट दूर हो गई और तीन हफ्तों मे पहली बार उस ने अनुभव किया कि उस की नाड़ी (साईनस) खुल गई है। परमेश्वर ने उसे पूर्ण से चंगाई दी।

प्रीढ़ा एक बुटी महिला थी जिस ने हमारे कहने पर, अपने परीवार के सदस्यों को जिन्होंने उसे चोट पहुँचा रहे थे, उन्हें माफ किया और उस के तुरन्त बाद उस ने अनुभव किया की उस को कमर दर्द और बायें पैर के दर्द से पूर्ण रूप से चंगाई मिली।

हम ने लोगों को तीन तीन के झुण्ड में बाँटा ताकी वे एक दूसरे के लिए अंदरूनी चंगाई के लिए प्रार्थना करना सीखें। जब वे एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने लगे तो कई लोग थे जिन्हें परमेश्वर ने मुक्त किया। इन में से सबसे विशिष्ट बदलाव एक महीला में आया, जिस के चेहरे पर आत्मिकता का ना होना, साफ नज़र आ रहा था। उस का चेहरा ऐसे लग रहा था जैसे उस ने काली जाली से अपना चेहरा ढाँक रखा हो या उस के चेहरे पर किसी ने चेहरे पर तैलीय हलकी कालिक लगाई हो। उस की लड़ाई मृत्यु का डर और बच्चों से दूर हो जाना, थी। प्रार्थना में उस ने अपने इन डरों को परमेश्वर को सौंप दिया और इन सब से उस मुक्त करने को कहा। यीशु उसे उस दृश्य को दिखाने लगे जहाँ उस के पिता उसे डाँट रहे थे। उस ने अपने पिता को माँफ किया और फिर हम ने यीशु से कहा की वह उस के ख्यालो में आए। जैसे ही उस ने अपने ध्यान में यीशु को देखा जिन्होंने उस के पास खड़े हो कर अपना हाथ उस के कंधे पर रखा और उसे अपने अनकहे प्यार का सहारा दिया। तुरन्त उस के दर्द जो पिता की डाँट से मिला था और मृत्यु के डर से उसे छुटकारा मिल गया। उसकी आँखें बन्द थी जब वह हम से यह सब बता रही थी की यीशु क्या कर रहे हैं। फिर वह मुस्कुराने लगी जब उसे ने अनुभव किया की उस की यादाशत में से डर जा चुका था। एक दम से उस के चेहरे का कालापन चला गया और उस का चेहरा पवित्र आत्मा की उपस्थिती से चमकने लगा। उस के चेहरे ने अपना स्वभाविकपन ले लीया और एक हलकी सी चमक के साथ। यह अदभुत था। परमेश्वर ने उसे मुक्ति किया और उसे अब मृत्यु का डर नहीं था या बच्चों से दूर होने का डर, जो प्रार्थना के पहले उस में था।

ताईवान से जैक और विक्टर, अप्रैल २००: ताऊवान में चंगाई और अंदरूनी चंगाई की शिक्षा सभा से लौटते वक्त, मैं (गैरी) एक हवाई जहाज, में ताईवान से सेन प्रानसिको जा रहा था। मैं दो चीनी चुवकों के साथ बैठा हुआ था जिन के नाम, जैक और विक्टर थे। जैक बहुत बातूनी था। वह मेरे बारे में सब जानना चाहता था और यह भी की मैंने ताईवान में क्या किया। सो मैंने उसे बताया की मैं एक मसीही शिक्षालय का प्राध्यापक हूँ और मैं गिरजाधरो के अगुवों को सिखाता हूँ की आज के दिनों में यीशु बिमारों को कैसे चंगा करता है। तुरन्त जैक मुझ से धर्म पर बात करने लगा। उस ने मुझे बताया की वह नाईवान में एक केथोलिक स्कूल में पढ़कर बड़ा हुआ है और वह यीशु के बारे में जानता है। परन्तु यह साफ था की उस ने अपने आप को यीशु को नहीं सौंपा था। उसने यह भी बताया की एक प्रचारक ने उसे बाईबल देकर पढ़ने को कहा था। परन्तु जैक ने कई बहानों की सूची बना दी की वह यीशु पर या बाईबल में क्यों विश्वास नहीं करता है। तो मैंने उसे बातना शुरू किया की यीशु ने कैसे उन लोगों को चंगा किया जिन्हो भयंकर कमर दर्द और

गर्दन दर्द की समस्या थी और यह चंगाई उन को उस वक्त मिली जब उन्होंने परीवार की मूती पूजा का खण्डन किया और छोड़ दिया और जब हम ने प्रार्थना करी तो कैसे यीशु ने शैतानों से भी लोगों को मुक्त किया। जैक की आँखें अचम्बे से खुलने लगी जब उस ने सुना की यीशु ने क्या किया है। जल्द ही जैक हवाई जहाज़ के हमारे हिस्से में चिल्लान लगा की, "यीशु कितना शक्तिमान है। यीशु कितना शक्तिमान है।" कुछ और चीनी मसीही जो हमारे साथ बैठे हुए थे, वो मुझ से मुलाकात करने लगे क्योंकि जैक चिल्ला ने लगा था की यीशु कितना शक्तिमान है। फिर जैक ने मुझ से पूछा की क्या यीशु उस के पेट के दर्द को और विक्टर के कमर दर्द को दूर कर सकता है। तो मैंने अपनी आत्मा मे परमेश्वर से पूछा की क्या वह चाहता है की मैं उन के लिए प्रार्थना करूँ? मुझे जवाब मिला, "बिलकुल, प्रार्थना करो, मैं उन्हें चंगाई दूँगा।" (हम ने उस बात को जाना की परमेश्वर अपनी शक्ति और प्यार को दिखाने के लिए गैर मसीहो को और खोजीयो को तुरन्त चंगा करता है।) तो उन की अनुमती से मैंने अपने हाथ को जैक के पिछे से लेते हुए, विक्टर की कमर पर रखा और धीरे से पवित्र आत्मा से यीशु की चंगाई की शक्ति को छोड़ने के लिए कहा। मैंने अपने हाथ को गर्म होते महसूस किया और समझ गया की अभीषेक हो रहा है। मैंने दर्द को ढाँटा और निकल जाने का आदेश दिया। विक्टर के जीवन मे पहली बार ७०% दर्द से उसे छुटकारा मिला और जब तक हम सैन फ्रान्सिस्को पहचँते कई घण्टों बाद बाकी का दर्द भी खतम हो चुका था। जैक के पेट में से भी, मेरे प्रार्थना करने पर दर्द निकल गया। मैंने उन से कहा की यीशु चाहता है की वे अपना जीवन उसे सौप दे, क्योंकि उस ने अपना जीवन क्रूस पर हमारे लोए बलीदान किया था। वे ध्यान से सुनते रहे। यह सच मे अचम्बे की बात थी की कैसे परमेश्वर ने इन दो चीनीयो को अपना प्यार और क्रूस की शक्ति की जानकारी दी।

ताईचुंग हीलींग कान फ्रंस अप्रैल २००: ताईतव इन्नर हीलींग कॉनफ्रेंस, एल्डर साईमन और पास्टर माईक और अभी बदलाव में आए, अप्रैल २०००:
ताईनन इन्टर चर्च हीलींग सरविस, जून 1999

गैरी, स्पींग १९९८: मैं, वर्ल्ड प्रेयर सेंटर, कोलोराडो सिगस, को.में, मैं.डॉ. सी पीटर वागवर जो ग्लोबल हार्वेस्ट मिनिस्ट्री टीम में है, उन के साथ एक दोरे पर था। मैं यीशु को अपने मन की आँखो से अपने से आगे देखने की कोशीश कर रहा था, जब अचानक यीशु ने एक चीनी पास्टर, जो ताईवान से था,

उस की ओर इशारा किया। वे एक झुण्ड के साथ थे और उन का नाम फिलिपथन था, वे ताईवन, ताईवान से थे। मेरे मास्तिशाक मे एक चित्र आया की इस व्यक्ति के बाये हाथ मे चोट या दर्द है। जब मैंने उस से बात करी तो उस ने बताया की उस की कोहनी मे दर्द है और जब मैंन उन के साथ मिलकर प्रार्थना करी और पवित्र आत्मा से कहा की वह अपना आभीषेक उस पर छोड़े, तो वह व्यक्ति काँपने लगा। पवित्र आत्मा से निर्देश पा कर मैंने दर्द को डाँटा और तनाव को उस की कोहनी से मुक्त होन को कहा। वह पूर्ण रूप से चंगा हो गया। फिर यीशु ने एक जोड़े की ओर इशार किया। उन का नाम चक और जैनिफर था। वो कैलीफोर्नीया के बे क्षेत्र के पास्टर थे। जब यीशु ने उन की ओर संकेत किया तो मैंने पूछा पिता इस जोड़े के लिए आप के मन और मास्तिष्क में क्या है"। उन्होंने मुझे चित्र दिखाया जिस मे वह आदमी को ऊँचाई से डर था और औरत मे कोई शारीरिक कमज़ारी। जब मैंने उन्हे यह बताया, तो यह सच निकला। हमने उस की पत्नी के लिए प्रार्थना की और वह चंगीगी हो गई और फिर हम ने उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करी और उस से कहा की जीवन भर की ऊँचाई का डर वह परमेश्वर पर छोड़ दे और उस डर की आत्मा को निकाल दिया। कई महीनो बाद उसने मुझ से सम्पर्क किया और बताया की वह अब उच्चाई से नहीं डरता।

रैडी हिल, रीजेन्ट स्टूडेंट फाल १९९५:

परवेज़ कार्मोजड़, जनवरी १९९५:

केसी और लिड़ा , और डायन और टॉम, मार्च १९९४:

जोआन हाँफमैन, फरवरी १९९४:

माईक बार्टी, जनवरी १९९४:

गैरी, स्प्रिंग १९९३: मैं हवाई जहाज से लॉस एंजलस से जैनवर जा रहा था। मैं बैठा तो तुरन्त मेरी आत्मा व्याकुल हो उठी की मैं यीशु की उपस्थिती को अनुभव करूँ और सुनूँ। मैंने जब यीशु की उपस्थिती को अनुभव किया तो मैंने उन्हे मेरे बगल मे खड़े होकर मेरे पड़ोस में बैठे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने को कहा, "इस व्यक्ति के लिए प्रार्थना कर। यह भटका हुआ है"। मैंने उस से बातचीत करनी शुरू की तो पता चला की उस का नाम जेनन है और वह एक वकील है। हम कम्प्यूटर के बारे मे बात करने लगे और थोड़ा बहुत विश्वास और परमेश्वर के बारे में भी क्योंकि उसे पता चला की मैं एक मसीही सम्पादक के लिए काम करता था। जब जेनन और मे आत्मा मे उस से बात कर रहे थे, तो मैंने अपनी आँखे यीशु पर लगाए रखी और अपनी साँसो

मे अन्नय भाषा में प्रार्थना करी, ताकी परमेश्वर कुछ ज्यदा बता सके। मेरे मस्तिष्क की आँख मे उस के पिता का चित्र आया जो बहुत ही कठोर और निर्दय था और मैंने मेरी आत्मा ने मुझे से कहा की, "उस की एक बहन है जो उस के लिए प्रार्थना कर रही है।" जब मैंने यह सब बाते उस को बतायीं तो वह चकित हो गया की यीशु ने मुझे यह सब कुछ दिखाया। जेनन एक पिछडा हुआ कैथोलिक था और उस की बहन आत्मा से भरी कैथोलिक जो साऊथ बेन्ड, इंडियान में रहती थी और जेनन के लिए प्रार्थना करती रहती थी। यह परमेश्वर के बारे मे मामूली बातचीत, परमेश्वर के साथ एक मुलाकात बन गयी। वह जानता था की मैं यह सब जान जाऊँगा क्योंकि यीशु सच्चा था और वह हवाई जहाज़ में उपस्थित था और मुझे सब बताता था। वह उत्सुक हो गया। फिर यीशु ने उस के फेफड़े की ओर इशारा कर के कहा की उसे सांस लेने मे तकलीफ होती है और वह चाहता था की मैं चंगाई के लिए प्रार्थना करू। जब मैं ने उस बात को जेनन से पूछा तो उस ने मुझे बताया की उस का जीवन भर का अस्थमा है और प्रार्थना का स्वागत किया। मैंने पवित्र आत्मा से कहा की वह अपनी शक्ति को जेनन के फेफड़े पर छोड़ दे और मैं रुकावट को डाँटना शुरू किया और उस के फेफड़े को यीशु के नाम मे छोड़ने को कहा। जेनन ने अभीषेक की गर्मी को फेफड़े और कमर मे महसूस किया। उस ने रुकावट को निकलते देखा और परमेश्वर ने उसे पूर्ण रूप से ठीक कर दिया था और वह बिना किसी तकलीफ के साँस ले पा रहा था। यह बिलकुल ही अवीश्वासीए था।

गैरी, डिस्मबर १९९३ (सरकी ठण्डक को बिना अभीषेक के अनुभव के ठीक हो गया)
फ्रड, वाईयाई मैरेज वीकएण्ड, अक्टूबर १९९३:

जोनायन ग्रेग, अप्रैल १९९३:

ऐलिस ग्रैरट, जून १९९२:

हर्ब मार्टिन्स, जनुअरी १९९२:

बिल नौर्डल, जनुअरी १९९२:

जौएल, मायो क्लीनिक, रोचेस्टर, एम एन, सितम्बर १९९१:

डेविट होल्मस, सितम्बर, १९९१:

ज्पूइश जैक, इन लाईन एठ सिज़लर, जुलाई १९९१:

ख्या किया हुआ ग्रंथ सूची

भाग - १

पद्राह प्रचार के विद्यवान और गिरजाघर के अगुवे शक्ति के प्रचार की संस्था के आलोचन को, और इंजिल संबंधी, अध्यात्मविद्या संबन्धी, श्रुतिभाष्य करने वाला, इतिहास संबन्धी, पादरी का मनुष्य शरीर जाँच विद्या और चिकित्सा संम्बाधी बुनियादों से चंगाई और आत्मिक उपहारों की मुख्य स्थाना और प्रबलता को संम्बालते हैं।

ग्रेडम, वेहन ए.एड.आर मिराकुलस गिफ्तस फौर टुडे? (क्या चमत्कारी उपहार आज के लिए है?) चार अभि प्राय; रूकावट, खुला परन्तु सतरक, तीसरी लहर और पेंटीकोस्टल। करीस्मैटिक। ग्रेण्ड रैपिडस, एम आई ज़ोडखैन, १९९६, ३६ पृष्ठ। चार प्राचारके विद्यावदों ने अपना अभिप्राय आत्मिक उपहारों पर रूपांकित किए हैं। इस पुस्तक में जो सब से बड़ा चित्र दिखता है वह यह है कि ज्यादा प्रचारक रूकावट के स्थान से हट गए हैं और अधिक बाईबल की सच्चाई की दृष्टि को अपनाया है, जो खुला परन्तु सतरक और तीसरी लहर, आत्मिक पेंटीकोस्टल करिस्मैटिक आत्मा के उपहारों के दृष्टियों के बीच का स्थाना है।

क्राफ्ट, चार्लस एच ताकत के साथ मसीहत, ऐन आखर एम आई: सर्वेट पबलीकेशनस, १९८९, २०५ पृष्ठ। कागज सूची दाम \$ ८.९९ (जैसे १२/९७ में)। एक मनुष्य शरीर जाँच शास्त्र विद्वान जो स्वयं चंगाई संस्था से जुड़े हुए हैं। वे जाँचते हैं की कैसे कीसी मनुष्य की दुनियाबी दृष्टि का बाईबल की विद्या और समकालीन प्रचार समीतियों की चंगाई और चमत्कारी विद्या पर, कैसे असर पड़ता है।

वैगनर, सी.य पीटर, चवित्र आत्मा की तीसरी लहु: चिन्हो और चमत्कारों की शक्ति से टकराव, ऐन आरबर, एम आई: सर्वेट, १९८८, १३३ पृष्ठ। चिन्हो और चमत्कारों के प्रचार और मसीहत की उन्नती पर क्या असर पड़ता है उस का अच्छा विवरण है। वागनर एक पूर्ण विश्वविद्यालय के प्रध्यापक, चार्लस क्राफ्ट, दोनों जौन विम्बर के प्रचार नमूने के प्रस्ताव करने वाले बन गए। विमंर. जिन का पेंटीकोस्टल या कीरीस्मैटिक से कोई लेना देना नहीं था, उन्होंने सामन्य रूप से एक स्थानीए गिरजाघर चालू किया और उस तरह का प्रचार करना चाहा जैसे इंजील और प्रेरितों के काम में होता था। १९८२ में जान ने फुल्लर पाठशाला में एम सी ५१०"

चिन्ह, चमत्कार और मसीहत की उन्नती पढ़ाना शुरू किया। यह वह पाठशाला थी जिस को कुछ लोग सांप्रदायिक प्रचार का हृदय कहते हैं। यह सच है की जिन्होंने बिमारों के लिए प्रार्थना करी वे सम्प्रदायिक प्रचार के लिए किसी प्रकार की धमकी नहीं थे, ये आगे चलकर ऐनाहिम वाईनयाई बन गए कई लोगो को यह बात परेशान कर रही थी की कई लोग परमेश्वर की शक्ति से सीधे चंगे हो रहे थे विवाद विम्बर के पाठ से नहीं था परन्तु उस के प्रचार समय, से था जब ठीक वहीं शिक्षाग्रह में बिमार लोग चंगा होने लगे और शैतानो को बहार निकाला जाने लगा। सम्प्रदायिक प्रचारो पर नए तीसरी लहर नमूने का असर होने लगा जो चंगाई और प्रचार की शक्ति पर निर्भर है, जिसे विम्बर ने प्रारम्भ किया और वागनर, क्राफ्ट और दूसरों द्वारा विशिष्ट संदर्भ से पढ़ाया गया।

विम्बर, जॉन और केविन स्पिंगनर, शक्ति प्रचार (संशोधित प्रकाशन), सेन फ्रंसिको, सी.ए.हारपर & रो, १९९२स २५। पृष्ठो कगज सूची दाम \$ १०,००० (१२१९६ को)। एक सीधा प्रस्ताव की जौन विम्बर जो वाईयार्ड अगुवा थे, उन के प्रचार के कार्यों पर चिन्हों और चमत्कारों का महात्व। इन्होंने एक नया द्रिष्टीकों बानाया जिसे तीसरी लहर के नाम से जाना जाता है जो आत्मिक बप्तिस्मा, आत्मा के उपहार, लागों को शिक्षा देना और बाईबल सम्बंधी लोगों को भेजना प्रार्थना के ५ नमुने और जिन्होंने चंगाई के स्थान पक्ष और प्रचार में आत्मा के उपहारों पर दबाव डाला। विम्बर ने इन दृष्टिकोनों को दुनिया भर में मशहूर एम सी ५१० " चिन्ह, चमत्कार और मसीही बडत" में प्रस्ताव किया है, फुल्लर सैमिनरी, १९८० में।

संस्तुति करना (शक्ति प्रचार) डीरे, जैक, आत्मा की शक्ति से चकित, ग्रेण्ड रैपिड्स, एस आई: जोडशैन संपादन ग्रह, १९९३, २६६ पृष्ठ कपडा सूची दाम \$१७.९९ (१२९१६ में)। पहले डल्लास सैमिनरी में प्राध्यापक, उन्होंने ने रुकावट लाने वालों के दावे को ठुकाराया की अब परमेश्वर चंगाई नहीं देता और आत्मा के फल मिलना, पहली शताब्दी में ही कम हो गए था।

परमेश्वर की आवाज से चकित। ग्रेण्ड टैपिड्स, एम आई जोडखैन संपाटकीए ग्रह, १९९६, ३८४ पृष्ठ डल्लास सैमिनरी के पूर्ण प्रध्यापक ने आगे और झटका दिया रुकावट लाने वालों के दावे को की भविष्यवाणी खतम हो गयी है और परमेश्वर की आत्मा अब उस के बच्चों से नही बात करती।

मैकमुल्लन, रामसे, क्रिस्टीयनाईजिंग द रोमन अम्पायर यू हेवन, सी.टी. येल यूलिवर्सिटी प्रैस, १९८४, ११९ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$१३.०० (१२१९६ में)। येल

में इतीहास के प्राध्यापक विवाद करते हैं की शैतान से छुटकारा एक मुख्य कारण था की तीसरी शतापदी में, मडिटेरेरीयन दुनिया में और यूरोप में मसीहत का फैलना।

पायचेस, डेविड, स्थानीय गिरजाधरों में आत्मिक अपहार उन्हें परमेश्वर के लोगो की प्रचार समीती में कैसे इन को जोड़ा जाए मिनियापौलिस, एम एन. बेतैनी घर, १९८५, २८८ पृष्ठ। आत्मिक उपहारों पर एक बेहतरीन पूर्ण दृष्टि और सारांश में एक विवाद इन उपहारों के उपयोग पर जो एक तीसरी लहर को दर्शाता है और लिखा है एक धर्माध्यक्ष से शासित पादरी ने।

स्प्रिंगर केविन एड पश्चिमी दुनिया के मसीहो का शक्ति से मुकाबला, सैन फ्रांसिस्को, सीए, हारपर और रो १९८८, २१६ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ १०.९५ (१२१९६ में)। सोलाह मसीही अगुवो ने अपनी निजी साक्षियों द्वारा बताया की वे चंगाई प्रचार समीती में कैसे आए और हर एक जन जौन विम्बर से कैसे प्रभावित हुए। विम्बर ने परिचय लिखा और आखिरी शब्द भी। फुल्लर के प्रध्यापक चार्लस क्राफ्ट और पिटर वागर भी हैं।

वागनर सी. पीटर, आत्मिक शक्ति और मसीहत की उन्नती, आलटोमेट स्प्रिंग्स, एफ एल : क्रीऐशन हाऊज़, १९८६, १४६ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ७.९९ (१२१९६ में)। लैटिन अमेरीका में पैंटिकोस्टल की उन्नती।

भाग- २:

चंगाई और शैतान से मुक्ति प्रचार समीती सम्पूर्ण संस्तुती (चंगाई और शैतान से छुटकार) एण्डरसन नील टी. दूसरो की मदद से मसीह में स्वतंत्रता, वचुरा, सीए रीगल, १९९५। मसीह में स्वतंत्रता प्रचार समीती के संस्थापक द्वारा लिखी गयी जो तालबोट सैमिनरी में प्रास्थापक थे। अन्होंने अंधकार पर विजय और द बॉण्डेज प्रेकर जैसी मानी हुई पुस्तके भी लिखी है, वे हमे समझाते है की मसीह मे हमारी पहचान की शक्ति को सीखना है ताकी हम मस्तिशक की लड़ाई जीत सके और मसी मे सच्ची स्वतंत्रता पा सकें, उस सच्चाई के द्वारा जो हमे स्वतंत्र करती है।

बलू, केन, चंगाई का अधिकार, जौऊनर्स ग्रोव, आई एल इटखर्सीटी प्रेस, १९८७, १६१, पृष्ठ, कागज सूची दाम \$८.९९ (१२१९६ में)। यहाँ तीसरी लहट की

दृष्टि में चंगाई का विवाद है, जिन्हे लेखक के कई चंगाई के अनभवों द्वारा सिद्ध किया गया है।

ब्राऊन, माईकल एल इसराएल का डिवाइन हीलर, ग्रैण्डस, एम अई: ज़ोडर्वेन, १९९५, ४६२ पृष्ठ। पहल पूर्णरूप से सक्षम इलाज की परमेश्वर दैवी चंगाई देने वाला है। पुराने नियम में चंगाई और नए नियम में चंगाई प्रचार संस्था की झलक। यह विद्यवान तौर से इलाज है जो, परमेश्वर की चंगाई की शक्ति के बाईबल में सिद्धांत और चंगाई स्रचार समीती डॉ.ब्राऊन, एक यहूदी चंगाई प्रचारक, चिन्होंने पीएचडी भी की, न्यू पार्क विश्वविद्यालय से, करीबी पूर्वी भाषाओं में और वे इब्रानी बाईबल और यहूदी विद्या के विद्यावान है।

कौमिस्की, ऐण्डरू, परस्यूइंग सेकशुअल होलनैस: यीशु कैसे संगलैगी को चंगा करता है, लेक मेरी, एफ एल: क्रीएशन हाऊज़ १९८९, २०७ पृष्ठ। एक मज़बूत, बाईबल से सम्बंधित और सचेतन तरीके से और पवित्र आत्मा से परीपूर्ण प्रार्थना के साथ। जिसे लिखा है एक पूर्व संगलैगी ने, जो अब बाईनयार्ड में पादरी है। यह उन मसीहों की मदद करती है जो संगलोंगी से लटते और उन को प्रचार करते हैं।

फलिन, माईक और दोग ग्रेग, अंदरूणी चंगाई एक छोटी पुस्तक जो अप की और दूसरों सी सहायता कर सकती है डाऊनर्स ग्रोव, आई एल: इटेर वर्सीटी प्रेस, १९९३, २२२ पृष्ठ। बाईबल पर आधारित, आत्मा से भरबूर प्रार्थना के नमूने जो अंदरूणी चंगाई दिलाते है। इवैजलिकल ऐपीस्कोपल पादरी और इबैजलिकल प्रेस्बिटेरीयन पादरी द्वारा लिखित।

यह दोनो चंगाई की प्रचार समीती मे बहुत परीपूर्ण हैं और यह चंगाई की प्रार्थना सिखाते हैं, उर्बाना विद्यार्थी मिशन सभाओं में और प्रार्थना के कई समूह को तैयार करते है चंगाई के लिए।

गिबसन, नोएल अण्ड फिल, इवेकिंग डेमोनिक इग्लैण्ड न्यू वाईन प्रेस, १९९३, ३११ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ७.९९ (१२१९६ में)। डौरिस वागनर का कहना है की यह उन पादरीयों की मदद करेगा जो शैतान मुम्ति प्रचार समीती में है।

होरोबिन पिटर, मुक्ति के द्वारा चंगाई : दबिबलिकल बेसिस, केंट, इंग्लैण्ड: सौवरैन वर्ल्ड :१९९४, मुक्ति प्रचार समीती की बुनीयाद पर बढीया दृष्टि।____, मुक्ति

के द्वारा चंगाई २ : द प्रैक्टिकल मिनिस्ट्री, केंट, इंग्लैण्ड सौवरेन वर्ल्ड; १९९५।
मुक्ति समीती के मुख्य विचारों पर गहराई से मार्ग दर्शन।

हुंटर, चार्लस एण्ड फ्रांस, हैण्डबुक फार हीलिंग, वाईदेकर हाउस, २००१।
इस किताब में १७५ सामान्य बिमारीयों की सूची है और यह हमें बताती है की
प्रार्थन करते समय वह कौन सी खास जगह है जहाँ हमें हाथ रख कर प्रार्थना
करना है। खास शैतानों को निकालना और खास शरीर के भाग जिन्हें आदेश दे
कर चंगा किया जा सकता है। डब्ल्यू (३), सीएफ हंटर औरग /< एचटीटीपी ://
डब्ल्यू (३) सीएफ हंटर औरग/> हंटर की हर किताब की सूची है।

केलसे, मौर्टन टी, सायकौलजी, चिकित्सा और मसीही चंगाई, सैन
फ्रांसिस्को, सी ए : हारपर और रो, १९८८, ३६३ पृष्ठ। पवित्र शास्त्र में, गिरजाघरों
के इतिहास में और आज की दुनिया में चंगाई प्रचार समीती पर एक बुद्धिमान
और सर्तक दृष्टि। यह लिखा है एक कै था लिंक विध्वान जो नौटरे डेम
विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं और उन्होंने स्वयं चंगाई की प्रार्थना का अनुभव किया
है।

क्राफ्ट, चार्लस एच. डिफीटिंग डार्क ऐंजलस, एन आरबरस, एम: सर्वेंट
पब्लिकशानस, १९९२, २४३, पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ८.९९ (१२९१६ में)। एक पूर्ण
और श्रवणात्मक छोटी पुस्तक जिस में शैतानों से मुक्ति के बारे में बताया गया है। यह
फुल्लर से मिनीरी के एक प्राध्यापक ने लिखी है जो आपने स्वयं के अनुभवों से
प्रेरित हुए हैं जो चंगाई की प्रार्थना और मुक्ति प्रार्थना प्रचार समीती से मिली है।

—, गहरे घाव, गहरी चंगाई, एन आरबर, एम आई: सर्वेंट १९९३, २९५ पृष्ठ। फुल्लर
सेमिनरी प्राध्यापक जिन्हें चंगाई प्रचार समिति का अनुभव है उन्होंने यह किताब
लिखी है जो आत्मिक लड़ाई और अंदरूनी चंगाई के रिश्ते को बगती है।

—, मैं तुम्हें अधिकार देता हूँ, ग्रेण्ड रैपिडस, एस आई, चोडगे बेकर, १९९७। यह
हमें परमेश्वर के राज्य में, हमारा मसीह में आत्मिक अधिकार जो अंधेरे के राज्य के
विरुद्ध है, उसे सिखाता है।

मैकनट, फ्रांसिस, चंगाई (संशोधित संपादन) आल्टामोंदे स्प्रिंगस, एफ एल:
क्रिएशन हाउस, १९८८, ३३३ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ७.९९ (१२९९६ में) यह

किताब एक पूर्व कै थोलिक पादरी द्वारा लिखी गई है। इसे चंगाई प्रचार समीती पर एक अत्युत्तम मूल ग्रंथ माना जाता है।

....., चंगाई देने की शक्ति, ऐव मरीया, १९९२ एचटीटीपी:// डब्ल्यू (३) क्रिस्तीयन हीलिंग मिनि, ओरग/ मैककौनफ. एच टी एम यह फ्रांसिर मैकनट की पूर्व पुस्तक "चंगाई" के बाद की पुस्तक है, उस से हमें पता चलता है की उन की दैवी सौच के विचारे में कितनी उन्नती हुई है। यह अधिकतर उद्धारणों और अनुभवों परमेश्वर आधारित है। महत्व शारिरिक चंगाई पर दिया गया है बजाए विचारों के चंगाई के।

ओस्बोर्ण.टी.एल. बिमारों को चंगा करना, हैरिसन हाउस, १९८६, एच टी टी पी :// ओस्बोर्ण ओआरजी / फ्लैश २. एचटीएलएल १९५१ की पहली प्रकाशन के बाद, डॉ ओस्बोर्ण की पुस्तक "बिमारों को चंगा करना" उन के लिए महत्वपूर्ण है जो मसीह के पिछे चलने के बारे में गंभीर हैं और उस की आज्ञा बिमारों को चंगा करों को मानना चाहते हैं।

सैनफोर्ड, ऐगनस, चंगाई की च्योती मेकालेस्टर पार्क प्रकाशन १९४७। ऐगनस सैनफोर्ड ने कई चंगाई प्रचार समीती यों पर प्रभाव डाला है, जिस में फ्रांसिस मैकनट, मौर्टन केलसी, रूथ कार्टर स्टेपलटन और जिम गलैनन शामिल हैं। उन संदेश साफ हैं और पवित्र शास्त्र से भरा हुआ। अगर हम मौका दें तो परमेश्वर अपने विश्वासीयों के द्वारा कार्य

करता है। कुछ चीज़ ऐसी हैं जिन से हम परमेश्वर की चंगाई के प्यार और शक्ति को डाला जा सकता है और यही बान ओग्नस स्टैनफोर्ड अपनी पुस्तक में बताती है।

स्टैनफोर्ड, जॉन और पाऊला, ए कामपरीहेंसिब गाईड टू डेविवरेस एण्ड इन्नर हीलींग, ग्रेण्ड रैपिडस, एम आई, चोसन बेकर, १९९२। मुक्ति और अंदरूनी चंगाई प्रचार समीतीयों की मार्ग दर्शन करती पुस्तक। यह दोनो प्रचार समीतीयाँ की मार्ग दर्शन करती पुस्तक। यह दोनो प्रचार समीतीयाँ ए दूसरे से पवित्र आत्मा के माध्यम से बंधी हुई हैं और इन का उपयोग आत्मा की चंगाई और लोगों शैतानों से मुक्ति दिलाता है।

-----, धायल आत्मा को ज देना, तुलसा, ओके: विक्टरी हाऊस, १९८५ । एक और उच्चकोटी का साहित्य जिस में अंदरूनी चंगाई और यीशु की प्रचार समीती जो

टूटे हुए दिलों को जोड़ती है।

----, अंदर के मनुष्य को बदलना, साईथ पलेनफीलड़, एन जे: ब्रिज १९८२।
एक और उच्चकोटी का साहित्य जो अंदरूनी चंगाई और परमेश्वर की आत्मा किस तरह से अपने मन और दिमाग को बदलती है। स्मित, ऐडवर्ड एम. जेनुआईन रिकवरी: मूविग बियॉण्ड टौलारेबल एगजइस्टेन्स इन्टू जेनुआईन इन्नर हीलिंग, रेन्युअल एण्ड होलनैस, कैम्पबेलस्विले, के वाथ: अलाथिया । थीओफोस्टीक मिनिस्ट्रीज़, १९९७।

विकलर, मार्क और पट्टो, परमेश्वर से बेधुत्व, डेस्टीनी इमेज, २००१। यह एक बढ़ीया पुस्तक है जो मसीहों को परमेश्वर की आवाज सुनना सिखाती है। इस किताब में चार क्रम हैं जिन के द्वारा हम परमेश्वर की आवाज सुन सकते हैं और जब परमेश्वर से चंगाई की प्रार्थना करते हैं तो हमें जानकारी के शब्द और बुद्धि के शब्द मिलते हैं। चार क्रम हैं स्थिर रहो, यीशु पर अपनी आँखें जमाए रखों, स्वबेच्छित्ता पर ध्यान लगाओ और स्वैच्छिक विचारों और चित्रों को लिखे ले और चंगाई की प्रार्थना में उन्हें कहना है और उन स्वैच्छिक विचारों और चित्रों पर प्रार्थना करीए। डब्ल्यू (३)<एच.टीटीपी//डब्ल्यू(३) सी डब्ल्यू जी मिनिस्ट्रीज़ ओआरजी /> इस में विकलर की पुस्तकों की सूची है।

-----प्रार्थनाएँ जो मन को चंगा करती हैं, ब्रिज-लोगोस, २००१। पुस्तक विस्तार में बताती है की शैतानों के डरे कैसे गिरा सकते हैं और शैतानों को भगा सकते हैं। शैतानों के कारण दुर्बलताएँ और मुसीबतें आती हैं। प्रार्थनाओं में यह सब शामिल है, पुरखों के पापों और शापों को तोड़ना, आधार्मीक बंधनों से बंधे रहना, उल्टे विश्वासों को बदल देना, अंदरूनी वादों को त्याग देना, शापों को तोड़ना, दैवी दर्शन को पाना, शैतानों को निकालना। डब्ल्यू (३) सी डब्ल्यू जी मिनिस्ट्रीज़ औ आर जी < एच टी टी पी:// डब्ल्यू(३) />

वागनर सी पीटर, किसी भी गिर जाघर में चंगाई की प्रचार समीती कैसे बनाएँ, वेंचुरा, सी ऐ रीगल बुकस, १९८८, २६० पृष्ठ, कागज सूची ड्राम \$ ९.९९ (१२१९६ में) पूर्णरूप से चंगाई, चमत्कार और शैतान से मुक्ति की बातों को समझाया गया है। इन बातों को प्रचार या तीसरी लहर की दृष्टि के माध्यम से यह बताया गया है की इन प्रचार समीती यों को कसी भी स्थानीए गिरजाघर में कैसे चलाया जाए।

वागनर डौरिस, शैतानों को कैसे निकाला जाए: नीव डालने के लिए सम्पूर्ण सूचना दर्शक पुस्तक, उन लोगो के लिए जिन्होंने मुक्ति की प्रार्थना को प्रारम्भ किया है।

बिम्बर जॉन, केविन स्प्रिंगर के साथ, चंगाई की ताकत, सैन फ्रांसिसको, सीए: हारपर और से १९८७, २६९ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$११.०० (१२१९६ में) ज्ञान बिम्बर के अलग थोड लोग ही होंगे जिन्होंने क्षमता शाली प्रार्थना के अनुभवों की शिक्षा दी और नमूने भी बताए। वे वाईनयाई क्रिस्टियन फेलोशिप के चालक थे। यह तीसरी लहर की दृष्टि का सतुलना इस तरह के कार्यों में इन्होंने इउच्च कोटी पर लेजाता है। बिम्बर ही थे जिन्होंने तीसरी लहर की दृष्टि को चलाया जो दृष्टि थी, आत्मिक वबतिस्मा, आत्मा के उपहार, प्रचार को को ५ क्रम की नमूने की प्रार्थना के माध्यम से चंगाई देना और प्रचारकों में चंगाई और आत्मा के उपहारों पर दबाव डालना। इन्होंने इन दृष्टि कोनों को संसार भर में भशहूर एम सी एस १० चिन्ह, चमत्कार और गिरजाघर की तरक्की में प्रारम्भ किया, १९८० में फ्रल्लर सेमिनरी में।

भाग ३ : सामान्य आत्मिक लड़ाई

सम्पूर्ण संस्तुती करना (सामान्य आत्मिक लड़ाई) जेतह, सिंडी, बूराई से हमें मुक्ति दे: अप के घर और सस्था में दूसरे धर्मों के प्रथावों को रोकना वेनचुरा, सी एं रीगल, २००१। एक अच्छी बाईबल पर और सामय तौर पर आधारित एक पुस्तक, जो मसीहे अगुवो और उन के परीवार में दुसरे धर्मों से आत्मिक लड़ाई के विरुध है।

किन्नामन, गैरी डी, अंधकार के आधीकार को जीतना, ओल्ड तप्पन, एन जे, चोअन बुक्स, १९९१, पृष्ठ, कागज सूची दाम \$९.०० (१२१९६)। आत्मिक लड़ाई पर बाईबल के उदहारणे सहित सामान्य परीचय।

मर्फी, एड, दृष्टि हैण्डबुक फार स्पीरिचुअल वारफेर, नेशविल्ले, टी एन: टामस नेलसन प्रकाशक, १९९२, ५२० पृष्ठ, कपड़ा सूची दाम \$२४.९९ (१२१९६ में)। बाईबल में आत्मिक लड़ाई के वचनों पर बूय विवरण, डॉ एड मर्फी द्वारा जो की बाईबल के विद्यवान हैं।

शेरमैन डीन, हर मसीही के लिए आत्मिक लड़ाई सीएटल, डब्ल्यू ए: फ्रंट

लाईन कमयूनिकेशनस, १९९०, १८६ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$७.९९ (१२१९६ में)। तेशनस हवाई के यूथ विथ एक मिशन में डीन ने एक बड़ीया बुनियादी किताब लिखी है। इस में अधिक ध्यान विश्वासी की निजी ज़िदगी पर दिया गया है।

शेरर, कुविन और रूथाने गारलौक, ए वुमन्स गार्ड टू स्पिरी चुअल वारफेर, एन आरबर, एम आई: वाईन बुक्स आफ सखेंट पबलिकेशन, १९९१, २२३ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ८.९९ (१२१९६ में)। सफाई से विवरण की दुश्मन हमारे परीवार और समाज पर कैसे आक्रमण कर रहा है और औरने कैसे परमेश्वर के राज्य की लड़ाई में भाग ले सकती है। लखक स्पीरीचुअल वारफेर नेटवर्क इंटरसैशन टीम के सदस्य हैं।

वार्नर, टिमो थी एम स्पिरीचुअल वारफेर अंध कार की दुनिया की शक्तियों पर विजय, विटन, आई एल क्रासवे बुक्स, १९९१, १४२ पृष्ठ, कागज सूची दाम ७.९९ (१२१९६ में) ये १९८८ के फूल्लर स्कूल आफ वर्ल्ड मिशन चर्च ग्रोथ के पाठ है चिन्हे प्राध्यापक, ट्रिनिटी इवैजलिकल डिविनिटी स्कूल ने लिखा है।

वाईट टामस बी, दृष्टि बिलिवर्स गार्ड टू स्पीरीचुअल वारफेर, एन आरबर, एम आई: सखेंट पबलीकेशनस, १९९०, १७२ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$९.९९ (१२१९६ में)। प्रार्थना और आत्मिक लड़ाई का संतुलित, बाईबल और सामान्य रूप में। बैसे तो यग पुस्तक निजी मुक्ति प्रचार समीती से वास्ता रखती है परन्तु एक पाठ अण्डरस्टैंडिंग प्रिंसिपैलिटिज़ एण्ड पावर" है जो कूटनीद्धी के स्तर को दर्शाता है। आत्मिक लड़ाई के लिए अपने स्वयं को तैयार भी कर सकते हैं।

....., ब्रेकिंग स्ट्रांगहोल्डस, एन आरबर, एम आई: सर्वेंट पबलीकेशनस, १९९३, २१७ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ८.९९ (१२१९६ में) द बिलिवर्ज़ गार्ड टू स्पीरीचुअल वारफेर के संघ का ग्रंथ। यह तीनों स्तर की आत्मिक लड़ाई के मुख्य परड़ को दर्शाता है, भूमी स्तर, धार्मीक स्तर और कूटनीद्धी का स्तर।

संस्तुती (सामान्य आत्मिक लड़ाई) बुबेक, मार्क, द एडवरसरी: द क्रिस्टीयन वरव्येस डेमोनक एक्टिविटी, चिकागों आई एल: मूड़ी, १९७५, १५८ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ७.९९ (१२१९६ में)। बुबेक ने शैतान को बिना करिस्मा के दर्शाया है और मुक्ति के लिए बाईबल से औ सामान्य जानकारी दी है।

क्रिस्टैनसन, इवलिन, बैटलिंग दृष्टि प्रिंस आफ डारकनेस तीटन आई एल: विक्टर बुक्स १९९०, १९२ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ७.९९ (१२९१६ में) आत्मिक लड़ाई के प्रचार पर मज़बूती से सामान्य चिकित्सा।

वागनर, सी. पीटर और एफ.डगलस, पेन्नोयर, ऐडस , प्रेस्टलिंग विय डार्क एंजलस, वेंचुरा, सीए: रीगल बुक्स, १९९०, ३४७ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ २.९९ (१२९१६ में) यह अक सारांश है दोनो प्रचारक और करिमेटिक कालेजों और सैमिवरी के प्राहयापकों को प्रचार की शक्ति और लड़ाई के प्रचार के साथ रिशते के।

भाग ४:

कूटनिद्धि स्तर आत्मिक लड़ाई सम्पूर्ण संस्तुती ऐण्डरसन, नील टी और चार्लस माचलैण्डर, सैटींग योर चर्च फ्री (आप के गिरजाघर को मुक्त करना): एक बाईबली योजना ताकी आप का गिरजाघर विशलोषण करे संयुक्त बंधनो का और अगुवो को नया और एकता बनाएँ वेनचुरा, सी ए: रिगल, १९९४, ३५२ पृष्ठ। डॉ ऐण्डरसन और चार्लस मयलैण्डर दोनो ने संयुक्त बधनों को तोड़ना बताया है जो पैहले शैतान के द्वारा गिरजाघर में घावों और पापों द्वारा आए थो। और गिरजाथरों को मसीह के लिए साक्षी बनाना।

डॉसन, जॉन, हीलिंग अमेरीकास वूडस, वेचुरा, सीए: रीगल बूम्ल, १९९४, २८० पृष्ठ, कपडा सूची दाम \$ १५.९९ (१२९१६ में) गिरजाघर का पश्चताप सारे देश के लिए ताकी लोगों के झुण्डे में सुलाह हो जाए और परीवर्तन और प्रचार के दर्वाजे खुल जाएँ।

जेकबस, सिंडी, पोज़ेसिंग दृष्टि गेटस आफ द ऐनमी, टैरीटाऊन, एन वाच; चेसन बुक्स, १९९१, २४७ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ९.९९ (१२९१६ में)। यह युद्ध मे लगे लोगो के लिए बात चीत के माध्यम से प्रशीक्षण है। प्रार्थना और आत्मिक लड़ाई पर बाईबल से और सामान्य सूचना द्वारा बवाया गया है।

क्राफ्ट, चार्लस एच. और मार्क वाईट, ऐवस "बिहाईड ऐनमी लाईस: एन एडवानसड गईड टू स्पीरीचुअल वारफेर, एन आरबर, एम आई: सरवेट, १९९४ चार्लस क्राफ्ट जो एख फूल्लर प्रध्यापक है कई और अगुवों के सथ, प्रार्थना और आत्मिक लड़ाई पर विवाद करते है।

ओटिस, जार्ज, जेआर, इंनफार्मड इंटरसेशन, वेंचुरा, सी ए: रेन्यू १९९६, \$११.९९ सूची दाम। एक संक्षिप्त पुस्तक जिस से आत्मिकता का चित्र रेखा बना सके। पहले पाठ हमें दुनिया में उन शहरों के बारे में बताने हैं जो प्रार्थना और प्रचार से बदल चुके हैं।

....., स्पीरीचुअल मेंपिंग फील्ड गाईड, लिनवुड, डब्ल्यू ए: दृष्टि सेंटिनल ग्रुप, १९९३, ६६ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$१२.५० (घट नहीं)। आत्मिक चित्र रेखा दी गयी है जिस से प्रार्थना करने वालों को मदद मिलेगी।

....., द लास्ट आफ द जायेंट्स, ओल्ड तप्पन, एनजे: चोसन बुक्स, १९९१, २६५ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$१०.९९ (१२१९६ में) आत्मिक चित्र रेखा द्वारा यह बताया गया है की आत्मिकता के रूप में दुनिया कैसी नज़र आती है, जैसे हम देख रहे हैं, वैसी नहीं।

....द ट्विलाईट लेविर्स थ, ओल्ड तप्पन, एन जे: चोसन बुक्स, १९९७। एक आज तक का लेखा की अंधकार क्यों उन स्थानों पर जहाँ वह है, अपना कब्जा जमाए हुए हैं। खास कर के उन १०-४० कम प्रचार किए हुए देशों पर।

सिलवोसो, एड, प्रेयर इबैजलिज़म: अपने घर, पड़ोस या शहर में आत्मिक वातावरण कैसे बदला जाए, वेचुरा, सीए, रिगल २०००। एक सूची जिस में उन शहरों को बताया गया है जो प्रार्थना प्रचार को स्वीकार करती हैं और प्रार्थना का ज्योती घर है। इसी पढ़ना ज़रूरी है यदि कोई प्रार्थना करना चाहता हो अपने शहर, स्थान या देश के लिए।

.....दैंट नन शुड पेरिश, वेचुरा, सीए: रिगल बुक्स, १९९४, २९१, पृष्ठ, कपडा सूची दाम \$ १६.९९ (१२१९६ में)। १९९० में उच्च पुस्तक मानी गयी। उस में शहर को पाने की बढीया तरीका बताया गया हैं।

वागनर, सी. पीटर, वारफेर प्रेयर, वेचुरा, सी ए: रिगल बुक्स १९९२, १९७ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ९.९९ (१२१९६ में) डॉ. सी पीटर वागनर ने आत्मिक स्तरों पर यह पुस्तक लिखी है।

संस्तुती आर्नल्ड, कलिंग्टन ई इफीसीयों: पावर एण्ड मै जिक, ग्रेड रैपिडस, एम आई: बेकर बुक हाऊस, १९९२, २१३ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ १४.९९ (१२१९६ में)। बालबोट सैमिनरी एन टी प्रध्यापक द्वारा लिखित इस पुस्तक में इफीसियों में आत्मिक लड़ाई के बारे में है। यह एक अलग रौशनी डालती है पौलुस सी पत्री पर जो उस न इफीसियों को लिखी।

—द पावर आफ डार्कनेस, डाऊनर्स ग्रोव, आई एल: इंटर वर्सीटी प्रेस, १९९२, २१७ पृष्ठ, कागज सूची दाम, \$ १२.९९ (१२१९६ में) पौलुस की पत्रियों में शक्ति का गहराई से जाँच।

बौयड, ग्रेगोरी. गौड एट वार :द बाईबल एण्ड स्पीरीचुअल कानफ्लिक्ट, डाउनर्स ग्रोव, आई एल: इंटर वर्सीटी प्रेस, १९९७। एक दृष्टि की बाईबल क्या बताती है आत्मिक लड़ाई और परमेश्वर के राज्य के बारे में जो अंधकार के राज्य के खिलाफ बढ़ता जा रहा है। यह किताब हमें समझाती है की क्योंकि हम परमेश्वर के वच्चे हैं, इस कारण हम रह वक्त लड़ाई से घिरे हुए हैं। प्रार्थना हमारा मुख्य हथियार है, और हमारी विजय मसीह के द्वारा निश्चित है।

डाउसन, जॉन टेकिंग आवर सिटीज़ फार गॉड, लेक मेरी, एफ एल : क्रीएशन हाऊस, १९८९, २१९ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ८.९९ (१२१९६ में) यह एक यहली पुस्तक है जो आत्मिकता से भुगोल के क्षेत्रों को तोड़ती है। यह उच्च परीक्षण है आत्मिक लड़ाई के स्तर का।

फैगीपेन, फ्रॉनसिस, द. हाउस आफ द लोर्ड: गॉडस पलैन टू लिबरेट योर सिटी फ्रम डारकनेस, लेक मेरी, एफ एल: क्रीएशन हाऊस, १९९१, २०२ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ८.९९ (१२१९६ में)। फ्रेंगीयेन, विश्वासीयों की आत्मिक स्तर को बताते हैं और गिरजाघरों की भी, जिस से वे थापने शहरों के लिए प्रार्थना कर सकत हैं।

गैरेट, सुसन आर, द. हिमाईस आफ द. डेविल, मिन्नापोलिस एम एन: फोर्ट्रेस प्रेस, १९८९, १०९ पृष्ठ, सूची दादा \$ २३.०० (१२१९६ में) येल के प्रध्यापक द्वारा, लूका और प्रेरितों के काम में चामत्कार और शोतनों पर पढाई। नय वियम की मसीहत को जानने के लिए, परमेश्वर और शैतान के बिच की लड़ाई को समझना ज़रूरी है।

वागनर, सी पीटर, एंगेजींग द ऐनमी, वेंचुरा, सीए: रीगल बुक्स, १९९१, २०२ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$९.९९ (१२१९६ में) १९ मसीही अगुवों के लेख आत्मिक लड़ाई के स्तर का।

फैंगीपेन, फ्रॉनसिस, द. हाउस आफ द. लौर्ड: गॉडस पलैन टू लिबरेट योर सिटी फ्रम डारकनेस, लेक मेरी, एफ एल: क्रीएशन हाऊस, १९९१, २०२ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ८.९९ (१२१९६ में) । फ्रेगीयेन, विश्वासीयों की आत्मिक स्तर को बताते हैं और गिरजाघरों के भी , जि से वे अफने शहरों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।

गैरेट, सुसन आर द दिमाईस आफ द डेविल, मिन्नाोलिस एम एन: फोर्टरैस प्रैस, १९८९, १०९ पृष्ठ, सूची दाद \$ २३.०० (१२१९६ में)। येल के प्रध्यापक द्वारा, लूका और प्रेरितों के काम में चमत्कार और शैतानों पर पढाई। नय नियम की मसीहत को जानने के लिए, परमेश्वर और शैतान के बीच की लड़ाई को समझना जरूरी है।

वागनर, सी. पीटर, एंगेजींग द ऐनमी, वेंचुरा, सीए: रीगल बुक्स, १९९१, २० शृष्ठ, कागज सूची दाम \$ ९.९९ (१२१९६ मे) १९ मसीही अगुवों के लेख आत्मिक लड़ाई के स्तर पर।

....., ब्रेकिंग स्ट्रांगहोल्डल इन योर सिटी, वेंचुरा, सीए: रीगल बुक्स, १९९३, २३२ पृष्ठ, कागज सूची दाम, \$ ९.९९ (१२१९६ में) आत्मिक चित्र रेखा पर तौ जानकारी का अनुभव, ताकी परमेश्वर के लोग की प्रार्थनऐसही तोग, शहर और देशों तक पहुँचे।

.....कनफ्रंटिंग द. पावरस: हाओ द न्यू टेस्टामेंट चर्च एक्स्पीरींस्ड द पावर आफ स्टैटजिक लेवल स्पीरीचुअल वारफेर, वेंचुरा, सी ए: रीगल, १९९६, २७२ पृष्ठ। नए नियम के वचनो द्वारा जो कूटनीद्धी आत्मिक लड़ाई पर प्रश्न उठाने हैं, उन को समझने की कोशिश। प्ररीतो के काम के कुछ वचने पठने वाले के मन में प्रश्न खड़ा कर देते हैं और वागनर इन्हें समझाते हैं। परन्तु वागनर नण्णियम के उन वचनो को समझाते हैं जो कूटनिद्धी आत्मिक लड़ाई से संम्बध रखते हैं इंजील और पत्रीयों में और जिन्हें समा लोचकों को समझाना मुशकील है।

..... प्रेयिंग विथ पावर, वेंचुरा, सीए: रीगल १९९७। एक अच्छी पुस्तक जिस में कई तरह की प्रार्थनाओं के बारे में बताया गया है जो पवित्र आत्मा, मसीह की देह की अगुवाही करती है की हम परमेश्वर के राज्य की ओर बढ़ें और प्रचार की सिमा के अंतिम चरण को अंसार में फैलाएँ।

.....वाट दृष्टि बाईबल सेज़ अबाऊट स्पीरीचुअल वारफेर, कोलोराडो स्प्रिंग्स, सी ओ: वागवर पबलीकेरानस, २००१, ११९ पृष्ठ। यह पुस्तक कूटनिद्धी स्तर आत्मिक लड़ाई और प्रार्थना जो सिद्धांत बनाती है, उस पर सवाल और जवाब है। यह बताती है की पवित्र शास्त्र हमें कैसे अधिकार देती है की हम उस तरह की प्रार्थना में लगे, परमेश्वर के समय और अगुवाई में और दूसरे विश्वासीयों की संगती में एकता हो कर।

विंक, वालटर, नेमिंग द. पावरस, फिलाडेलफिया, पीए: फोर्ट्रेस प्रैस, १९८४, १५८ पृष्ठ, कागज सूची दाम \$ १६.०० (१२१९६ में) एक मुख्य स्तर के गैर प्रचारक विद्वान और समाज सुधारक अगुवा, विवाद करते हैं की आज की दुनिया के अन्याय और कठोरता के पीछे आत्मिक शक्ति है।

----- एंगेजिंग द. पावरस फिलाडेलफिया। पीए: फोर्ट्रेस प्रैस, १९९२, ३२४ पृष्ठ, सूची दाम \$ २०.०० (१२१९६ में) एक मुख्य स्तर के गैर प्राचारक विद्वान और समाज सुधारक अगुना, विवाद करते हैं की आज की दुनिया के अन्याय और कठोरता के पीछे आत्मिक शक्ति है।